॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नम: ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ ऋग्वेद संहिता ॥

॥ ऋग्वेद॥

॥अथ सप्तमं मण्डलं॥

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय सूची

सूक्त १ 9
सूक्त २ 18
सूक्त ३ 23
सूक्त ४ 27
सूक्त ५ 31
सूक्त ६ 36
सूक्त ७ 39
सूक्त ८ 42
सूक्त ९ 45
सूक्त १० 48
सूक्त ११ 51
सूक्त १२ 54
सूक्त १३ 56
सूक्त १४ 58
सूक्त १५ 60
सूक्त १६ 65
सूक्त १७ 70
सूक्त १८ 73
सूक्त १९ 83

सूक्त २० 88
सूक्त २१ 92
सूक्त २२ 96
सूक्त २३ 100
सूक्त २४ 103
सूक्त २५ 106
सूक्त २६ 109
सूक्त २७ 112
सूक्त २८ 114
सूक्त २९ 117
सूक्त ३० 119
सूक्त ३१ 121
सूक्त ३२ 125
सूक्त ३३ 135
सूक्त ३४ 141
सूक्त ३५ 148
सूक्त ३६ 154
सूक्त ३७ 158
सूक्त ३८ 161
सूक्त ३९ 164

सूक्त ४० 167
सूक्त ४१ 170
सूक्त ४२ 173
सूक्त ४३ 176
सूक्त ४४ 178
सूक्त ४५ 180
सूक्त ४६ 182
सूक्त ४७ 184
सूक्त ४८ 186
सूक्त ४९ 188
सूक्त ५० 190
सूक्त ५१ 192
सूक्त ५२ 194
सूक्त ५३ 196
सूक्त ५४ 198
सूक्त ५५ 200
सूक्त ५६ 203
सूक्त ५७ 211
सूक्त ५८ 214
सूक्त ५९ 217

सूक्त ६० 222
सूक्त ६१ 227
सूक्त ६२ 230
सूक्त ६३ 233
सूक्त ६४ 236
सूक्त ६५ 238
सूक्त ६६ 240
सूक्त ६७ 246
सूक्त ६८ 250
सूक्त ६९ 254
सूक्त ७० 258
सूक्त ७१ 261
सूक्त ७२ 264
सूक्त ७३ 266
सूक्त ७४ 269
सूक्त ७५ 272
सूक्त ७६ 275
सूक्त ७७ 278
सूक्त ७८ 281
सूक्त ७९ 283

सूक्त ८० 285
सूक्त ८१ 287
सूक्त ८२ 290
सूक्त ८३ 294
सूक्त ८४ 298
सूक्त ८५ 300
सूक्त ८६ 302
सूक्त ८७ 305
सूक्त ८८ 308
सूक्त ८९ 311
सूक्त ९० 313
सूक्त ९१ 316
सूक्त ९२ 319
सूक्त ९३ 321
सूक्त ९४ 324
सूक्त ९५ 328
सूक्त ९६ 331
सूक्त ९७ 333
सूक्त ९८ 337
सूक्त ९९ 340

सूक्त १०० 343
सूक्त १०१ 346
सूक्त १०२ 349
सूक्त १०३ 350
सूक्त १०४ 354

सूक्त १

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि:, । छंद – विराट, १९-२५ त्रिष्टुप

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम् ॥१॥

प्रशंसनीय, गतिमान्, दूर से परिलक्षित होने वाले गृहपति अग्नि को नर श्रेष्ठों ने हाथों और अँगुलियों की कुशलता से प्राप्त किया॥१॥

तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित् ।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥२॥

घर में प्रज्वलित किये जाने योग्य, नित्य दर्शनीय, सदैव ज्वालायुक्त जो अग्निदेव हैं, उन्हें याजकों ने अपने रक्षण हेतु यज्ञ-स्थल में स्थापित किया है॥२॥

प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ ।
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥३॥

हे शक्तिशाली अग्निदेव ! भली प्रकार से प्रज्वलित हुए आप प्रचण्ड ज्वालाओं से हमारे निकट प्रदीप्त हो । ये आहुतियाँ निरन्तर आपको समर्पित की जा रही हैं॥३॥

प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं निः सुवीरासः शोशुचन्त द्युमन्तः ।
यत्रा नरः समासते सुजाताः ॥४॥

जिनके पास सुन्दर जन्म वाले (मानव जीवन को सार्थक करने वाले याजक) बैठते हैं, वे अग्नियों में श्रेष्ठ अग्निदेव प्रकाशित होते हैं । अति तेजस्वी वे अग्निदेव हमारा कल्याण करते एवं सन्तान प्रदान करते हैं॥४॥

दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम् ।
न यं यावा तरति यातुमावान् ॥५॥

शत्रुओं को जीतने वाले हे अग्निदेव ! आप हमें वीर, बुद्धिमान् एवं श्रेष्ठ पुत्रों सहित प्रशंसित धन प्रदान करें, जिसका हिंसक शत्रु अपहरण न कर सकें॥५॥

उप यमेति युवतिः सुदक्षं दोषा वस्तोर्हविष्मती घृताची ।
उप स्वैनमरमतिर्वसूयुः ॥६॥

आहुति के योग्य, घृत धारण करने वाली जो नित्य सम्बद्ध (यज्ञ पात्र जुहू अथवा स्थूल-सूक्ष्म सामग्री) सुदक्ष श्रेष्ठ-कुशल (यज्ञाग्नि) के पास पहुँचती हैं, वह अपने ही धन से दीप्ति प्राप्त करती हैं॥६॥

विश्वा अग्नेऽप दहारातीर्येभिस्तपोभिरदहो जरूथम् ।
प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम् ॥७॥

हे अग्निदेव ! जिन तेजस्वी ज्वालाओं से आपने कटुभाषी असुरों का नाश किया, उसीं तेज से समस्त शत्रुओं का नाश करें । आप हमारे रोगों को जड़ से मिटाएँ ॥७॥

आ यस्ते अग्न इधते अनीकं वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पावक ।
उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः ॥८॥

हे पवित्र करने वाले अग्निदेव ! आपकी प्रदीप्त ज्वालाएँ धवल हैं । जिस प्रकार आप अपने याजक के पास रहते हैं, वैसे ही हमारे स्तोत्रों से प्रसन्न होकर इस यज्ञ में रहें॥८॥

वि ये ते अग्ने भेजिरे अनीकं मर्ता नरः पित्र्यासः पुरुत्रा ।
उतो न एभिः सुमना इह स्याः ॥९॥

हे अग्निदेव ! आपके तेज को पितरों के हितैषी मनुष्यों ने विभिन्न स्थानों-देशों में फैलाया है। हमारे स्तोत्रों से प्रसन्न होकर आप हमारे यज्ञ में निवास करें॥९॥

इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा विश्वा अदेवीरभि सन्तु मायाः ।
ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम् ॥१०॥

(अग्निदेव का कथन है-) जो मनुष्य हमारे उत्तम कर्मों को जानते हैं । वे संग्राम में शत्रु-असुरों की माया को दूर करके विजयी होते हैं॥१०॥

मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां माशेषसोऽवीरता परि त्वा ।
प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य ॥११॥

हे अग्निदेव ! वीरतारहित पुत्र-पौत्रादि रहित घरों में हमें न रहना पड़े। घर के हितैषी हे अग्निदेव ! पुत्र-पौत्रादि से भरे-पूरे घर में हम आपकी उपासना करते हुए निवास करें॥११॥

यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः ।
स्वजन्मना शेषसा वावृधानम् ॥१२॥

अश्वारूढ़, पूजनीय अग्निदेव की जहाँ नित्य उपासना की जाती हो (अर्थात् यज्ञ किया जाता हो), वैसा प्रजा से परिपूर्ण, सुसंतति को बढ़ाने वाला, घर में प्राप्त हो॥१२॥

पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेरररुषो अघायोः ।
त्वा युजा पृतनायूँरभि ष्याम् ॥१३॥

हे अग्निदेव ! असम्बद्ध, दुष्ट असुरों से आप हमारी रक्षा करें। सेना सहित आक्रमण करने वाले दुष्ट शत्रुओं से आप हमें बचाएँ। आपकी सहायता से हम उन्हें जीत लें॥१३॥

सेदग्निरग्नीँरत्यस्त्वन्यान्यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः ।
सहस्रपाथा अक्षरा समेति ॥१४॥

दृढ़ भुजाओं वाला बलवान्-पुत्र अक्षय स्तोत्रों (अनश्वर- सनातन मंत्रों-सूत्रा) से जिन अग्निदेव की निकटती प्राप्त करता है, वे अग्निदेव अन्य अग्नियों को जाग्रत् करें॥१४॥

सेदग्निर्यो वनुष्यतो निपाति समेद्धारमंहस उरुष्यात् ।
सुजातासः परि चरन्ति वीराः ॥१५॥

जो अग्निदेव अपने को प्रदीप्त करने वाले की, हिंसकों से एवं पापा से रक्षा करते हैं और जिनकी उपासना मनुष्य को उत्तम औरस पुत्र प्रदान करती है, वहीं अग्निदेव श्रेष्ठ हैं॥१५॥

अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा यमीशानः समिदिन्धे हविष्मान् ।
परि यमेत्यध्वरेषु होता ॥१६॥

जिन अग्निदेव को याजक, हवि प्रदान करके अच्छी तरह से प्रदीप्त करते हैं, याज्ञक आदि जिनको परिक्रमा करते हैं, वे ही श्रेष्ठ अग्निदेव हैं। इन्हें अनेकों बार आहुतियाँ अर्पित की गई हैं॥१६॥

त्वे अग्न आहवनानि भूरीशानास आ जुहुयाम नित्या ।
उभा कृण्वन्तो वहतू मियेधे ॥१७॥

हे अग्निदेव ! हुम प्रतिदिन दोनों प्रकार के कर्म (स्तुति एवं यजन) आपके निमित्त करते हैं । आप कृपा करके हमें धन के स्वामी बनाते हैं॥१७॥

इमो अग्ने वीततमानि हव्याजस्रो वक्षि देवतातिमच्छ ।
प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु ॥१८॥

हे अग्निदेव ! आप हमारी इन सदेव प्रिय लगने वाली हवियों को समस्त देवताओं तक पहुँचाएँ । हमारे द्वारा अर्पित यह सुगन्धित आहुतियाँ देवताओं को बहुत प्रिय है॥१८॥

मा नो अग्नेऽवीरते परा दा दुर्वाससेऽमतये मा नो अस्यै ।
मा नः क्षुधे मा रक्षस ऋतावो मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः ॥१९॥

हे अग्निदेव ! आपकी कृपा से हम बुद्धिहीन न हों और न हमें भूखे रहना पड़े । हे देव ! हम कभी वस्त्र और संतान बिना न रहें । हे अग्निदेव ! हमें असुर शत्रु न मिले। हमे घर या जंगल के मार्ग में मृत्यु प्राप्त न हो॥१९॥

नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः ।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२०॥

हे अग्ने ! आप हमारे लिए उत्तम अन्न प्रदान करें आप अपने याजकों को अन्न देते हैं । हम दोना (स्तोता एवं हविदाता) आपके द्वारा दिये जाने वाले अनुदानों को प्राप्त करें । आप हमें सुरक्षित रखते हुए हमारा कल्याण करे॥२०॥

त्वमग्ने सुहवो रण्वसंदृक्सुदीती सूनो सहसो दिदीहि ।
मा त्वे सचा तनये नित्य आ धङ्मा वीरो अस्मन्नर्यो वि दासीत् ॥२१॥

हे बल से उत्पन्न अग्निदेव ! उत्तम प्रकार (हवनीय) आहूत किये जाने वाले आप, रमणीय ज्वालाओं सहित प्रकट हो । आप हमारे पुत्र को दग्ध न करे । सदा उसकी रक्षा करते हुए, उस वीर पुत्र को दीर्घायु प्रदान करें॥२१॥

मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्धेष्वग्निषु प्र वोचः ।
मा ते अस्मान्दुर्मतयो भृमाच्चिद्देवस्य सूनो सहसो नशन्त ॥२२॥

हे अग्निदेव ! आप हमारे सहायक बने । देवों-त्विजों द्वारा प्रवृद्ध अग्निदेव हमारा पर्याप्त पोषण करें। हे बल के पुत्र अग्ने ! आपकी निग्रहात्मक (दण्डात्मक) बुद्धि और माया विभ्रम हमें व्याप्त न कर सकें॥२२॥

स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवानमर्त्ये य आजुहोति हव्यम् ।
स देवता वसुवनिं दधाति यं सूरिरर्थी पृच्छमान एति ॥२३॥

हे अग्निदेव ! आप तेजस्वी एवं अमर हैं । आपके निमित्त जो याजक हवि अर्पित करता है, वह धनवान् हो जाता है । स्तोतागणों द्वारा गाये गये स्तोत्र, जिसके आश्रय में जाते हैं, वे अग्निदेव याजक की सदा रक्षा करें॥२३॥

महो नो अग्ने सुवितस्य विद्वात्रयिं सूरिभ्य आ वहा बृहन्तम् ।
येन वयं सहसावन्मदेमाविक्षितास आयुषा सुवीराः ॥२४॥

हे अग्निदेव ! आप सर्वज्ञ हैं । अत: आप हमें उत्तम एवं कल्याणकारी कार्यों में प्रेरित करें । हम स्तोतागण आपकी स्तुति करते हैं । हे बल द्वारा रक्षा करने वाले अग्निदेव ! आप हमें महान् ऐश्वर्य प्रदान करें, जिससे हम वीर पुत्र-पौत्रादि सहित पूर्ण आयु वाले होकर सुख से रहें॥२४॥

नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः ।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२५॥

हे अग्निदेव ! आप हमारे निमित्त अन्न को पवित्र करें । जो हवि देते हैं, आप उन्हें अन्न-धन प्रदान करें। हम दोनों (स्तोतागण एवं याजकगण) आपके द्वारा दिये जा रहे दिव्य दान को प्राप्त करें। आप कृपा करके कल्याणकारी रक्षण साधनों से हमारी रक्षा करें॥२५॥

सूक्त २

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आप्रीसूक्तं। छंद – त्रिष्टुप

जुषस्व नः समिधमग्ने अद्य शोचा बृहद्यजतं धूममृण्वन् ।
उप स्पृश दिव्यं सानु स्तूपैः सं रश्मिभिस्ततनः सूर्यस्य ॥१॥

हे अग्निदेव !आप आज हमारी समिधाओं को अंगीकार करें । यज्ञीय धूम्र को फैलाते हुएअच्छी तरह प्रदीप्त हों । आपकी दिव्य, कान्तियुक्त, स्तुत्य किरणें (ऊर्जा) अन्तरिक्ष का स्पर्श कर, सूर्य की किरणों के साथ मिल जाएँ॥१॥

नराशंसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः ।
ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या ॥२॥

उत्तम कर्म करने वाले जो देवगण दोनों प्रकार की (सोमरूप एवं अन्नरूप) हवियों का आस्वादन करते हैं, उनके बीच प्रशंसनीय एवं

पूजनीय अग्निदेव को हवियाँ प्रदान करते हुए, हम उनकी महिमा वर्णित करते हैं॥२॥

ईळेन्यं वो असुरं सुदक्षमन्तर्दूतं रोदसी सत्यवाचम् ।
मनुष्वदग्निं मनुना समिद्धं समध्वराय सदमिन्महेम ॥३॥

हे यजमानो ! आप उन अग्निदेव का सदैव पूजन (यजन) करते रहें, जो बलवान्, स्तुति के योग्य, सुदक्ष (कुशल) एवं द्यावा-पृथिवी के मध्य दूत के समान कार्य करते हैं॥३॥

सपर्यवो भरमाणा अभिज्ञु प्र वृञ्जते नमसा बर्हिरग्नौ ।
आजुह्वाना घृतपृष्ठं पृषद्वदध्वर्यवो हविषा मर्जयध्वम् ॥४॥

हे अध्वर्युगण ! आप घृत से भीगी कुशा अर्पित करते हुए यजन करें । याजकगण सेवा भाव से घुटने टेक कर (अर्थात् नम्र होकर) पात्र को भरते हैं एवं हविर्द्रव्य अर्पित करते हैं॥४॥

स्वाध्यो वि दुरो देवयन्तोऽशिश्रयू रथयुर्देवताता ।
पूर्वी शिशुं न मातरा रिहाणे समग्रुवो न समनेष्वञ्जन् ॥५॥

देवत्व चाहने वाले, रथ प्राप्ति की इच्छा वाले, श्रेष्ठ कर्म करने वाले मनुष्य यज्ञ का आश्रय लें । यज्ञों में अग्नि को घृत से वैसे ही सींचें, जिस

प्रकार नदियाँ समीपवर्ती क्षेत्र को सिंचित करती हैं। यज्ञाग्नि को याजक वैसा हीं प्यार करें, जैसा कि गौ माता अपने बछड़े को करती हैं॥५॥

उत योषणे दिव्ये मही न उषासानक्ता सुदुघेव धेनुः ।
बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी आ यज्ञिये सुविताय श्रयेताम् ॥६॥

जो कुशा के आसन पर विराजमान होने वाली, बहुतों से प्रशंसित, धन-ऐश्वर्य प्रदायिनी हैं, वे दोनों दिव्य रूप वाली, यजन करने योग्य उषा और रात्रि देवी स्वेच्छा से श्रेष्ठ दुग्ध देने वाली (अर्थात् कामधेनु) के समान हमारा कल्याण करें, हमें आश्रय प्रदान करें॥६॥

विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु कारू मन्ये वां जातवेदसा यजध्यै ।
ऊर्ध्वं नो अध्वरं कृतं हवेषु ता देवेषु वनथो वार्याणि ॥७॥

हे होता ! आप यज्ञ करें, हम आपसे यह प्रार्थना करते हैं। आप हमारी स्तुति सुनकर इस यज्ञ को ऊर्ध्वगामी बनाकर देवताओं तक पहुँचाएँ । देवगण प्रसन्न होकर हमें धन प्रदान करें॥७॥

आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः ।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक्तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥८॥

भारतीगणों (सौर्य प्रवाहों) के साथ देवी भारती पधारें, देवताओं और मनुष्यों के साथ देवी इला (इळा) आएँ एवं सारस्वतों के साथ माँ सरस्वती पधारें और इन कुशाओं के आसन पर विराजें॥८॥

तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व ।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥९॥

हे त्वष्टादेव ! प्रसन्न होकर आए हमें स्फूर्तियुक्त वीर्यवान् बनाएँ, जिससे देवताओं की कामना करने वाला, वीर, उत्तम दक्षता से कर्म (यज्ञ-कर्म) करने वाला पुत्र उत्पन्न किया जा सके॥९॥

वनस्पतेऽव सृजोप देवानग्निर्हविः शमिता सूदयाति ।
सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद ॥१०॥

हे वनस्पते ! आप प्रज्वलित हों, अग्निरूप से समस्त देवगणों का आवाहन करें । अग्निदेव ही शान्तिदायक हवि को देवताओं के लिए अर्पित करते हैं। वे अग्निदेव ही देवगणों को बुलाने वाला सत्यनिष्ठ यज्ञ करें । (क्योंकि) अग्निदेव हो, वास्तव में देवों की उत्पत्ति के ज्ञाता हैं॥१०॥

आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः ।
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥११॥

हे अग्निदेव ! आप प्रदीप्त होकर, इन्द्र और त्वष्टादि देवगणों सहित रथारूढ़ होकर हमारे निकट आएँ । सुपुत्रों की माता अदिति इस कुशा के आसन पर बैठे तथा प्रदत्त आहुतियों से अमर-देवगण हर्षित हों॥११॥

सूक्त ३

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि:, । छंद - त्रिष्टुप

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् ।
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥१॥

हे देवताओं ! आप उन अनेक अग्नियों में पूज्य यज्ञाग्नि को दूत बनाकर प्रयुक्त करें, जो देवता होकर भी मनुष्य के साथी हैं जो यज्ञवान् या सत्यवान हैं, घृत जिनका आहार है, जिनका तप-तेज विकारनाशक एवं पवित्रता प्रदान करने वाला है ॥ १॥

प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन्यदा महः संवरणाद्व्यस्थात् ।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥२॥

हिनहिनाते घोड़े जिस प्रकार घास को चरते चले जाते हैं, उसी प्रकार दावानल वृक्षों को उदरस्थ करता हुआ चलता है । इस अवस्था में

वायु के प्रभाव से जिस ओर काला धुआँ जाता है, वहीं मार्ग अग्निदेव का होता है॥२॥

उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः ।
अच्छा द्यामरुषो धूम एति सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान् ॥३॥

हे यज्ञाग्ने ! आपकी नवीन ज्वालाएँ वृष्टि करने में समर्थ हैं । हे प्रकाशित यज्ञाग्ने ! आप नष्ट न होने वाली अपनी ऊर्जा सहित द्युलोक में पहुँचकर, देवों को तुष्ट करते हैं॥३॥

वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो अश्रेत्तृषु यदन्ना समवृक्त जम्भैः ।
सेनेव सृष्टा प्रसितिष्ट एति यवं न दस्म जुह्वा विवेक्षि ॥४॥

हे अग्निदेव ! आप जों की तरह काष्ठादि का भी भक्षण करते हैं। जब आप अपने ज्वालारूपी दाँतों से कानुरूप अन्नों का भक्षण करते हैं, तब पृथ्वीलोक में आपका तेज शीघ्रता से फैलता है॥४॥

तमिद्दोषा तमुषसि यविष्ठमग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः ।
निशिशाना अतिथिमस्य योनौ दीदाय शोचिराहुतस्य वृष्णः ॥५॥

इच्छाओं की पूर्ति करने में समर्थ अग्निदेव की ज्वालाएँ तेजस्वी होती हैं । निशि-वासर गनिमान् अश्व के समान याजक, अग्निदेव की

उपासना करते हैं । ये अति तरुण अग्निदेव अतिथि की तरह पूजय हैं॥५॥

सुसंदृक्ते स्वनीक प्रतीकं वि यद्रुक्मो न रोचस उपाके ।
दिवो न ते तन्यतुरेति शुष्मश्चित्रो न सूरः प्रति चक्षि भानुम् ॥६॥

हे तेजस्वी अग्निदेव ! उस समय आपका स्वरूप अति शोभनीय हो जाता है, जब आप सूर्यदेव जैसे देदीप्यमान होते हैं। आपका तेज विद्युत्वत् अन्तरिक्ष में फैलता है । दर्शनीय सूर्यदेव के समान आप भी प्रकाशित होते हैं॥६॥

यथा वः स्वाहाग्नये दाशेम परीळाभिर्घृतवद्भिश्च हव्यैः ।
तेभिर्नो अग्ने अमितैर्महोभिः शतं पूर्भिरायसीभिर्नि पाहि ॥७॥

हे अग्निदेव ! हम आपके निमित्त गो- घृत से युक्त हवि पदार्थ अर्पित करते हैं तथा आपकी सेवा करते हैं । आप भी प्रसन्न होकर अपने अपरिमित तेज से उसी प्रकार हमारी रक्षा करें, जैसे लोहे के सुदृढ़ सौ किले मनुष्यों की रक्षा करते हैं॥७॥

या वा ते सन्ति दाशुषे अधृष्टा गिरो वा याभिर्नृवतीरुरुष्याः ।
ताभिर्नः सूनो सहसो नि पाहि स्मत्सूरीञ्जरितॄञ्जातवेदः ॥८॥

हे बल के पुत्र जातवेदा अग्निदेव ! आपकी प्रदीप्त शिखाएँ हविदाता का कल्याण करती हैं । आप तेजस्वी वाणी और ज्वालाओं से सुपुत्रवान् प्रजा का रक्षण करते हैं॥८॥

निर्यत्पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात्स्वया कृपा तन्वा रोचमानः ।
आ यो मात्रोरुशेन्यो जनिष्ट देवयज्याय सुक्रतुः पावकः ॥९॥

माता स्वरूपिणी अरणियों के गर्भ से उत्पन्न तीक्ष्णशस्त्रवत् अग्निदेव यज्ञकर्म करने में समर्थ होते हैं वे इस कामना योग्य प्रिय कर्म (यज्ञ) को करने में तब समर्थ होते हैं, जब वे अपनी पवित्र ज्वालाओं को प्रदीप्त करते हैं॥९॥

एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम ।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१०॥

हे अग्निदेव ! आप हमें उत्तमकर्म करने के लिए श्रेष्ठ धन प्रदान करें । यज्ञ करने वाले एवं श्रेष्ठ बुद्धि वाले पुत्र सहित समस्त प्रकार के धन-ऐश्वर्य हम उद्गाताओं एवं स्तोताओं को प्राप्त हों । आप सभी प्रकार से हमारा कल्याण करें॥१०॥

सूक्त ४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि:, । छंद - त्रिष्टुप

प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम् ।
यो दैव्यानि मानुषा जनूंष्यन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति ॥१॥

हे याजको ! आप सभी शुद्ध-पवित्र अग्निदेव को उत्तम वि एवं श्रेष्ठ स्तोत्र प्रेषित करें । वे अग्निदेव समस्त देवताओं, मनुष्यों एवं समस्त प्राणियों के अन्त:करण में विद्यमान रहते हैं॥१॥

स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः ।
सं यो वना युवते शुचिदन्भूरि चिदन्ना समिदत्ति सद्यः ॥२॥

वे अग्निदेव महान् ज्ञानी, उत्साही एवं तरुण हैं । माता स्वरूपिणी दोनों अरणियों से उत्पन्न होते ही तेजस्वी और युवा हो जाते हैं । वे वनों में संव्याप्त होकर काष्ठ एवं प्रचुर अन्न का शीघ्र ही भक्षण करने में समर्थ हैं॥२॥

अस्य देवस्य संसद्यनीके यं मर्तासः श्येतं जगृभ्रे ।
नि यो गृभं पौरुषेयीमुवोच दुरोकमग्निरायवे शुशोच ॥३॥

देवों की तेजस्वी यज्ञशाला में जिन तेजस्वी अग्निदेव को प्रतिष्ठित करके मानवों ने सेवा की, वे सेवा से प्रसन्न होकर आहुतियाँ ग्रहण करके तीव्रता से तेजोमय हो जाते हैं। वह तेज मनुष्यों के लिए असहनीय होता है॥३॥

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि ।
स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम ॥४॥

अमर, ज्ञानवान् एवं तेजस्वी अग्निदेव अज्ञानी मनुष्यों के बीच रहते हैं । हे बलवान् अग्निदेव ! हम आपके तेजस्वी अमर ज्ञान को धारण करने के निमित्त अपनी बुद्धि निरन्तर सचेष्ट रखेंगे। आप हमारी रक्षा करे॥४॥

आ यो योनिं देवकृतं ससाद क्रत्वा ह्यग्निरमृताँ अतारीत् ।
तमोषधीश्च वनिनश्च गर्भं भूमिश्च विश्वधायसं बिभर्ति ॥५॥

वे अग्निदेव देवताओं द्वारा निर्मित स्थान-विशेष (यज्ञकुण्ड) में स्थापित होते हैं। वे अग्निदेव अपने प्रखर कर्मों द्वारा अमर देवताओं को

सुरक्षित रखते हैं। सबको पोषण द्वारा धारण करने वाले अग्निदेव को पृथ्वी, ओषधियाँ एवं वृक्ष भी अपने अन्दर धारण करते हैं ॥५॥

ईशे ह्यग्निरमृतस्य भूरेरीशे रायः सुवीर्यस्य दातोः ।
मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः ॥६॥

अग्निदेव उत्तम अमरत्व का दान देने में समर्थ हैं। हे अग्निदेव ! हम सदा आपकी सेवा करते रहें। आपकी कृपा से हम कभी भी वीर पुत्र एवं सुन्दर रूप से हीन न हों॥६॥

परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।
न शेषो अग्ने अन्यजातमस्त्यचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः ॥७॥

हम अज्ञानी पुरुष के बताए गये मार्ग पर चलकर णग्रस्त न हों, क्योंकि दूसरे के पुत्र को लेकर कोई पुत्रवान् नहीं हो सकता । (अग्निदेव) हमें सदा विद्यमान रहने वाले धन का स्वामी बनाएँ॥५७॥

नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ ।
अधा चिदोकः पुनरित्स एत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः ॥८॥

दत्तक पुत्र भले ही सेवा करने वाला एवं ऋण न लेने वाला हो, फिर भी उसका मन अपने जनक के पास जायेगा ही । दत्तक पुत्र से

सन्तोष नहीं होता, अत: हे देव ! हमें शत्रुओं को जीतने वाला पुत्र प्रदान करें॥८॥

त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात् ।
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री ॥९॥

हे अग्निदेव ! आप हमें पापों और हिंसा करने वालों से सुरक्षित रखें । हम आपके लिए पवित्र हविष्यान्न अर्पित करते हैं । आपकी कृपा से हमें इच्छित धन की प्राप्ति हो॥९॥

एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम ।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१०॥

हे अग्निदेव ! हमें सभी तरह के धन-ऐश्वर्य प्राप्त हों तथा यजन (यज्ञादि सत्कर्म करने वाला यशस्वी पुत्र प्राप्त हो। हम स्तोताओं को सभी प्रकार के धन मिलें । अपने आश्रय में स्थित हमारा आप सभी प्रकार कल्याण करें॥१०॥

सूक्त ५

ऋषिः मैत्रावरुणिवैशिष्ठः
देवता – वैश्वानरोऽग्निः, । छंद - त्रिष्टुप

प्राग्नये तवसे भरध्वं गिरं दिवो अरतये पृथिव्याः ।
यो विश्वेषाममृतानामुपस्थे वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः ॥१॥

जिन वैश्वानर अग्निदेव को समस्त देवताओं की उपस्थिति में प्रज्वलित कर बढ़ाया (प्रदीप्त किया) जाता है, वे बढ़े हुए अग्निदेव द्युलोक और पृथ्वीलोक में विचरण करते हैं । (हे मनुष्यो !) उन अग्निदेव की स्तुति करो॥१॥

पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
स मानुषीरभि विशो वि भाति वैश्वानरो वावृधानो वरेण ॥२॥

जो वैश्वानर अग्निदेव मनुष्यों के बीच प्रकाशित हैं, वे ही श्रेष्ठ हवि द्वारा वर्धमान होकर द्युलोक एवं भूलक में स्थापित हुए हैं। वे अच्छी

प्रकार पूजित, सर्व कल्याणकारी अग्निदेव ही प्रसन्न होकर जल बरसाते और नदियों को जल से भरकर प्रवाहित करते हैं॥२॥

त्वद्भिया विश आयन्नसिक्नीरसमना जहतीर्भोजनानि ।
वैश्वानर पूरवे शोशुचानः पुरो यदग्ने दरयन्नदीदेः ॥३॥

हे अग्निदेव ! आपने जब अपने प्रदीप्त तेज से 'राजा पुरु' के शत्रुओं के नगरों को ध्वस्त किया था, तब दुष्ट कर्म वाले लोग भोजनादि त्यागकर तितर-बितर हो गये थे॥३॥

तव त्रिधातु पृथिवी उत द्यौर्वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त ।
त्वं भासा रोदसी आ ततन्थाजस्रेण शोचिषा शोशुचानः ॥४॥

हे अग्निदेव ! आप विशिष्ट आभा से प्रकाशित होकर अपने तेज से द्युलोक एवं पृथ्वी को विस्तृत करते हैं । तीनों लोकों के निवासी आपके व्रत का पालन करते हैं॥४॥

त्वामग्ने हरितो वावशाना गिरः सचन्ते धुनयो घृताचीः ।
पतिं कृष्टीनां रथ्यं रयीणां वैश्वानरमुषसां केतुमह्नाम् ॥५॥

हे अग्निदेव ! आप कृषकों के स्वामी, धन के संचालक एवं उषाओं सहित दिवस के ध्वज के समान हैं। आपके घोड़े आपकी सेवा करते

हैं। पापनाशक वाणियाँ और घृत की आहुतियाँ आपकी सेवा करती हैं॥५॥

त्वे असुर्यं वसवो न्यृण्वन्क्रतुं हि ते मित्रमहो जुषन्त ।
त्वं दस्यूँरोकसो अग्न आज उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय ॥६॥

हे अग्निदेव ! आपको वसुओं ने विलक्षण बल प्रदान कर बलवान् बनाया है। आप मित्रों के सहायक होते हैं। श्रेष्ठकर्म (यज्ञ) करने वाले आर्यजनों (सज्जनो) की रक्षा करने के लिए आपने प्रखर तेज द्वारा भयभीत करके दस्युओं को भगा दिया॥६॥

स जायमानः परमे व्योमन्वायुर्न पाथः परि पासि सद्यः ।
त्वं भुवना जनयन्नभि क्रन्नपत्याय जातवेदो दशस्यन् ॥७॥

हे अग्निदेव ! आप अंतरिक्ष में सूर्यरूप से प्रकट होकर सोमरस को वाष्पीकृत कर सर्वप्रथम ग्रहण करते हैं। हे ज्ञान स्वरूप अग्निदेव ! आप भुवनों में जल (मेघ) को प्रकट करते हैं। आपका विद्युत् रूप देखकर एवं गड़गड़ाहट (मेघ गर्जना) को सुनकर अन्न की कामना वाले व्यक्ति आशान्वित होते हैं॥७॥

तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः ।
यया राधः पिन्वसि विश्ववार पृथु श्रवो दाशुषे मर्त्याय ॥८॥

हो जातवेदा अग्निदेव ! आप समस्त मानवों द्वारा वरणीय हैं । आप उन्हें यश प्रदान करते हैं। आप वह विद्युत्मयी बरसात हमारे लिए प्रेरित करें, जिससे अन्न एवं धन की वृद्धि हो॥८॥

तं नो अग्ने मघवद्भ्यः पुरुक्षुं रयिं नि वाजं श्रुत्यं युवस्व ।
वैश्वानर महि नः शर्म यच्छ रुद्रेभिरग्ने वसुभिः सजोषाः ॥९॥

हे समस्त मनुष्यों के हितैषी अग्निदेव ! रुद्रगणों तथा वसुओं के साथ आप हमारा कल्याण करें । हम याजक आपके लिए हवि अर्पित करते हैं। आप हमें यशवर्धक अन्न, धन एवं बल प्रदान करें॥९॥

सूक्त ६

ऋषिः मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठः
देवता – वैश्वानरोऽग्निः, । छंद - त्रिष्टुप

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्तिं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्मि ॥१॥

(शत्रु की) नगरियों को विध्वंस करने वाले वीर (अग्नि) की हम वन्दना करते हैं। असुर एवं वीर मनुष्यों द्वारा स्तुत्य, सम्राट् इन्द्र के समान बलवान् (अग्नि) की स्तुति करते हुए, हम उनके कार्यों का वर्णन करते हैं॥१॥

कविं केतुं धासिं भानुमद्रेर्हिन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः ।
पुरंदरस्य गीर्भिरा विवासेऽग्नेर्व्रतानि पूर्व्या महानि ॥२॥

अग्निदेव कवि (विद्वान्), केतुरूप (प्रदर्शक) मेघों को धारण करने वाले और सबका कल्याण करने वाले हैं। द्यावा-पृथिवीं के सुशासक

अग्निदेव ही हैं। परम पुरुषार्थी, शत्रुओं के किलों को ध्वस्त करने वाले पुरातन अग्निदेव का हम यशोगान करते हैं॥२॥

न्यक्रतून्ग्रथिनो मृध्रवाचः पणीँरश्रद्धाँ अवृधाँ अयज्ञान् ।
प्रप्र तान्दस्यूँरग्निर्विवाय पूर्वश्चकारापराँ अयज्यून् ॥३॥

अकर्मी, बकवादी, कटुवक्ता, पणि, श्रद्धाशून्य, यज्ञ न करने वाले एवं पतित आदि को अग्निदेव प्रगतिहीन बनाकर दूर करें । प्रमुख देव (अग्निदेव) यज्ञ न करने वाले को कनिष्ठ (प्रगतिहीन) बना देते हैं॥३॥

यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचीश्चकार नृतमः शचीभिः ।
तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषेऽनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ॥४॥

अन्धकार से घिरे मानवों को अग्निदेव ने प्रकाशरूप प्रज्ञा (बुद्धि) से श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। हम ऐसे शत्रुनाशक, धन के स्वामी, अग्निदेव की स्तुति करते हैं॥४॥

यो देह्यो अनमयद्वधस्नैर्यो अर्यपत्नीरुषसश्चकार ।
स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः ॥५॥

जिन (अग्निदेव) ने अपने आयुधों से आसुरी माया को झुकाया (काबू में किया) और पूर्व पत्नी उषा का उत्पन्न किया, उन्हीं ने अपनी

प्रतिरोधक शक्ति से प्रजाओं को निरुद्ध करके, उन्हें (प्रज्ञाओं का) नहुष का 'कर' (टेक्स) देने वाली बनाया॥५॥

यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास एवैस्तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः ।
वैश्वानरो वरमा रोदस्योराग्निः ससाद पित्रोरुपस्थम् ॥६॥

अपने सत्कर्मों सहित विदाता सद्बुद्धि की कामना से वैश्वानर अग्निदेव के निकट उपस्थित होने हैं। समस्त प्राणियों के हितैषी वे अग्निदेव द्यावा-पृथिवी के मध्य प्रकट होते हैं॥६॥

आ देवो ददे बुध्न्या वसूनि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य ।
आ समुद्रादवरादा परस्मादाग्निर्ददे दिव आ पृथिव्याः ॥७॥

वैश्वानर अग्निदेव सूर्यरूप में प्रकट होकर अन्धकार का नाश करते हैं । अन्तरक्ष एवं द्यावा-पृथिवी से अन्धकार को समाप्त करते हैं॥७॥

ऋग्वेद – सप्तम मंडल

सूक्त ७

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्निः, । छंद - त्रिष्टुप

प्र वो देवं चित्सहसानमग्निमश्वं न वाजिनं हिषे नमोभिः ।
भवा नो दूतो अध्वरस्य विद्वान्त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः ॥१॥

हे अग्निदेव ! आप देवताओं में, वृक्षों को जलाने वाले के रूप में ख्याति प्राप्त हैं । आप यज्ञ में सर्वज्ञ होकर, अश्व की तरह तीव्र गति से असुरादि को खदेड़ (भगा) देते हैं॥१॥

आ याह्यग्ने पथ्या अनु स्वा मन्द्रो देवानां सख्यं जुषाणः ।
आ सानु शुष्मैर्नदयन्पृथिव्या जम्भेभिर्विश्वमुशधग्वनानि ॥२॥

हे अग्निदेव ! आप अति आनन्दित होते हुए देवताओं से मित्रता करें । आप पृथ्वी के ऊपरी भागों को अपने शोषक तेज से ध्वनित करते हुए एवं वनों को ज्वालाओं द्वारा भस्म करते हुए अपने मार्ग से आएं॥२॥

प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरीळितो न होता ।
आ मातरा विश्ववारे हुवानो यतो यविष्ठ जज्ञिषे सुशेवः ॥३॥

यज्ञ के पूर्व में कुशा अच्छी प्रकार स्थापित करें । विश्व के माता-पिता का आवाहन करें । यज्ञाग्नि की अच्छी प्रकार सेवा करके, उन्हें युवा (प्रज्वलित) बना करके हविदाता प्रसन्न मन से आहुति समर्पित करके अग्निदेव को तृप्त करें॥३॥

सद्यो अध्वरे रथिरं जनन्त मानुषासो विचेतसो य एषाम् ।
विशामधायि विश्पतिर्दुरोणेऽग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा ॥४॥

विशेषज्ञ जन रथारूढ़ अग्निदेव को शीघ्रता से उत्पन्न कर लेते हैं, तब सत्यनिष्ठ एवं मधुरभाषी अग्निदेव प्रजाओं के घर में रहकर हवि ग्रहण करते हैं और प्रसन्न होकर सभी को आनन्द प्रदान करते हैं॥४॥

असादि वृतो वह्निराजगन्वानग्निर्ब्रह्मा नृषदने विधर्ता ।
द्यौश्च यं पृथिवी वावृधाते आ यं होता यजति विश्ववारम् ॥५॥

प्रजाओं के घरों में रहने वाले, जो अग्निदेव होता द्वारा पूजित होते हैं, जिन्हें द्युलोक और भूलोक बढ़ाते हैं; वे अग्निदेव हविदाता के हव्य को वहन कर ब्रह्मादि देवों तक पहुँचाते हैं॥५॥

एते दयुम्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन् ।
प्र ये विशस्तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीधयन्नृतस्य ॥६॥

जो मनुष्य यज्ञ के निमित्त अग्निदेव को प्रज्वलित कर उन्हें मन्त्रों से संस्कारित करते हैं, वे अग्निदेव अन्न से हमारा सब प्रकार पोषण करते हैं॥६॥

नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे अग्ने ! आप बल से समुत्पन्न एवं वसुओं के ईश हैं । हम सब वसिष्ठ गोत्रीय होतागण, आपके निमित्त हवि समर्पित करते हैं । आप विदाता एवं स्तोताओं को सुरक्षा प्रदान करते हुए उन्हें अन्नादि से परिपूरित करें॥७॥

सूक्त ८

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद - त्रिष्टुप

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
नरो हव्येभिरीळते सबाध आग्निरग्र उषसामशोचि ॥१॥

श्रेष्ठ शासक अग्निदेव को वन्दनापूर्वक प्रज्वलित किया जा रहा है । मनुष्य अबाध आहुतियों द्वारा जिनका यजन करते हैं, घृत द्वारा जिनका संवर्धन होता हैं, वे अग्निदेव (सूर्यरूप में) उषाओं से पूर्व प्रकाशित होते हैं॥१॥

अयमु ष्य सुमहाँ अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यह्वो अग्निः ।
वि भा अकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णपविरोषधीभिर्ववक्षे ॥२॥

ये अग्निदेव महान् हैं । प्रसन्न हुए विस्तृत अग्निदेव अपनी दीप्ति फैलाते हैं । कृष्णमार्ग गामी (धूम्रमार्गगामी) अग्निदेव पृथ्वी पर ओषधियों (काष्ठ) द्वारा वृद्धि को प्राप्त होते हैं॥२॥

कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्तिं कामु स्वधामृणवः शस्यमानः ।
कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः ॥३॥

हे अग्निदेव ! आप हमारी स्तुति को, कौन सा हवि-द्रव्य अर्पित करने पर स्वीकार करेंगे ? हे उत्तम दानदाता अग्निदेव ! हमको कब अलभ्य धन प्राप्त होगा और कब हम उसको बॉटने (दान-देने) में समर्थ होंगे? ॥३॥

प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत्सूर्यो न रोचते बृहद्भाः ।
अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच ॥४॥

हविष्य प्रदान करने वाले याजक के आमंत्रण को स्वीकार कर, देवों के अतिथि अग्निदेव अति तेजस्वी होकर सूर्यदेव के समान ही प्रकाश फैलाते हैं । 'पूरु' को पराजित करने वाले अग्निदेव हमारे लिए कल्याणकारी भावों से युक्त होकर प्रज्वलित होते हैं॥४॥

असन्नित्त्वे आहवनानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः ।
स्तुतश्चिदग्ने शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात ॥५॥

हे अग्निदेव ! आपका जन्म भली प्रकार हुआ है । आप तेजस्विता धारण कर प्रसन्न हों । पर्याप्त आहुतियों को ग्रहण कर आपका शरीर विस्तृत हो। आप स्तुतियों को सुनकर हर्षित हों॥५॥

इदं वचः शतसाः संसहस्रमुदग्नये जनिषीष्ट द्विबर्हाः ।
शं यत्स्तोतृभ्य आपये भवाति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा ॥६॥

हजारों गौओं के स्वामी तथा सैकड़ों गौओं के दानदाता, कर्म के मर्म को जानने वाले, विशिष्ट विद्याओं के ज्ञानी, महान् अघि वसिष्ठ ने अग्निदेव की इस स्तोत्र से स्तुति की॥६॥

नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे अग्निदेव ! आप बल से उत्पन्न एवं वसुओं के ईश हैं। हम सब वसिष्ठ गोत्रीय होता आपके निमित्त हवि अर्पित करते हैं। आप हविदाता एवं स्तोताओं को सुरक्षा प्रदान करते हुए उन्हें अन्नादि से परिपूरित करें॥७॥

सूक्त १

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद - त्रिष्टुप

अबोधि जार उषसामुपस्थाद्धोता मन्द्रः कवितमः पावकः ।
दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर्हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सु ॥१॥

जार (अन्धकार या पापों को जीर्ण कर देने वाले), होता, हर्ष प्रदायक, विद्वान्, पवित्र करने वाले अग्निदेव उषाकाल में जाग गये हैं। ये अग्निदेव देवों एवं मनुष्यों, दोनों को प्रज्ञावान् बनाते हैं। देवों के लिए हवि प्रदान करने वालों और सत्कर्म करने वालों को धन देते हैं॥१॥

स सुक्रतुर्यो वि दुरः पणीनां पुनानो अर्कं पुरुभोजसं नः ।
होता मन्द्रो विशां दमूनास्तिरस्तमो ददृशे राम्याणाम् ॥२॥

जिन श्रेष्ठ कर्मा अग्निदेव ने पणियों के द्वार को खोलकर गौओं को मुक्त कराया था, वे पूजनीय, दुधारू गौओं के समूह को ढूँढ़ने वाले,

देवों को आनन्द प्रदान करने वाले, मन से संयमित रहने वाले अग्निदेव रात्रि के अन्धकार को नष्ट कर देते हैं॥२॥

अमूरः कविरदितिर्विवस्वान्त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः ।
चित्रभानुरुषसां भात्यग्रेऽपां गर्भः प्रस्व आ विवेश ॥३॥

जो मूढ़ नहीं हैं । जो ज्ञानी, अदीन, मित्र, पूज्य, तेजस्वी, मंगलकारी, विशेष रूप से प्रकाशित अग्निदेव उषाओं के पूर्व प्रकाशित होते हैं, वे अग्निदेव जल के गर्भ से उत्पन्न होकर ओषधियों में प्रवेश करते हैं॥३॥

ईळेन्यो वो मनुषो युगेषु समनगा अशुचज्जातवेदाः ।
सुसंदृशा भानुना यो विभाति प्रति गावः समिधानं बुधन्त ॥४॥

हे अग्ने ! जब मनुष्य यज्ञ कर्म करते हैं, उस समय आपकी स्तुति की जाती है । जातवेदा अग्निदेव संग्राम के समय प्रदीप्त होते हैं । वे दर्शनीय आभा से सुशोभित होते हैं। स्तुतियाँ समिद्ध अग्नि को प्रेरित करती हैं॥४॥

अग्ने याहि दूत्यं मा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृता गणेन ।
सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान्रत्नधेयाय विश्वान् ॥५॥

हे अग्निदेव ! आप दौत्य कर्म के निमित्त देवताओं के पास गमन करें । हे देव ! संघ में रहने वाले हम स्तोताओं को न मारें । हमें रनों का दान देने के लिए, आप सरस्वती, मरुद्गण एवं सभी देवताओं का यजन करें॥५॥

त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हन्यक्षि राये पुरंधिम् ।
पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हे अग्निदेव ! वसिष्ठ गोत्रीय होता आपके लिए समिधा अर्पित करते हैं। आप कटुभाषी असुरों का संहार करें । हे ज्ञातवेदा अग्निदेव ! आप उनके स्तोत्रों द्वारा देवों को तुष्ट करें और हमारा कल्याण एवं पोषण करें॥६॥

सूक्त १०

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद - त्रिष्टुप

उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद्दविद्युतद्दीद्यच्छोशुचानः ।
वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः ॥१॥

उषा के जार (उषा के प्रभाव को जीर्ण करने वाले) सूर्यदेव के समान अग्निदेव तेज का आश्रय लेकर विस्तृत होते हैं । विद्युत् के समान चमक वाले, देदीप्यमान, शोभनीय, कामनाओं के पूरक, दुःखहारी, पावन अग्निदेव कर्मों को प्रेरित करते हैं और अपनी आभा से प्रकाशित होते हैं॥१॥

स्वर्ण वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म ।
अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान्द्रवद्दूतो देवयावा वनिष्ठः ॥२॥

उषाओं के आगे अग्निदेव, दिन में सूर्यदेव के समान सुशोभित होते हैं । सुख की कामना वाले ऋत्विग्गण मननीय स्तोत्रों का गान करते हुए,

यज्ञ का विस्तार करते हैं। विद्वान्, देवताओं के दूतरूप अग्निदेव देवताओं के पास जाते हैं और प्राणियों को द्रवित करते हैं॥२॥

अच्छा गिरो मतयो देवयन्तीरग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः ।
सुसंदृशं सुप्रतीकं स्वञ्चं हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम् ॥३॥

देवत्व प्राप्ति की इच्छा वाली बुद्धियाँ और धन की याचना करने वाली वाणी (स्तुति) उन अग्निदेव तक पहुँचती हैं। अग्निदेव, हवि को ले जाने वाले, सुन्दर दर्शनीय हैं और मनुष्यों के स्वामी हैं॥३॥

इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः सजोषा रुद्रं रुद्रेभिरा वहा बृहन्तम् ।
आदित्येभिरदितिं विश्वजन्यां बृहस्पतिमृक्वभिर्विश्ववारम् ॥४॥

हे अग्निदेव ! आप वसुओं के साथ इन्द्रदेव का, आदित्यों के साथ विश्व की माता अदिति का, स्तुत्य अंगिरा के साथ श्रेष्ठ बृहस्पतिदेव का और रुद्रों के साथ मिलकर महान् रुद्रदेव का आवाहन करें॥४॥

मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठमग्निं विश ईळते अध्वरेषु ।
स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणामतन्द्रो दूतो यजथाय देवान् ॥५॥

धन की कामना करने वाले मनुष्य स्तुति योग्य, होता और युवा अग्निदेव की यज्ञ में स्तुति करते हैं। वे अग्निदेव रात्रि में भी प्रकाशित

होते हैं और देव यज्ञ में हविर्दान के लिए देवताओं के तन्द्रारहित (स्फूर्तिवान्) दूत हैं॥५॥

सूक्त ११

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद - त्रिष्टुप

महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते ।
आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर्न्यग्ने होता प्रथमः सदेह ॥१॥

हे अग्निदेव ! आप यज्ञ का, ध्वजा के समान ज्ञापन करने वाले हैं। आप महान् हैं। आप समस्त देवगणों सहित रथ पर आरूढ़ होकर आएँ एवं प्रथम होता के रूप में कुश का आसन ग्रहण करें । आपके बिना देवगण हर्षित नहीं होते॥१॥

त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन्मानुषासः ।
यस्य देवैरासदो बर्हिरग्नेऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति ॥२॥

हे अग्निदेव ! आप प्रगतिशील हैं । हविर्दान करने वाले मनुष्य दूतकर्म के लिए सदैव आपसे याचना करते हैं। आप देवताओं के साथ जिस

याजक के कुश-आसन पर विराजते हैं, उसके आने वाले दिन शुभप्रद होते हैं॥२॥

त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुर्वसूनि त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्याय ।
मनुष्वदग्न इह यक्षि देवान्भवा नो दूतो अभिशस्तिपावा ॥३॥

हे अग्निदेव ! त्वग्गण मनुष्य के निमित्त दिन में तीन बार आपको हवि अर्पित करते हैं। जैसे आप मनु के यज्ञ में दूत बने थे, वैसे ही हमारे इस यज्ञ में दूत बनकर, हमें शत्रुओं (दुष्कृत्यों) से बचाएँ॥३॥

अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्याग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य ।
क्रतुं ह्यस्य वसवो जुषन्ताथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ॥४॥

अग्निदेव यज्ञ एवं समस्त आहुतियों के पति हैं । देवताओं ने अग्निदेव को हवि वहन करने वाला बनाया हैं। इन्हीं अग्निदेव की वसुगण सेवा करते हैं॥४॥

आग्ने वह हविरद्याय देवानिन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम् ।
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

हे अग्निदेव ! आप हविष्यान्न ग्रहण करने के लिए देवताओं का आवाहन करें। आप इस यज्ञ को स्वर्गलोक तक वहन कर, वहाँ

देवताओं तक पहुँचाएँ। इस यज्ञ के मुख्य देव (इन्द्रदेव) हर्षित हों । आप सब देवगण हमारा रक्षण करके कल्याण करें॥५॥

सूक्त १२

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद - त्रिष्टुप

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे ।
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम् ॥१॥

जो अपने स्थान (यज्ञ वेदिका) में प्रदीप्त और आकाश एवं पृथ्वी के मध्य विशेष रूप से दीप्तिमान् हैं, उन उत्तम आहुति युक्त, सर्वत्र व्याप्त, चिर युवा अग्निदेव को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए, हम उनका आश्रय प्राप्त करते हैं॥१॥

स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वानग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः ।
स नो रक्षिषद्दुरितादवद्यादस्मान्गृणत उत नो मघोनः ॥२॥

अपने महान् तेज से समस्त पापों को नष्ट करने वाले, ज्ञानरूपी प्रकाश के विस्तारक अग्निदेव, यज्ञशाला में प्रतिष्ठित होते हैं । वे स्तुत्य

अग्निदेव हमें दोषपूर्ण एवं निन्दित कर्मों से बचाते हैं और आहुतियाँ स्वीकार करके, हमारे योग-क्षेम का वहन करते हैं॥२॥

त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥

हे अग्निदेव ! आप वरुण (कामनाओं) की पूर्ति करने वाले और मित्र (स्नेहपूर्वक सहयोग देनेवाले) हैं। विशिष्ट ऋत्विग्गण श्रेष्ठ स्तुतियों से आपको गौरवान्वित करते हैं। आप श्रेष्ठ धन एवं कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा करें॥३॥

सूक्त १३

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ:
देवता – वैश्वानरोऽग्नि: । छंद - त्रिष्टुप

प्राग्नये विश्वशुचे धियंधेऽसुरघ्ने मन्म धीतिं भरध्वम् ।
भरे हविर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम् ॥१॥

सबको प्रेरणा देने वाले, (यज्ञ) कर्म को धारण करने वाले, असुरों का संहार करने वाले अग्निदेव के निमित्त हम स्तुति सहित यज्ञ कर रहे हैं। वे प्रसन्न होकर हमारी मनोकामनाओं को पूर्ण करें॥१॥

त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर जातवेदो महित्वा ॥२॥

हे अग्निदेव ! आप उत्पन्न होते ही प्रदीप्त होकर सम्पूर्ण द्युलोक एवं पृथ्वीलोक को प्रकाश से भर देते हैं। हे जातवेदा वैश्वानर अग्निदेव ! आपने अपनी महिमा द्वारा शत्रुओं से देवगणों की रक्षा की॥२॥

जातो यदग्ने भुवना व्यख्यः पशून्न गोपा इर्यः परिज्मा ।
वैश्वानर ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥

हे वैश्वानर अग्निदेव ! उत्पन्न होते ही आप सर्वप्रेरक एवं सर्वत्रगामी होकर पशुओं की सुरक्षा करते हैं। आप ज्ञान दान के लिए मार्ग खोजते एवं भुवनों का निरीक्षण करते हैं। आप सदा हमारा पालन करें, कल्याण करें॥३॥

ऋग्वेद – सप्तम मंडल

सूक्त १४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद – त्रिष्टुप, १ वृहती

समिधा जातवेदसे देवाय देवहूतिभिः ।
हविर्भिः शुक्रशोचिषे नमस्विनो वयं दाशेमाग्नये ॥१॥

हम विदाता, जातवेदा अग्निदेव की सेवा, समिधाओं से करते हैं । हम हविर्द्रव्य द्वारा एवं स्तोत्रों के गान द्वारा शुभ-आभायुक्त अग्निदेव की सेवा करते हैं॥१॥

वयं ते अग्ने समिधा विधेम वयं दाशेम सुष्टुती यजत्र ।
वयं घृतेनाध्वरस्य होतर्वयं देव हविषा भद्रशोचे ॥२॥

हे अग्निदेव ! हम समिधाओं से आपकी सेवा करेंगे। हे पूजनीय अग्निदेव ! उत्तम स्तुति द्वारा हम आपकी पूजा करेंगे। हे यज्ञ के होता अग्निदेव ! हम घृत से आपकी सेवा करेंगे । हे मंगलकारी प्रदीप्त ज्वालाओं वाले अग्निदेव ! हविर्द्रव्य द्वारा हम आपकी सेवा करेंगे॥२॥

आ नो देवेभिरुप देवहूतिमग्ने याहि वषट्कृतिं जुषाणः ।
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥

हे अग्निदेव ! वषट्कार से दिये गये अन्नरूप हवि को स्वीकार करते हुए, आप देवगणों सहित हमारे यज्ञ में पधारें । हे देव ! हम आपकी सेवा करने वाले बनें । आप सदा हमारा कल्याण करें, पालन करें॥३॥

सूक्त १५

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद – गायत्री

उपसद्याय मीळ्हुष आस्ये जुहुता हविः ।
यो नो नेदिष्ठमाप्यम् ॥१॥

हे ऋत्विजो ! जो अग्निदेव हमारे अत्यधिक निकट रहने वाले मित्र हैं, ऐसे समीपस्थ अग्निदेव के निमित्त उनके मुख में हवि अर्पित करें॥१॥

यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद दमेदमे ।
कविर्गृहपतिर्युवा ॥२॥

हे ज्ञानी, गृहपति अग्निदेव ! आप तरुण हैं । आप पञ्चजनों (पाँच वर्षों या पंच प्राणों) के समक्ष घर-घर में प्रतिष्ठित हैं॥२॥

स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु विश्वतः ।

उतास्मान्पात्वंहसः ॥३॥

अत्यन्त कल्याणकारी वे अग्निदेव हमारे धन की रक्षा में सहायक हों और हमें पापों से दूर करें॥३॥

नवं नु स्तोममग्नये दिवः श्येनाय जीजनम् ।
वस्वः कुविद्वनाति नः ॥४॥

द्युलोक में शीघ्रगामी श्येन पक्षी के तुल्य अग्निदेव के निमित्त, हम स्तोतागण नया स्तोत्र प्रस्तुत करते हैं । वे हमें पर्याप्त धन प्रदान करें॥४॥

स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा ।
अग्रे यज्ञस्य शोचतः ॥५॥

देदीप्यमान अग्नि शिखाएँ यज्ञ के अग्रभाग में वैसे ही सुशोभित दिखती हैं, जैसे पुत्रवान् याजक का धन शोभनीय होता है॥५॥

सेमां वेतु वषट्कृतिमग्निर्जुषत नो गिरः ।
यजिष्ठो हव्यवाहनः ॥६॥

यजनीय हविर्द्रव्यों का वहन करने वाले अग्निदेव, हमारे द्वारा अर्पित वषट्कृति (स्तोत्रयुक्त आहुतियाँ) स्वीकार करें एवं हमारी प्रार्थना सुनें॥६॥

नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं देव धीमहि ।
सुवीरमग्न आहुत ॥७॥

हे आभायुक्त, सुवीर अग्निदेव ! हम आपको यहाँ प्रतिष्ठित करते हैं । हे उपास्य जगत्पते ! आप याजकों द्वारा आहूत किये गये हैं॥७॥

क्षप उस्रश्च दीदिहि स्वग्नयस्त्वया वयम् ।
सुवीरस्त्वमस्मयुः ॥८॥

आप रात्रि और दिन में प्रदीप्त हों । हे अग्निदेव ! आपसे ही हम उत्तम अग्नि वाले बनेंगे। आप हमारे शोभन (सुन्दर) स्तोत्रों के द्वारा प्रसन्न हों॥८॥

उप त्वा सातये नरो विप्रासो यन्ति धीतिभिः ।
उपाक्षरा सहस्रिणी ॥९॥

आपके पास विप्रजन बुद्धिपूर्वक किये गये कर्मों द्वारा धन पाने के लिए पहुँचते हैं। सहस्रों अक्षरों वाली वाणी (स्तुति) भी आपके पास पहुँचती है॥९॥

अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः ।
शुचिः पावक ईड्यः ॥१०॥

धवल, आभायुक्त, अमर, पावन और शुद्ध करने वाले अग्निदेव असुरों का नाश करते हैं। वे देव स्तुति करने योग्य हैं॥१०॥

स नो राधांस्या भरेशानः सहसो यहो ।
भगश्च दातु वार्यम् ॥११॥

हे बल के पुत्र अग्निदेव ! आप समस्त विश्व के अधिपति होकर हमें उत्तम धन प्रदान करें। भगदेव भी हमें धन प्रदान करें॥११॥

त्वमग्ने वीरवद्यशो देवश्च सविता भगः ।
दितिश्च दाति वार्यम् ॥१२॥

हे अग्निदेव ! युद्ध में आप हमसे विपरीत न हों, जिस प्रकार भारवाहक भार को उठा लाता है, उसी प्रकार शत्रु से जीती हुई, संगृहीत सम्पदा को लाकर हमें प्रदान करें॥१२॥

अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः ।
तपिष्ठैरजरो दह ॥१३॥

हे अग्निदेव ! पाप से हमें बचाएँ । हमारी रक्षा कर आप अपने अजर-अमर तथा प्रखर तेज से हिंसक शत्रुओं की कामनाओं को भस्मीभूत करें॥१३॥

अधा मही न आयस्यनाधृष्टो नृपीतये ।
पूर्भवा शतभुजिः ॥१४॥

हे शत्रुओं द्वारा आक्रान्त न होने वाले अग्निदेव ! आप हम मनुष्यों की सुरक्षा के लिए सैकड़ों विशेषताओं से सम्पन्न लौहवत् एक सुदृढ़ नगर बनाएँ॥१४॥

त्वं नः पाह्यंहसो दोषावस्तरघायतः ।
दिवा नक्तमदाभ्य ॥१५॥

हे अदम्य अग्निदेव ! आप हमें दिन-रात पापों से बचाएँ और दिन एवं रात के समय दुष्ट शत्रुओं से आप हमारी रक्षा करें॥१५॥

सूक्त १६

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद – प्रगाथ

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥१॥

शक्ति क्षीण न होने देने वाले, चेतना एवं स्नेह प्रदाता, उत्तम यज्ञ के आधाररूप, ज्ञानदाता, सनातन अग्निदेव का आवाहन करते हुए हम उनकी वन्दना करते हैं॥१॥

स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत्स्वाहुतः ।
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ॥२॥

वे अग्निदेव विश्व के प्राणियों का पोषण करने में समर्थ तेज को नियोजित करते हैं । वे उत्तम ज्ञानी, संयमी, पवित्र अग्निदेव श्रेष्ठ आहुतियों से प्रदीप्त होकर गतिमान होते हैं । ये अग्निदेव ही विद्वानों के श्रेष्ठ धन हैं॥२॥

उदस्य शोचिरस्थादाजुह्वानस्य मीळ्हुषः ।
उद्धूमासो अरुषासो दिविस्पृशः समग्निमिन्धते नरः ॥३॥

कामनाओं की पूर्ति करने वाले अग्निदेव को लोग प्रदीप्त कर रहे हैं। उसमें (अग्नि में) हवि अर्पित करने पर, अग्निदेव का तेज ऊर्ध्वगामी होता है । तेजवान् एवं दिविस्पर्शी (स्वर्ग लोक तक पहुँचने वाला) धूम्र ऊर्ध्वगमन कर रहा है॥३॥

तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह ।
विश्वा सूनो सहसो मर्तभोजना रास्व तद्यत्त्वेमहे ॥४॥

हे बल से उत्पन्न यशस्वी अग्निदेव ! आपको हम अपना दूत स्वीकार करते हैं। हे देव ! हवि ग्रहण करने के लिए आप समस्त देवताओं का आवाहन करें । जब हम आपसे याचना करें, तब आप हमें मानवोचित भोग्य (उपयोगी) धन प्रदान करें॥४॥

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे ।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम् ॥५॥

हे अग्निदेव ! आप इस यज्ञ के होतारूप और गृहपति हैं । आप सभी के द्वारा स्वीकार करने योग्य हैं तथा सभी को पवित्र करने वाले हैं।

आप श्रेष्ठ ज्ञानी हैं और धनादि प्राप्त करके उसे वितरित भी करते हैं॥५॥

कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि ।
आ न ऋते शिशीहि विश्वमृत्विजं सुशंसो यश्च दक्षते ॥६॥

हे श्रेष्ठकर्मा अग्निदेव ! आप याजकों को रत्न प्रदान करें । रत्नदाता आप हमारे यज्ञ में सभी ऋत्विजों को तेजस्वी बनाएँ । जो प्रशंसनीय हैं, उन्हें कुशलतापूर्वक आगे बढ़ाएँ॥६॥

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान्दयन्त गोनाम् ॥७॥

हे अग्निदेव ! उत्तम अग्नि कार्य (यज्ञ) करने वाले विद्वज्जन, धन का नियोजन करने वाले, प्रजा की व्यवस्था बनाने वाले तथा गौओं का पालन करने वाले आपकी कृपा के पात्र बनें॥७॥

येषामिळा घृतहस्ता दुरोण आँ अपि प्राता निषीदति ।
ताँस्त्रायस्व सहस्य द्रुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत् ॥८॥

यज्ञ के निमित्त जिन घरों में घृत और हविष्यान्न से पूर्ण पात्र लिए हुए देवीस्वरूपा स्त्रियाँ निवास करती हैं, हे बलेवान् अग्निदेव ! आप

निन्दकों एवं शत्रुओं से उनकी रक्षा करें । हम आपकी स्तुति करते रहें॥८॥

स मन्द्रया च जिह्वया वह्निरासा विदुष्टरः ।
अग्ने रयिं मघवद्भ्यो न आ वह हव्यदातिं च सूदय ॥९॥

हे अग्निदेव ! आप, हविर्द्रव्य प्रेषित करने वाले हम सबको श्रेष्ठ कर्म में प्रेरित करें। आप हवि वाहक हैं । आनन्द देने वाली जिह्वा से हवि का वहन करने वाले हे देव ! आप हमें धन प्रदान करें॥९॥

ये राधांसि ददत्यश्व्या मघा कामेन श्रवसो महः ।
ताँ अंहसः पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं शतं पूर्भिर्यविष्ठ्य ॥१०॥

हे अतितरुण अग्निदेव ! जो लोग यश प्राप्ति की कामना से साधना करते हैं एवं अश्वात्मक (गतिशील) हुवि अर्पित करते हैं, उन्हें आप पापों से बचाएँ; अपने संरक्षण साधनों तथा सैकड़ों नगरियों (किलों) द्वारा उनको सुरक्षित करें॥१०॥

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम् ।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥११॥

(हे याजको !) धन प्रदाता अग्निदेव आपसे पूर्ण पात्र या पूर्ण भाव युक्त आहुति की अपेक्षा करते हैं। आप उन्हें सिंचित करें अथवा (पात्र को) परिपूर्ण करें, तब वे देवता आपके कार्यों (यज्ञादि अथवा काम्य कर्मों) का वहन करेंगे॥११॥

तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे ॥१२॥

देवों ने श्रेष्ठ प्रज्ञावान् उन अग्निदेव को अपना सहायक बनाया है, जो हवि के वाहक हैं । वे यज्ञ करने वालों तथा दान देने वालों के लिए पराक्रम आदि श्रेष्ठतम विभूतियाँ प्रदान करते हैं॥१२॥

ऋग्वेद – सप्तम मंडल

सूक्त १७

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – अग्नि: । छंद – द्विपदा त्रिष्टुप

अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध उत बर्हिरुर्विया वि स्तृणीताम् ॥१॥

हे अग्निदेव ! आप भली प्रकार प्रज्वलित हों । याजक अच्छी तरह से कुश का आसन बिछाएँ ॥१॥

उत द्वार उशतीर्वि श्रयन्तामुत देवाँ उशत आ वहेह ॥२॥

हे अग्निदेव ! देवताओं की कामना करने वाली (नारियों अथवा वाणियों) को आप आश्रय प्रदान करें एवं यज्ञ (आहुतियों) की अभिलाषा करने वाले देवताओं को आप इस यज्ञ में आवाहन करें॥२॥

अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान्त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ॥३॥

हे ज्ञातवेदा अग्निदेव ! आप देवताओं के पास पहुँचकर, वि द्वारा देवताओं का यजन करें। उन्हें शोभन यज्ञकर्ता बनाएँ॥३॥

स्वध्वरा करति जातवेदा यक्षद्देवाँ अमृतान्पिप्रयच्च ॥४॥

हे जातवेदा अग्निदेव ! आप अमर्त्य देवताओं का यजन करें। आप स्तोत्रों द्वारा उनको प्रसन्न करें॥४॥

वंस्व विश्वा वार्याणि प्रचेतः सत्या भवन्त्वाशिषो नो अद्य ॥५॥

हे प्रज्ञावान् अग्निदेव ! आप हमें सभी प्रकार का श्रेष्ठ धन प्रदान करें । (आपकी कृपा से) आज हमारे (प्रति प्रदान किए गये) आशीर्वाद सत्य (फलित) हों॥५॥

त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं देवासो अग्न ऊर्ज आ नपातम् ॥६॥

हे बल के पुत्र अग्निदेव ! आपको देवताओं ने हवि-वाहक के रूप में धारण (स्वीकार किया है॥६॥

ते ते देवाय दाशतः स्याम महो नो रत्ना वि दध इयानः ॥७॥

हे अग्निदेव ! आप प्रकाशस्वरूप, महान् एवं उपास्य हैं। हम आपके निमित्त आहुतियाँ अर्पित करेंगे। आप हमें रत्न (धन या विभूतियाँ) प्रदान करें॥७॥

सूक्त १८

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, २२-२५ सुदा, पैजवन:। छंद - त्रिष्टुप

त्वे ह यत्पितरश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन् ।
त्वे गावः सुदुघास्त्वे ह्यश्वास्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः ॥१॥

हे इन्द्रदेव ! प्राचीनकाल में हमारे पूर्वज स्तुति द्वारा आपको प्रसन्न करके धन को प्राप्त करते थे । आप उत्तम घोड़ों एवं दुधारू गौओं के स्वामी हैं । आप, देवत्व-प्राप्ति की कामना वाले हम सभी को प्रभूत धन प्रदान करते हैं॥१॥

राजेव हि जनिभिः क्षेष्येवाव द्युभिरभि विदुष्कविः सन् ।
पिशा गिरो मघवन्गोभिरश्वैस्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान् ॥२॥

हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार रानियों के मध्य राजा सुशोभित होते हैं, उसी प्रकार आप भी द्युलोक में सुशोभित होते हैं । हे इन्द्रदेव ! आप ज्ञानी और कवि होकर स्तुति करने वालों को रूप प्रदान करें एवं अश्वों

द्वारा उनकी रक्षा करें । हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें संस्कारवान् बनाएँ, जिससे धन हमारे पास आये॥२॥

इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः ।
अर्वाची ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमताविन्द्र शर्मन् ॥३॥

हे इन्द्रदेव ! इस यज्ञ में हम स्तोता, स्तोत्रों द्वारा आपको यशोगान करते हैं। स्पर्धा करने वाली, हर्षित करने वाली एवं देवत्व की कामना वाली हमारी ये वाणियाँ आपके समीप पहुँचती हैं । हम, आप द्वारा प्रेषित सद्बुद्धि से सत्कर्म करते हुए सुख पायें एवं धन भी प्राप्त करें॥३॥

धेनुं न त्वा सूयवसे दुदुक्षन्नुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः ।
त्वामिन्मे गोपतिं विश्व आहा न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ ॥४॥

वसिष्ठ आपके (अनुदान रूप दुग्ध) दोहन के निमित्त, बछड़ा रूपी स्तोत्रों की रचना करके उसी तरह दुह लेते हैं, जिस तरह उत्तम घास वाली गोशाला की गाय को (बछड़े के सहारे से) गोपालक दुह लेता है । विश्व में आप ही गौओं (इन्द्रियों एवं किरणों) के पतिरूप में प्रसिद्ध हैं। हे इन्द्रदेव ! हम वसिष्ठ गोत्रीय होता की स्तुति सुनकर आप हमारे निकट आएँ॥४॥

अर्णांसि चित्पप्रथाना सुदास इन्द्रो गाधान्यकृणोत्सुपारा ।
शर्धन्तं शिम्युमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः ॥५॥

स्तुति से प्रसन्न होकर इन्द्रदेव ने राजा 'सुदास' (श्रेष्ठ भक्त) को उत्ताल तरंगों वाली, कठिन, पार न की जा सकने वाली नदी 'परुष्णी' को सहजता से पार करा दिया। स्तुति करने वालों को अपने तरंगित नदियों के शाप से मुक्त किया ॥५॥

पुरोळा इत्तुर्वशो यक्षुरासीद्राये मत्स्यासो निशिता अपीव ।
श्रुष्टिं चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद्विषूचोः ॥६॥

"तुर्वश' (राजा तुर्वश अथवा कामना युक्त जल्दबाज व्यक्ति) यज्ञ द्वारा प्रगति चाहते थे, मत्स्यों (मत्स्य वंशियों अथवा मछलियों) की तरह धन-ऐश्वर्य के लिए प्रयत्नरत थे, 'भृगु (वेदज्ञ, यजनशील ज्ञानी) तथा 'द्रुह' (द्वेषपूर्वक रहने वाले) धन के लिए स्पर्धारत थे; इस स्पर्धा में मित्र (इन्द्र) ने 'तुर्वश' आदि को नष्ट किया। मित्र सुदास (सदाशय सम्पन्न भृगु आदि) को तार दिया॥६॥

आ पक्थासो भलानसो भनन्तालिनासो विषाणिनः शिवासः ।
आ योऽनयत्सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सुभ्यो अजगन्युधा नृन् ॥७॥

हविष्यान्न पकाने में कुशल, तपोनिष्ठ, भद्रमुख (प्रसन्नचित्त), विषाण धारक (दीक्षित) स्तोतागण सबके कल्याण की इच्छा से उन इन्द्रदेव की स्तुति करते हैं, जिन इन्द्रदेव ने साथ-साथ रहने वाले उत्तम पुरुषों की गौओं को वापस लाने के लिए, युद्ध में गौओं को चुराने वालों का संहार किया॥७॥

दुराध्यो अदितिं स्रेवयन्तोऽचेतसो वि जगृभ्रे परुष्णीम् ।
मह्नाविव्यक्पृथिवीं पत्यमानः पशुष्कविरशयच्चायमानः ॥८॥

दुष्ट बुद्धि वाले मूढ़ शत्रुओं ने 'परुष्णी नदी के तटों को तोड़ डाला। इन्द्रदेव की कृपा से 'सुदास' ने 'चयमान' के पुत्र को, पाले गये पशु के समान सहज ही धराशायी कर दिया, जिससे 'सुदास' का यश विश्वव्यापी हुआ ॥८॥

ईयुरर्थं न न्यर्थं परुष्णीमाशुश्चनेदभिपित्वं जगाम ।
सुदास इन्द्रः सुतुकाँ अमित्रानरन्धयन्मानुषे वध्रिवाचः ॥९॥

इन्द्रदेव ने 'परुष्णी नदी के तटों को सुधरवा कर जल-प्रवाह को व्यवस्थित किया। 'सुदास' का घोड़ा भी अपने गन्तव्य स्थान को गया । इन्द्रदेव ने सुदास के उन शत्रुओं का संहार कर दिया, जो बकवादी तथा बहुत संतान युक्त थे॥९॥

ईयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चितासः ।
पृश्निगावः पृश्निनिप्रेषितासः श्रुष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च ॥१०॥

गोपालक के बिना भी जिस प्रकार गौएँ जौ के निमित्त जाती हैं, वैसे ही माता के द्वारा प्रेरित, चैतन्य, विभिन्न वर्गों की गौओं वाले (मरुद्गण) पूर्व निश्चयानुसार अपने मित्र इन्द्रदेव के सहयोग के लिए जाते हैं । मरुद्गणों के अश्व भी चपलता से गतिमान होते हैं॥१०॥

एकं च यो विंशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोर्जनान्राजा न्यस्तः ।
दस्मो न सद्मन्नि शिशाति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम् ॥११॥

वीर इन्द्रदेव ने सुदास (उत्तम जनों) की सहायता के लिए मरुतों को उत्पन्न किया । ये मरुद्गण संग्राम में शत्रुओं को उसी तरह काटते हैं, जैसे युवक दर्शों को काटता है । इन्द्रदेव ने सुदास की रक्षा के लिए इक्कीस वैकर्णों (विकर्ण क्षेत्रवासी, अथवा ने सुनने वाले अथवा निर्देश की उपेक्षा करने वाले) का वध किया॥११॥

अध श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्वनु द्रुह्युं नि वृणग्वज्रबाहुः ।
वृणाना अत्र सख्याय सख्यं त्वायन्तो ये अमदन्ननु त्वा ॥१२॥

इसके अतिरिक्त हाथ में वज्र धारण करने वाले इन्द्रदेव ने श्रुत, कवष तथा वृद्ध द्रोही जनों को जल में डुबाकर मार डाला । हे इन्द्रदेव !

उस समय जिन्होंने आपके अनुकूल आनन्दवर्धक कार्य किये, वे आपके मित्र कहलाए॥१२॥

वि सद्यो विश्वा दृंहितान्येषामिन्द्रः पुरः सहसा सप्त दर्दः ।
व्यानवस्य तृत्सवे गयं भाग्जेष्म पूरुं विदथे मृध्रवाचम् ॥१३॥

इन्द्रदेव ने स्वयं की सामर्थ्य से शत्रुओं की सैन्य शक्ति एवं सुदृढ़ किलों को ध्वस्त किया। 'अनु" के पुत्र के गय (घरं या प्राण) को 'तृत्सु' के लिए प्रदान किया। हे इन्द्रदेव ! आप हम पर ऐसी कृपा करें, ताकि हम कटुभाषी पर विजय प्राप्त कर सकें॥१३॥

नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च षष्टिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा ।
षष्टिर्वीरासो अधि षड्दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या कृतानि ॥१४॥

हे इन्द्रदेव ! 'अनु' और 'दुह' के अनुयायी छासठ हजार छासठ वीरों का, आपने सुदास के हित के लिए वध किया था, ये समस्त कार्य आपके पराक्रम के ही द्योतक हैं॥१४॥

इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अधवन्त नीचीः ।
दुर्मित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वानि भोजना सुदासे ॥१५॥

संग्राम भूमि में अज्ञानी, दुष्ट सहयोगियों वाले 'तृत्सु', इन्द्र के समक्ष टिक न सके और निम्न प्रवाही जल की तरह तीव्रगति से भाग खड़े हुए। छोड़ी गयी भोग्य सामग्री सुदास को प्राप्त हुई॥१५॥

अर्धं वीरस्य शृतपामनिन्द्रं परा शर्धन्तं नुनुदे अभि क्षाम् ।
इन्द्रो मन्युं मन्युम्यो मिमाय भेजे पथो वर्तनिं पत्यमानः ॥१६॥

विनाश करने वाले वीरों, दुष्ट, विरन्न के भक्षक, विनाशक शत्रुओं एवं शत्रुओं के क्रोध को इन्द्रदेव ने धराशायी कर दिया। भगोड़े शत्रु को पलायन-मार्ग से भागने को विवश किया॥१६॥

आध्रेण चित्तद्वेकं चकार सिंह्यं चित्पेत्वेना जघान ।
अव स्रक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद्विश्वा भोजना सुदासे ॥१७॥

इन्द्रदेव ने सुदास द्वारा जो कार्य करवाये, वे वैसे ही चमत्कारपूर्ण लगे, जैसे कोई दरिद्र बड़ा दान करे, बकरा सिंहराज को मार डाले अथवा सुई से कोई यूप काट डाले । इस प्रकार इन्द्रदेव ने सुदास को ही समस्त प्रकार के भोग्य-ऐश्वर्य प्रदान किये॥१७॥

शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टे भेदस्य चिच्छर्धतो विन्द रन्धिम् ।
मर्ताँ एनः स्तुवतो यः कृणोति तिग्मं तस्मिन्नि जहि वज्रमिन्द्र ॥१८॥

हे इन्द्रदेव ! समस्त वीर शत्रुगण आपके वश में हो गये हैं । हे देव । सुकर्मियों का अहित करने वाले 'भेद (इस नाम के असुर या भेद वृत्ति) को भी वशीभूत करके, उस पर वज्र प्रहार करें॥१८॥

आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च प्रात्र भेदं सर्वताता मुषायत् ।
अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च बलिं शीर्षाणि जभ्रुरश्व्यानि ॥१९॥

इस सर्वव्यापी युद्ध में इन्द्रदेव ने भेद' (आदि) शत्रुओं का संहार किया था । यमुना और तृत्सुओं ने इन्द्रदेव को सन्तुष्ट किया था। 'अजा', 'शिमु' और 'यक्षु' जनों ने इन्द्रदेव के निमित्त अनके अश्व उपहार में दिये थे॥१९॥

न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वा उषसो न नूत्नाः ।
देवकं चिन्मान्यमानं जघन्थाव त्मना बृहतः शम्बरं भेत् ॥२०॥

हे इन्द्रदेव ! आपने पहले भी कृपा करके जो धनादि प्रदान किये, वे सब उषाओं की भाँति ही अवर्णनीय हैं। आपके नूतन उपकारों का भी वर्णन नहीं किया जा सकता है । आपने 'मान्यमान' के पुत्र 'देवक' का संहार किया एवं आपने बड़ी शिला के द्वारा शम्बर असुर को स्वयं वध किया॥२०॥

प्र ये गृहादममदुस्त्वाया पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः ।

न ते भोजस्य सख्यं मृषन्ताधा सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान् ॥२१॥

हे इन्द्रदेव ! जिन्हें असुर मारना चाहते थे, ऐसे पराशर, वसिष्ठ आदि ऋषियों ने भक्तिपूर्वक आपकी स्तुति की है । आप उनके पालक हैं। अत: वे आपकी मित्रता को नहीं भूले । आपकी कृपा से इन अषयों को श्रेष्ठ दिवस (शुभ अवसर प्राप्त हों॥२१॥

द्वे नप्तुर्देववतः शते गोर्द्वा रथा वधूमन्ता सुदासः ।
अर्हन्नग्ने पैजवनस्य दानं होतेव सद्म पर्येमि रेभन् ॥२२॥

हे अग्निदेव ! देववान् के पौत्र एवं पिजवन के पुत्र राजा सुदास ने दो सौ गौएँ और भारवाही दो रथों को दान में दिया, हम इस दान की प्रशंसा करते हुए, होता की ही भाँति1 गृह में यज्ञ सम्पन्न करने हेतु जाते हैं॥२३॥

चत्वारो मा पैजवनस्य दानाः स्मद्दिष्टयः कृशनिनो निरेके ।
ऋज्रासो मा पृथिविष्ठाः सुदासस्तोकं तोकाय श्रवसे वहन्ति ॥२३॥

पिजवन पुत्र राजा सुदास ने सोने के आभूषणों से सजे हुए एवं कठिन मार्गों में भी सहजता से गमन करने वाले, पुत्रवत् पाले गये चार-अश्व (वसिष्ठ ऋषि को) श्रद्धा सहित दान दिए । पृथ्वी पर प्रसिद्ध वे घोड़े

वसिष्ठ ऋषि को पुत्र के समान (संरक्षित रखते हुए) पुत्र एवं यश (प्राप्ति के लिए ले जाते हैं॥२३॥

यस्य श्रवो रोदसी अन्तरुर्वी शीर्ष्णेशीर्ष्णे विबभाजा विभक्ता ।
सप्तेदिन्द्रं न स्रवतो गृणन्ति नि युध्यामधिमशिशादभीके ॥२४॥

'राजा सुदास' का यश दान-दाता के रूप में पृथ्वी से स्वर्गलोक तक फैला हैं । सातों लोक इस महान् दानी की उसी तरह प्रशंसा करते हैं, जिस प्रकार इन्द्रदेव की । इनके युध्यामधि नामक शत्रु को नदियों द्वारा (डुबाकर)मार डाला गया॥२४॥

इमं नरो मरुतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदासः ।
अविष्टना पैजवनस्य केतं दूणाशं क्षत्रमजरं दुवोयु ॥२५॥

हे नेतृत्व क्षमता सम्पन्न मरुतो ! ये राजा सुदास हैं, इनके पिता पिजवन हैं । आप दिवोदास के समान ही सुदास के निवास की रक्षा करें। इनका क्षात्रबल बढ़ता ही जाये, कम न हो॥२५॥

सूक्त १९

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः ।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः ॥१॥

जो इन्द्रदेव तीक्ष्ण सींग वाले वृषभ के समान भयंकर हैं, वे अकेले ही समस्त शत्रुओं को अपने स्थान से पतित कर देते हैं । जो यजन नहीं करते, ऐसे लोगों के निवास छीन लेने वाले हे इन्द्रदेव ! आप हम याजकों को धन-ऐश्वर्य प्रदान करें॥१॥

त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये ।
दासं यच्छुष्णं कुयवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन् ॥२॥

हे इन्द्रदेव ! जब संग्राम काल में आपने 'कुत्स' की सुरक्षा, स्वयं शुश्रूषा करके की थी, तब अर्जुन के पुत्र कुत्स को धन दिया था एवं दास 'शुष्ण' और 'कुयव' का संहार किया था॥२॥

त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम् ।
प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम् ॥३॥

हे अदम्य इन्द्रदेव ! आप हवि पदार्थ अर्पित करने वाले राजा सुदास की सुरक्षा, अपनी रक्षण शक्ति सहित वज्र द्वारा करते हैं। आपने शत्रु का संहार करने के समय एवं भूमि के बँटवारे के समय, पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदस्यु एवं पूरू का संरक्षण किया था ॥३॥

त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि ।
त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चास्वापयो दभीतये सुहन्तु ॥४॥

मनुष्यों के हितैषी मनवाले हे इन्द्रदेव ! आपने युद्ध भूमि में मरुद्गणों की सहायता से उनके शत्रुओं का विनाश किया था। हे हरित वर्ण के अश्व वाले इन्द्रदेव ! आपने ही दभीति की सुरक्षा के लिए दस्यु चुमुरि एवं धुनि को मारा॥४॥

तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि नव यत्पुरो नवतिं च सद्यः ।
निवेशने शततमाविवेषीरहञ्च वृत्रं नमुचिमुताहन् ॥५॥

हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! आपने अपने प्रसिद्ध बल के द्वारा शत्रुओं के निन्यानवे नगरों को बहुत कम समय में ही ध्वस्त कर दिया। अपने

निवास के लिए सौवें नगर में प्रवेश कर आपने वृत्रासुर एवं नमुच को मारा॥५॥

सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे ।
वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम् ॥६॥

हे इन्द्रदेव ! आपने हविदाता राजा सुदास के लिए सदा रहने वाली धन-सम्पदा प्रदान की । हे बहुकर्मा इन्द्रदेव ! आप कामनाओं की पूर्ति करने वाले हैं। हम आपके लिए दो बलशाली अश्वों को रथ में नियोजित करते हैं। आप बलवान् के पास हमारे स्तोत्र पहुँचें॥६॥

मा ते अस्यां सहसावन्परिष्टावघाय भूम हरिवः परादै ।
त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैस्तव प्रियासः सूरिषु स्याम ॥७॥

हे इन्द्रदेव ! आप बलवान् हैं और अश्वों के स्वामी हैं। आपके इस यज्ञ में हम दूसरों से सहायता प्राप्त करने का पाप न करें । आप अपने रक्षण साधनों से हमारी रक्षा करें । हम आपकी स्तुति करने वाले विशेष प्रिय पात्र बनें॥७॥

प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः ।
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ॥८॥

हे धनपति इन्द्रदेव ! आपकी स्तुति करने वाले हम परस्पर प्रेमपूर्वक मित्रभाव से घर में प्रसन्न होकर रहें । आप अतिथि-सत्कार में निपुण सुदास को सुख प्रदान करते हुए, तुर्वश एवं यदुवंशी को परास्त करें॥८॥

सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था ।
ये ते हवेभिर्वि पणीँरदाशन्नस्मान्वृणीष्व युज्याय तस्मै ॥९॥

हे धनवान् इन्द्रदेव ! आपके यज्ञ में हम स्तोता ही उक्थ(स्तोत्रों) का उच्चारण करते हैं। आपको हवि अर्पित करके, उक्थों के उच्चारण द्वारा पणियों (लोभियों) को भी धन दान करने की प्रेरणा दी । हम सबको आप मित्रवत् स्वीकार करें॥९॥

एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्यमस्मद्र्यञ्चो ददतो मघानि ।
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम् ॥१०॥

हे नेतृत्व करने वालों में श्रेष्ठ इन्द्रदेव ! स्तोत्रों और हवि द्वारा आपका यजन करने वालों ने आपको हम सबका हितैषी बना दिया है। आप युद्ध के समय इन्हीं स्तोताओं की रक्षा करें॥१०॥

नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व ।
उप नो वाजान्मिमीह्युप स्तीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥११॥

हे शूरवीर इन्द्रदेव ! स्तुत्य होकर और ज्ञान से प्रेरित होकर आपके शरीर और रक्षण शक्तियों में वृद्धि हो । हम सबको आप अपनी कल्याणकारी शक्तियों द्वारा सुरक्षित कर, अन्न एवं आवास (घर) प्रदान करें॥११॥

सूक्त २०

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावाञ्चक्रिरपो नर्यो यत्करिष्यन् ।
जग्मिर्युवा नृषदनमवोभिस्त्राता न इन्द्र एनसो महश्चित् ॥१॥

धारणशक्ति युक्त पराक्रमी इन्द्रदेव वीरतापूर्ण कार्य करने के लिए ही उत्पन्न हुए हैं। वे उस कार्य को अवश्य ही पूर्ण करते हैं, जो उन्हें मनुष्यों के हित के लिए उचित लगता है । यज्ञशाला की ओर जाने वाले तरुण एवं संरक्षक, इन्द्रदेव महापातक से हमारी रक्षा करें॥१॥

हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः प्रावीन्नु वीरो जरितारमूती ।
कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं दाता वसु मुहुरा दाशुषे भूत् ॥२॥

वृद्धि को प्राप्त होकर इन्द्रदेव वृत्र का संहार करते हैं । स्तोताओं को आश्रय प्रदान करके, वे वीर उनकी रक्षा करते हैं। वे सुदास राजा के

लिए क्षेत्र का निर्माण करते हैं । वे याजक को बार-बार धन प्रदान करते हैं॥२॥

युध्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा शूरः सत्राषाड्जनुषेमषाळ्हः ।
व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान ॥३॥

युद्ध कला में कुशल, युद्धरत रहने वाले, योद्धा, संग्राम के लिए सदा तत्पर, शूरवीर एवं सहज स्वभाव से ही अनेक शत्रुओं को जीतने वाले, स्वयं कभी न हारने वाले, इन्द्रदेव ने शत्रु सैन्य दल को अस्त-व्यस्त करते हुए शत्रुओं का वध किया॥३॥

उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा पप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः ।
नि वज्रमिन्द्रो हरिवान्मिमिक्षन्त्समन्धसा मदेषु वा उवोच ॥४॥

हे परम ऐश्वर्यशाली इन्द्रदेव ! आप अपने बल एवं महिमा द्वारा, द्यावा-पृथिवीं दोनों लोकों को परिपूरित करते हैं। वे इन्द्रदेव अश्व वाले और शत्रुओं पर वज्र से आघात करने वाले हैं। उन देव की यज्ञ में सोमरस द्वारा सेवा की जाती है॥४॥

वृषा जजान वृषणं रणाय तमु चिन्नारी नर्यं ससूव ।
प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्तीनः सत्वा गवेषणः स धृष्णुः ॥५॥

बलवती माता एवं बलवान् पिता ने मनुष्यों के हित में युद्ध करने के लिए पुत्र इन्द्रदेव को उत्पन्न किया। जो मनुष्यों के हितकारी सेनानायक होकर प्रभावी स्वामी बन जाते हैं, वे शत्रुनाशक इन्द्रदेव गौओं (किरणों) की खोज करने वाले एवं शत्रुओं का दमन करने वाले हैं॥५॥

नू चित्स भ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो अस्य घोरमाविवासात् ।
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपा ऋतेजाः ॥६॥

जो मनुष्य इन शूरवीर इन्द्रदेव के मन को, यज्ञ द्वारा सेवा करके प्रसन्न करते हैं, वे पतित नहीं होते हैं और न क्षीण होते हैं । यज्ञोत्पन्न और यज्ञ रक्षक इन्द्रदेव, स्तोताओं को धन प्रदान करते हैं॥६॥

यदिन्द्र पूर्वो अपराय शिक्षन्नयज्ज्यायान्कनीयसो देष्णम् ।
अमृत इत्पर्यासीत दूरमा चित्र चित्र्यं भरा रयिं नः ॥७॥

हे विचित्र इन्द्रदेव ! जो धन पूर्वज अपने वंशजों को देते हैं । जो श्रेष्ठ से कनिष्ठ को प्राप्त होता है तथा जो अक्षय धन दूर देश जाकर प्राप्त किया जाता है। वे तीनों प्रकार के धन आप हमें प्रदान करें॥७॥

यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाशदसन्निरेके अद्रिवः सखा ते ।
वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्ठाः स्याम वरूथे अघ्नतो नृपीतौ ॥८॥

हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! जो प्रिय मित्र आपके लिए हवि प्रदान करता है, उसे आपके द्वारा प्रदत्त दान प्राप्त हो । आपकी कृपा से हम धनवान्, अन्नवान् एवं अहिंसक वृत्ति वाले बनें । मनुष्यों के निवास योग्य सुरक्षित घर में हम रहें॥८॥

एष स्तोमो अचिक्रदद्वृषा त उत स्तामुर्मघवन्नक्रपिष्ट ।
रायस्कामो जरितारं त आगन्त्वमङ्ग शक्र वस्व आ शको नः ॥९॥

हे धनवान् इन्द्रदेव ! आपका बलवर्धक यह सोम, शब्द करता है एवं स्तोतागण स्तुति करते हैं । हे इन्द्रदेव ! हम आपके स्तोतागण हैं, हमें धन की इच्छा है, अतएव आप हम लोगों को धन सहित निवास प्रदान करें॥९॥

स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१०॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमें धारण कर सुरक्षित रखें; ताकि आपके द्वारा प्रदत्त अन्न के उपभोग करने की शक्ति हमारे अन्दर रहे । जो धनवान् स्वेच्छा से हवि प्रदान करते हैं, उन्हें भी सुरक्षित करें । स्तोताओं में स्तुति करने की शक्ति रहे । आप कल्याणकारी रक्षण-साधनों से हम सबकी सुरक्षा करें॥१०॥

सूक्त २१

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच ।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा नः स्तोममन्धसो मदेषु ॥१॥

यह निचोड़ा गया दिव्य सोमरस गो दुग्ध के साथ मिश्रित हुआ है । इन्द्रदेव जन्म से ही इसके प्रति रुचि रखते हैं । हे हरि (नामक) अश्वों से युक्त (इन्द्र !) हम यज्ञों में आपको जाग्रत् करते हैं। सोम से आनन्दित होकर आप हमारे स्तोत्रों पर ध्यान दें॥१॥

प्र यन्ति यज्ञं विपयन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुध्रवाचः ।
न्यु भ्रियन्ते यशसो गृभादा दूरउपब्दो वृषणो नृषाचः ॥२॥

याजक, यज्ञशाला में पहुँचकर कुशा के आसन बिछाते हैं और पत्थरों से सोम कूटते हैं। सोम कूटने से पत्थरों की टकराहट की कर्कश

ध्वनि दूर से ही सुनाई पड़ती है । ऋत्विग्गण बलवर्धक सोम कूटने वाले पत्थर घर से ही लेकर आए थे॥२॥

त्वमिन्द्र स्रवितवा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।
त्वद्वावक्रे रथ्यो न धेना रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि भीषा ॥३॥

हे शूरवीर इन्द्रदेव ! वृत्र के द्वारा आक्रान्त होकर स्तब्ध हुए बहुत से जल प्रवाहों को आपने प्रवाहित किया। आपने हीं नदियों को ऐसे प्रवाहित होने दिया, जैसे रथारूढ़ वीर जा रहे हों । आपके भय से भुवन कम्पित हो गये॥३॥

भीमो विवेषायुधेभिरेषामपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान् ।
इन्द्रः पुरो जर्हृषाणो वि दूधोद्वि वज्रहस्तो महिना जघान ॥४॥

इन्द्रदेव मानवों के हितकारी एवं समस्त कार्य करने में कुशल हैं। आयुध धारण करके भयंकर प्रतीत होने वाले इन्द्रदेव हर्षित होकर वज्र धारण कर, शत्रुओं की सेना में प्रविष्ट होकर, शत्रुओं को भ-कम्पित करते हुए उनका वध करते हैं॥४॥

न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः ।
स शर्धदर्यो विषुणस्य जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः ॥५॥

हे इन्द्रदेव ! असुरगण हमारे ऊपर घात न कर सकें । बलशाली (वे असुर) हमारे वन्दन एवं अध्ययन में भी (घात) नहीं करें । हे आर्य ! आप विषम (व्यक्तियों, जीवों या प्रवृत्तियों) को अपने नियंत्रण में रखें । हिंसक स्वभाव वाले या कामी वृत्ति के लोग हमारे यज्ञ के निकट भी न आने पायें॥५॥

अभि क्रत्वेन्द्र भूरध ज्मन्न ते विव्यङ्‌हिमानं रजांसि ।
स्वेना हि वृत्रं शवसा जघन्थ न शत्रुरन्तं विविदद्युधा ते ॥६॥

हे इन्द्रदेव ! आप अपने पुरुषार्थ द्वारा भूलोक के समस्त शत्रु प्राणियों को पराभूत करते हैं। आपकी महिमा को समस्त लोक (चौदहों भुवन) नहीं जानते हैं । आप निज बल से वृत्र-शत्रु का संहार करते हैं। युद्ध में शत्रुगण आपका पार नहीं पा सकते॥६॥

देवाश्चित्ते असुर्याय पूर्वेऽनु क्षत्राय ममिरे सहांसि ।
इन्द्रो मघानि दयते विषह्येन्द्रं वाजस्य जोहुवन्त सातौ ॥७॥

हे इन्द्रदेव ! पूर्व देवों ने आपके बल एवं शत्रु मारने की शक्ति की तुलना में अपने को कमजोर ही माना था। आप शत्रुओं को जीतकर, (जीता हुआ) धन अपने भक्तों को प्रदान करते हैं। धन की इच्छा से याजक इन्द्रदेव की स्तुति करते हैं॥७॥

कीरिश्चिद्धि त्वामवसे जुहावेशानमिन्द्र सौभगस्य भूरेः ।
अवो बभूथ शतमूते अस्मे अभिक्षत्तुस्त्वावतो वरूता ॥८॥

हे शासनकर्ता इन्द्रदेव ! स्तोतागण आपकी स्तुति करते हुए अपनी सुरक्षा की कामना करते हैं। आप सैकड़ों रक्षण साधनों के द्वारा हमारे धन की सुरक्षा करें । आपसे जो स्पर्धा करते हैं, ऐसे शत्रु को आप नाश करें॥८॥

सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र ।
वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीकेऽभीतिमर्यो वनुषां शवांसि ॥९॥

हे इन्द्रदेव ! हम सब आपका यशोवर्धन करने वाले सदैव आपके सखा रूप में रहें । महिमावान् – तारक हे इन्द्रदेव ! स्तोतागण आपके द्वारा सुरक्षित रहते हुए, आक्रमणकारियों को जीत लें॥९॥

स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१०॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमें ऐसी धारण शक्ति प्रदान करें, जिससे हम आपके द्वारा दिये गये अन्न का भोग कर सकें । जो धनवान् स्वेच्छा से हवि प्रदान करते हैं, उन्हें भी सुरक्षित करें । हम स्तोताओं में स्तुति करने की शक्ति धारण करायें। अपने समस्त कल्याणकारी रक्षण साधनों से आप हम सबकी सुरक्षा करें॥१०॥

सूक्त २२

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद – विराट, ९ त्रिष्टुप

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः ।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥१॥

हे अश्वयुक्त इन्द्रदेव ! आप आनन्ददायक सोमरस का पान करें । संचालक के बाहुओं से सुनियंत्रित घोड़े के समान (यज्ञशाला में सुरक्षित रखे गये पत्थर के द्वारा (कूटकर) आपके लिए सोमरस निकाला जाता है॥१॥

यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि ।
स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥२॥

घोड़ों के स्वामी हे समृद्धिशाली इन्द्रदेव ! जिस सोमरस के उत्साह द्वारा आप वृत्रासुर (दुष्टों) का हनन करते हैं, वह श्रेष्ठ रस आपको आनन्द प्रदान करे॥२॥

बोधा सु मे मघवन्वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् ।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥३॥

हे ऐश्वर्यशाली इन्द्रदेव ! विशिष्ट याजक (वसिष्ठ) गुणगान करते हुए, जिस श्रेष्ठ वाणी से आपकी अर्चना कर रहे हैं, उसे आप भली-भाँति विचारपूर्वक स्वीकार करें । यज्ञस्थल पर इस (ज्ञानरूपी) हविष्य को ग्रहण करें॥३॥

श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेर्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम् ।
कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा ॥४॥

सोमरस पीने वाले हे इन्द्रदेव ! आप हमारे आवाहन पर ध्यान दें । अर्चना करने वाले ज्ञानियों की प्रार्थना सुनें । हमारी सेवाओं को अपने सच्चे मित्र की सेवाएँ मानकर ग्रहण करें॥४॥

न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान् ।
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ॥५॥

हे इन्द्रदेव ! आपके असाधारण बल को जानने वाले हम आपकी स्तुति को छोड़ नहीं सकते । यश को बढ़ाने वाले आपके स्तोत्रों का हम पाठ करते हैं॥५॥

भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित् ।
मारे अस्मन्मघवञ्ज्योक्कः ॥६॥

हे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ! हम मनुष्यों द्वारा आपके निमित्त सोम-यज्ञ होते रहे हैं । आपके निमित्त हवन भी सम्पादित होते हैं, अत: आप हमसे दूर कभी न रहें॥६॥

तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि ।
त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ॥७॥

हे इन्द्रदेव ! आपके लिए ये अनेक सवन हैं। ये स्तोत्र भी आपका यश बढ़ाने के लिए हैं। आप ही मनुष्यों द्वारा हवि प्रदान करने योग्य हैं॥७॥

नू चिन्नु ते मन्यमानस्य दस्मोदश्नुवन्ति महिमानमुग्र ।
न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ॥८॥

हे दर्शनीय इन्द्रदेव ! आपको ऐसी सम्माननीय महिमा का कोई पार नहीं पा सकता हैं । हे शूरवीर ! आपके पराक्रम एवं धन का पार भी कोई नहीं पा सकता है॥८॥

ये च पूर्व ऋषयो ये च नूत्ना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः ।
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥९॥

हे इन्द्रदेव ! प्राचीन एवं नवीन ऋषियों द्वारा रचे गये स्तोत्रों से स्तुत्य होकर आपने जिस प्रकार उनका कल्याण किया, वैसे ही हम स्तोताओं का भी मित्रवत् कल्याण करें । आप कृपा करके कल्याणकारी साधनों से हम सबकी सुरक्षा करें॥९॥

सूक्त २३

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ ।
आ यो विश्वानि शवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥१॥

हे इन्द्रियजित् (वसिष्ठ ऋषे ! आपकी शक्ति से सम्पूर्ण भुवनों को विस्तृत करने वाले तथा अन्न (पोषक आहार) प्राप्ति की कामना से यज्ञ में आप यश के संवर्धक उपासकों की प्रार्थना सुनने वाले इन्द्रदेव की महिमा का वर्णन करने वाले स्तोत्रों का पाठ करें॥१॥

अयामि घोष इन्द्र देवजामिरिरज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि ।
नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्ष्यस्मान् ॥२॥

उस समय शोक को रोकने वाली ओषधियाँ बढ़ती हैं, जिस समय देवों की स्तुतियाँ की जाती हैं। है इन्द्रदेव ! मनुष्यों में अपनी आयु को जानने वाला कोई नहीं है। आप हमें सारे पापों से पार ले जाएँ॥२॥

युजे रथं गवेषणं हरिभ्यामुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः ।
वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वेन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ॥३॥

गौ (किरणों अथवा इन्द्रियों) के आविष्कर्ता इन्द्रदेव के रथ में हरितवर्ण के दोनों अश्वों को (स्तोत्रों द्वारा हम वसिष्ठ) नियोजित करते हैं । स्तोत्र उन इन्द्रदेव की सेवा करते हैं, जो हमारे उपास्य हैं । ये इन्द्रदेव अपनी महिमा से द्यावा-पृथिवी को व्याप्त किए हैं । इन्द्रदेव अनुपम ढंग से वृत्र का वध करते हैं॥३॥

आपश्चित्पिप्युः स्तर्यो न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्त इन्द्र ।
याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी कृपा से अप्रसूता गौओं की पुष्टि की तरह जल प्रवाह बढ़ते जाएँ। आपके स्तोतागण यज्ञ करते रहें । अश्व वायु के समान हमारे पास (आपको लेकर) आएँ। आप, स्तोतागणों को बुद्धि-बल और अन्न प्रदान करते हैं॥४॥

ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे ।
एको देवत्रा दयसे हि मर्तानस्मिञ्छूर सवने मादयस्व ॥५॥

हे इन्द्रदेव ! देवों में एकमात्र आप ही हम पर बड़ी दया करते हैं। आप इस यज्ञ में सोमरस पीकर आनन्दित हों । शूरवीर हे देव !आप अपने उपासकों को ऐसा पुत्र प्रदान करें, जो बलशाली एवं अनेक विद्याओं में निपुण हो॥५॥

एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

वसिष्ठ लोग बलवान्, वज्रधारी इन्द्रदेव की पूजा स्तोत्रों द्वारा करते हैं । वे स्तुति द्वारा प्रसन्न होकर स्तोताओं को वीरों और गौओं सहित धन प्रदान करते हैं। वे कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा करें॥६॥

सूक्त २४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।
असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः ॥१॥

अनेक लोगों द्वारा स्तुत्य हे इन्द्रदेव ! यज्ञ वेदिका पर (निर्धारित स्थान पर) आप अपने सहयोगियों के साथ प्रतिष्ठित होने की कृपा करें । रक्षक, पोषणकर्ता तथा धनदाता आप सोमरस पान से आनन्द की अनुभूति करें॥१॥

गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हाः सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि ।
विसृष्टधेना भरते सुवृक्तिरियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा ॥२॥

हे इन्द्रदेव ! आप दोनों स्थानों में रहने वाले पूज्य हैं। सोमरस तैयार करके उसमें मधु मिलाया गया है। हम आपका ध्यानाकर्षण करते

हुए आपके निमित्त मनन करने योग्य स्तोत्रों का उच्चारण करते हैं॥२॥

आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि ।
वहन्तु त्वा हरयो मद्र्यञ्चमाङ्गूषमच्छा तवसं मदाय ॥३॥

हे इन्द्रदेव ! आप द्युलोक या भूलोक में जहाँ भी हों, वहाँ से आएँ । हमने आपके लिए आसन बिछाया है। आपके घोड़े आपको वहाँ ले जाएँ, जहाँ आप के निमित्त स्तुतियों की जा रही हैं। आप यहाँ आकर, बिछे हुए आसन पर बैठकर, सोमपान करके आनन्दित हों॥३॥

आ नो विश्वाभिरूतिभिः सजोषा ब्रह्म जुषाणो हर्यश्व याहि ।
वरीवृजत्स्थविरेभिः सुशिप्रास्मे दधद्वृषणं शुष्ममिन्द्र ॥४॥

हे हरिताश्वों वाले एवं श्रेष्ठ शिरस्त्राण वाले इन्द्रदेव ! आप समस्त रक्षण-साधनों सहित मरुद्गणों के सहयोग से शत्रुओं का वध करते हैं। हे इन्द्रदेव ! आप हमें बलवान् और सामर्थ्यवान् पुत्र प्रदान करें। आप हमारे पास आएँ॥४॥

एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरीवात्यो न वाजयन्नधायि ।
इन्द्र त्वायमर्क ईट्टे वसूनां दिवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः ॥५॥

यह रथ के अश्व जैसा बलशाली स्तोत्र उन इन्द्रदेव के निमित्त प्रस्तुत किया गया है, जो महान् वीर और विश्व के संचालक हैं। हे इन्द्रदेव ! स्तोत्र गान करने वाला आपसे दिव्य सम्पदा की कामना करता हैं । जो स्वर्ग में भी यशस्वी हों, आप हमें ऐसा धन और पुत्र प्रदान करें॥५॥

एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम ।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमें कृपा करके श्रेष्ठ धन प्रदान करें । हम आपके द्वारा प्रेरित सुमति को प्राप्त करें। आप, हम हव्ययुक्तों (याजकों) को वीर पुत्र सहित अन्न-धन प्रदान करें। आप हमारा पालन तथा रक्षण करें॥६॥

सूक्त २५

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

आ ते मह इन्द्रोत्युग्र समन्यवो यत्समरन्त सेनाः ।
पताति दिद्युन्नर्यस्य बाह्वोर्मा ते मनो विष्वद्र्यग्वि चारीत् ॥१॥

जिस समय उत्साहित हुई सेनाएँ संग्राम करती हैं, उस समय हे मनुष्यों के हितैषी, हे वज्रधारी, पराक्रमी वीर इन्द्रदेव! आपके बाहुओं में रहने वाला वज्र शत्रुओं पर गिरकर हमारी रक्षा करे । आपका सर्वतोगामी मन अविचलित रहे और आप हमारे लिए हितकारी कार्य करें॥१॥

नि दुर्ग इन्द्र श्नथिह्यमित्राँ अभि ये नो मर्तासो अमन्ति ।
आरे तं शंसं कृणुहि निनित्सोरा नो भर सम्भरणं वसूनाम् ॥२॥

हे इन्द्रदेव ! जो मनुष्य हमें जीतने की इच्छा से संग्राम भूमि में हमारे समक्ष डटे हैं, आप उन शत्रुओं का संहार करें । निंदकों को हम से दूर ले जाएँ। हमें पर्याप्त धन प्रदान करें॥२॥

शतं ते शिप्रिन्नूतयः सुदासे सहस्रं शंसा उत रातिरस्तु ।
जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्यास्मे द्युम्नमधि रत्नं च धेहि ॥३॥

हम आपके उत्तम भक्त हैं। आप सैकड़ों रक्षण-साधनों से हमारी रक्षा करें । आपके द्वारा प्रदत्त धन हमारा हो । जो हिंसक वृत्ति वाले हैं, उनके अस्त्र – शस्त्रों को आप नष्ट कर दें । आप हमें यश और दीप्ति वाले रत्न दें॥३॥

त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे अस्मि त्वावतोऽवितुः शूर रातौ ।
विश्वेदहानि तविषीव उग्रँ ओकः कृणुष्व हरिवो न मर्धीः ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! हम आपके निमित्त किये जाने वाले शुभ कर्मों में नियुक्त रहते हैं। आपके अनुकूल रहकर आपका संरक्षण हमें प्राप्त हो । हे बलवान् एवं ओजस्वी इन्द्रदेव ! आप हमारे लिए सब दिनों के लिए उपयुक्त आवास बनाएँ, हम पर क्रोध न करें॥४॥

कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः ।
सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम् ॥५॥

हरित वर्ण अश्वों वाले इन्द्रदेव के निमित्त हम सब स्तोता सुखकर स्तोत्रों का गान करते हैं। इन्द्रदेव से हमें देव प्रेरित बल की कामना करते हैं। हे शूरवीर इन्द्रदेव! सारे दुःखों से पार होकर हम ऐसा बल प्राप्त करें, जिस बल से हम शत्रुओं का सहज ही विनाश कर सकें॥५॥

एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हे इन्द्रदेव! हमें संरक्षणीय धन से परिपूर्ण करें। आपके द्वारा प्रेरित श्रेष्ठ सुमति हम प्राप्त करें। हम हविदाताओं को आप वीर पुत्र सहित अन्न प्रदान करें। आप कल्याणकारी साधनों के द्वारा हमें सुरक्षा प्रदान करें॥६॥

सूक्त २६

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

न सोम इन्द्रमसुतो ममाद नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः ।
तस्मा उक्थं जनये यज्जुजोषन्नृवन्नवीयः शृणवद्यथा नः ॥१॥

जो सोमरस बिना स्तोत्र पाठ के निकाला गया हो और जो इन्द्रदेव के लिए न निकाला गया हो, ऐसा सोम आनन्ददायक नहीं होता। हम ऐसे श्रेष्ठ नवीन स्तोत्र की रचना करते हैं, जिसे मनुष्यों के मध्य एवं इन्द्रदेव के द्वारा सुनना स्वीकार किया जायेगा॥१॥

उक्थउक्थे सोम इन्द्रं ममाद नीथेनीथे मघवानं सुतासः ।
यदीं सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अवसे हवन्ते ॥२॥

स्तोत्र पाठ के साथ तैयार किया गया सोमरस इन्द्रदेव को हर्षित करता है । सोमरस अर्पित करते समय धनवान् इन्द्रदेव की स्तुति करने से वे प्रसन्न होते हैं। जिस प्रकार पुत्रगण एक साथ मिलकर

पिता को बुलाते हैं, उसी प्रकार हम सब अपने कार्यों में प्रवीण लोग इन्द्रदेव को अपनी सुरक्षा के लिए बुलाते हैं॥२॥

चकार ता कृणवन्नूनमन्या यानि ब्रुवन्ति वेधसः सुतेषु ।
जनीरिव पतिरेकः समानो नि मामृजे पुर इन्द्रः सु सर्वाः ॥३॥

सोमरस तैयार करते हुए स्तोत्रों में जिन (कार्यो) का वर्णन है, वे इन्द्रदेव ने पूर्वकाल में किये थे । इस समय भी वे श्रेष्ठ कर्म करते हैं । इन्द्रदेव शत्रुओं के नगरों को अपने वश में वैसे ही) रखते हैं, जैसे पति, पत्नी को॥३॥

एवा तमाहुरुत शृण्व इन्द्र एको विभक्ता तरणिर्मघानाम् ।
मिथस्तुर ऊतयो यस्य पूर्वीरस्मे भद्राणि सश्चत प्रियाणि ॥४॥

इन्द्रदेव के पास परस्पर सहयोगी अनेक शक्तियाँ हैं। उन्हीं के द्वारा वे हम सबकी रक्षा करते हैं । स्तोतागण उन्हीं का वर्णन करके सुनाते हैं । ऐसे इन्द्रदेव धन बाँटने वाले एवं तारक हैं । वे देव ही हमारा कल्याण करें॥४॥

एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये नृन्कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति ।
सहस्रिण उप नो माहि वाजान्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

वसिष्ठ ऋषि प्रजाजनों की कामनाओं की पूर्ति एवं सुरक्षा के निमित्त सोम तैयार करते हैं । हे इन्द्रदेव ! आप हमें अनेकानेक प्रकार के कल्याणकारी भोग्य पदार्थ प्रदान करते हुए हमारा कल्याण करें॥५॥

सूक्त २७

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
शूरो नृषाता शवसश्चकान आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥१॥

सेनानायकगण भी अपनी सहायता के लिए इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं। है इन्द्रदेव ! आप पुरुषों के धन-दाता एवं बलवर्द्धक हैं। आप हमें गौओं से लाभ प्राप्त करने के लिए गोष्ठ में पहुँचाने की कृपा करें॥१॥

य इन्द्र शुष्मो मघवन्ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः ।
त्वं हि दृव्ळ्हा मघवन्विचेता अपा वृधि परिवृतं न राधः ॥२॥

हे पुरुहूत इन्द्रदेव ! आप स्तोताओं को अपना बल प्रदान करें। हे मघवन् इन्द्रदेव ! आप सुदृढ़ बन्धनों को तोड़ने वाले हैं । अत: आप हमारे लिए (प्रज्ञा रूपी) गुप्त धन प्रकट कर दें॥२॥

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति ।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक् ॥३॥

इन्द्रदेव समस्त जीवधारियों के स्वामी तथा सभी पदार्थपरक वसुओं (धन) के राजा हैं, इसलिए दानवृत्ति वालों को वे जीवनोपयोगी वस्तुएँ प्रदान करते हैं। वे श्रेष्ठ (लौकिक एवं दैवी) सम्पदा हमारी ओर भेजें॥३॥

नू चिन्न इन्द्रो मघवा सहूती दानो वाजं नि यमते न ऊती ।
अनूना यस्य दक्षिणा पीपाय वामं नृभ्यो अभिवीता सखिभ्यः ॥४॥

हम अपनी रक्षा और अन्न प्राप्ति के लिए धनवान् – दाता इन्द्रदेव को बलवान् मरुद्गणों के साथ बुलाते हैं। वे अपने सखाओं (मरुतों या अन्य देवों) के लिए जो सर्वव्यापी, पूर्ण दान देते हैं, वहीं दान श्रेष्ठ मनुष्यों के लिए प्रकट करते हैं॥४॥

नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघाय ।
गोमदश्वावद्रथवद्व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

हे इन्द्रदेव ! आप गौ, अश्व, रथ आदि धन के स्वामी हैं । पूजनीय स्तोत्रों द्वारा हम आपका आवाहन करते हैं । आप हमें ऐश्वर्यवान् बनाने के लिए पर्याप्त धन प्रदान करें । सदा हमारी सुरक्षा एवं पालन करते हुए हमारा कल्याण करें॥५॥

सूक्त २८

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि विद्वानर्वाञ्चस्ते हरयः सन्तु युक्ताः ।
विश्वे चिद्धि त्वा विहवन्त मर्ता अस्माकमिच्छृणुहि विश्वमिन्व ॥१॥

हे इन्द्रदेव !आप सर्वज्ञ हैं, आप हमारी स्तुति सुनकर अश्वारूढ़ होकर हमारे पास आएँ । हे समस्त विश्व को सन्तोष देने वाले इन्द्रदेव !आपको अलग-अलग कई लोग बुलाते हैं, फिर भी कृपा करके आप हमारी प्रार्थना सुने॥१॥

हवं त इन्द्र महिमा व्यानड्ब्रह्म यत्पासि शवसिन्नृषीणाम् ।
आ यद्वज्रं दधिषे हस्त उग्र घोरः सन्क्रत्वा जनिष्ठा अषाळ्हः ॥२॥

हे बलवान् इन्द्रदेव ! आपकी महिमा से ऋषियों के स्तोत्र सुरक्षित रहते हैं। हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! आप उद्भट शूरवीर एवं सदैव अजेय हैं॥२॥

तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान्त्सं यन्नृन्न रोदसी निनेथ ।
महे क्षत्राय शवसे हि जज्ञेऽतूतुजिं चित्तूतुजिरशिश्नत् ॥३॥

हे इन्द्रदेव !जो स्तोता, आपके द्वारा प्रणीत पद्धति के अनुसार स्तुति करता है, वह द्युलोक एवं भूलोक में आनन्दसहित प्रतिष्ठित होता है । आप क्षात्र बल एवं धन बल द्वारा श्रेष्ठ कार्य करने के लिए ही उत्पन्न हुए हैं॥३॥

एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य दुर्मित्रासो हि क्षितयः पवन्ते ।
प्रति यच्चष्टे अनृतमनेना अव द्विता वरुणो मायी नः सात् ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! आप हम पर आक्रमण करने वाले दुष्टजनों का धन सदैव के लिए हमें प्रदान करें । निष्पाप वरुणदेव हमारे अन्दर के असत्य को खोज कर दोनों प्रकार से (प्रेरणा देकर अथवा बलपूर्वक) दूर करें॥४॥

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

जो इन्द्रदेव हमें महान् धन-ऐश्वर्य प्रदान करते हैं एवं स्तोताओं की रक्षा करते हैं, उन्हीं इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं। वे धनवान् इन्द्रदेव सदैव हमारा पालन करें-हमारा कल्याण करें॥५॥

सूक्त २९

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्व आ तु प्र याहि हरिवस्तदोकाः ।
पिबा त्वस्य सुषुतस्य चारोर्ददो मघानि मघवन्नियानः ॥१॥

हे हरित वर्ण अश्व वाले इन्द्रदेव ! आप शीघ्र आएँ । हम आपके लिए सोमरस निकालते हैं, आप आकर उसका पान करें एवं याचकों को धन प्रदान करें॥१॥

ब्रह्मन्वीर ब्रह्मकृतिं जुषाणोऽर्वाचीनो हरिभिर्याहि तूयम् ।
अस्मिन्नू षु सवने मादयस्वोप ब्रह्माणि शृणव इमा नः ॥२॥

हे ज्ञानी वीर इन्द्रदेव ! आप हमारे उत्तम स्तोत्रों को सुनकर तथा अश्वारूढ़ होकर हमारी ओर शीघ्रता से आएँ । इन स्तोत्रों का श्रवण कर आप इस सोमयज्ञ में प्रसन्न हों॥२॥

का ते अस्त्यरंकृतिः सूक्तैः कदा नूनं ते मघवन्दाशेम ।
विश्वा मतीरा ततने त्वायाधा म इन्द्र शृणवो हवेमा ॥३॥

हे धनपति इन्द्रदेव ! हम वास्तव में आपको कैसे प्रसन्न करें ? हम आपके लिए ही स्तोत्र रचते हैं, आप हमारे स्तोत्रों को सुनें । हमारे मन में एक ही अभिलाषा है कि ये सूक्त कब आपको अलंकृत करें ?॥३॥

उतो घा ते पुरुष्या इदासन्येषां पूर्वेषामशृणोर्ऋषीणाम् ।
अधाहं त्वा मघवञ्जोहवीमि त्वं न इन्द्रासि प्रमतिः पितेव ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! प्राचीन काल के मानवों के हितैषी, ऋषियों द्वारा रचित स्तोत्रों को आपने सुना है । हम भी आपकी बार-बार स्तुति करते हैं। आप उत्तम बुद्धिवाले पिता के समान हैं॥४॥

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

जो इन्द्रदेव हमें श्रेष्ठ धन-ऐश्वर्य प्रदान करते हैं एवं स्तोताओं की रचना – स्तोत्रों की रक्षा करते हैं। ऐसे इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं । वे धनवान् इन्द्रदेव सदैव हमारा पालन एवं कल्याण करें॥५॥

सूक्त ३०

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद - त्रिष्टुप

आ नो देव शवसा याहि शुष्मिन्भवा वृध इन्द्र रायो अस्य ।
महे नृम्णाय नृपते सुवज्र महि क्षत्राय पौंस्याय शूर ॥१॥

हे बलशाली – आभावान् इन्द्रदेव ! आप हमारे पास आएँ एवं कृपा करके हमारे धन को बढ़ाएँ । हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! आप महान् क्षात्र बल सम्पन्न अपने पुरुषार्थ को बढ़ाएँ ॥१॥

हवन्त उ त्वा हव्यं विवाचि तनूषु शूराः सूर्यस्य सातौ ।
त्वं विश्वेषु सेन्यो जनेषु त्वं वृत्राणि रन्धया सुहन्तु ॥२॥

हे इन्द्रदेव ! आप आवाहनीय हैं। आपको विवाद के समय लोग बुलाते हैं। सूर्यदेव की प्राप्ति हेतु लोग आपका आवाहन करते हैं। समस्त मानवी सेना के लिए आप अनुकरणीय हैं । आप सुहन्त (सुगमता से संहार करने वाला) नामक वज्र के द्वारा शत्रुओं को पराभूत करके हमारे अधीन करें॥२॥

अहा यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान्दधो यत्केतुमुपमं समत्सु ।
न्यग्निः सीददसुरो न होता हुवानो अत्र सुभगाय देवान् ॥३॥

हे इन्द्रदेव ! हमारे दिन अच्छे ढंग से व्यतीत होते चलें और युद्ध में भी हमारा (विवेक) ज्ञान स्थिर बना रहें, इस उद्देश्य से तथा शोभन धन की प्राप्ति के लिए पराक्रमी होता (अग्निदेव) देवो का आवाहन करते हुए इस यज्ञ में प्रतिष्ठित हों॥३॥

वयं ते त इन्द्र ये च देव स्तवन्त शूर ददतो मघानि ।
यच्छा सूरिभ्य उपमं वरूथं स्वाभुवो जरणामश्नवन्त ॥४॥

हे शूरवीर इन्द्रदेव ! हम सब आपके ही हैं । हम आपके निमित्त हवि प्रदान करते एवं स्तुति करते हैं । विद्वानों को आप श्रेष्ठ निवास प्रदान करें । उत्तम ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर वे वृद्धावस्था में सुख से रहें॥४॥

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

जो इन्द्रदेव हमें सिद्धिदायक महान् ऐश्वर्य प्रदान करते हैं एवं स्तुतिकर्ताओं द्वारा बनाये स्तोत्रों की सुरक्षा करते हैं; ऐसे इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं। वे धनपति इन्द्रदेव हमारा सदैव पालन करते हुए कल्याण करें॥५॥

सूक्त ३१

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, । छंद – गायत्री, १०-१२ विराट

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत ।
सखायः सोमपाव्ने ॥१॥

हे साधको ! अश्वों के स्वामी, सोमपायी इन्द्रदेव को आनन्द प्रदान करने वाले स्तोत्रों का गान करो ॥१॥

शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः ।
चकृमा सत्यराधसे ॥२॥

हे ऋत्विजो ! उत्तम दानदाता, न्यायोपार्जित सम्पत्ति वाले इन्द्रदेव की प्रार्थना करो। हम भी उत्तम विधि से उनकी अभ्यर्थना करते हैं॥२॥

त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो ।
त्वं हिरण्ययुर्वसो ॥३॥

हे शतकर्मा (सौ अश्वमेध यज्ञ करने वाले) इन्द्रदेव ! आप हमें अन्न, गौ तथा स्वर्ण प्रदान करें॥३॥

वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन् ।
विद्धी त्वस्य नो वसो ॥४॥

हे श्रोन वीर इन्द्रदेव ! हम आपकी कामना करते हुए बारम्बार नमन करते हैं। सबको आश्रय देने वाले आप हमारी प्रार्थनाओं को सुनें और इस पर ध्यान देने की कृपा करें॥४॥

मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीररावणे ।
त्वे अपि क्रतुर्मम ॥५॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारे स्वामी हैं । आपसे हम लोग प्रार्थना करते हैं कि हमें कटुभाषी, निंदक और कंजूस के वश में न रहना पड़े॥५॥

त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् ।
त्वया प्रति ब्रुवे युजा ॥६॥

हे इन्द्रदेव ! युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं के सम्मुख पहुँचकर उनका नाश करने के लिए आप विश्व-विख्यात हैं। आप कवच के समान रक्षा करने वाले हैं। आपकी सहायता पाकर हम शत्रुओं का वध करने में समर्थ होते हैं॥६॥

महाँ उतासि यस्य तेऽनु स्वधावरी सहः ।
मम्नाते इन्द्र रोदसी ॥७॥

अन्न-सम्पन्न द्यावा-पृथिवी भी जिन के महान् बल को नमन करती है, वे महान् इन्द्रदेव आप ही हैं॥७॥

तं त्वा मरुत्वती परि भुवद्वाणी सयावरी ।
नक्षमाणा सह द्युभिः ॥८॥

हे इन्द्रदेव ! साथ जाने वाली, तेजस् सहित विस्तीर्ण होने वाली, वीरों द्वारा की गई स्तुतियाँ आप तक पहुँचे॥८॥

ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो भुवन्दस्ममुप द्यवि ।
सं ते नमन्त कृष्टयः ॥९॥

हे इन्द्रदेव ! आप स्वर्ग के समीप स्थित हैं और दर्शनीय हैं । आपके लिए सोम प्रस्तुत है। सभी लोग आपको नमन करते हैं॥९॥

प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् ।
विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः ॥१०॥

हे मनुष्यो ! महान् कार्य सम्पन्न करने वाले, प्रख्यात इन्द्रदेव के लिए, सोम प्रदान करते हुए श्रेष्ठ स्तोत्रों से उनकी स्तुति करो । हे इन्द्रदेव !

आप भी हविदाता प्रजाओं की कामना पूर्ण करते हुए उनका कल्याण करें॥१०॥

उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः ।
तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ॥११॥

अत्यन्त विशाल इन महान् इन्द्रदेव को अत्विग्गण उत्तम स्तुतियाँ और हविष्यान्न अर्पित कर' हैं। धीर पुरुष उन इन्द्रदेव के व्रतों को डिगाते नहीं हैं॥११॥

इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै ।
हर्यश्वाय बर्हया समापीन् ॥१२॥

सबके राजा रूप इन्द्रदेव का मन्यु अतुलनीय हैं । ऐसे इन्द्रदेव के प्रति की गई स्तुतियाँ उनके शत्रु के पराभव का कारण बनती हैं । हे स्तोताओ ! आप अपने स्वजनों को इन्द्रदेव की स्तुति की प्रेरणा दें॥१२॥

सूक्त ३२

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:, शक्तिर्वासिष्ठ
देवता – इन्द्र, । छंद – प्रगाथ, ३ द्विपदा विराट

मो षु त्वा वाघतश्चनारे अस्मन्नि रीरमन् ।
आरात्ताच्चित्सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥१॥

हे इन्द्रदेव ! यजमान आपको हमसे दूर न कर सकें । आप हमारे यज्ञ में शीघ्रता से आएँ और हमारे पास रहकर हमारी स्तुतियों को ध्यान से सुनें॥१॥

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते ।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः ॥२॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी तृप्ति के लिए सोमरस तैयार करके, सभी ऋत्विज् मधुमक्खियों की भाँति एकत्रित होकर बैठते हैं । ऐश्वर्य की कामना से वे रथारूढ़ होने की तरह, आपको स्तुतियाँ समर्पित करते हैं॥२॥

रायस्कामो वज्रहस्तं सुदक्षिणं पुत्रो न पितरं हुवे ॥३॥

जिस प्रकार पिता को पुत्र बुलाता है, वैसे ही धन प्राप्ति की इच्छा वाले हम लोग श्रेष्ठ दानदाता इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं॥३॥

इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥४॥

हे वज्रधारक, तेजस्वी इन्द्रदेव ! दही मिले हुए, आनन्ददायक, विशेषरूप से तैयार किए गए इस सोमरस का पान करने के लिए आप यज्ञ स्थल पर पधारें॥४॥

श्रवच्छ्रुत्कर्ण ईयते वसूनां नू चिन्नो मर्धिषद्गिरः ।
सद्यश्चिद्यः सहस्राणि शता ददन्नकिर्दित्सन्तमा मिनत् ॥५॥

जो इन्द्रदेव प्रार्थना सुनने के लिए समर्थ हैं, उनसे हम धन माँगते हैं । वे हमारी वाणी को अनसुना न करें । सैकड़ों – हजारों प्रकार के दान तत्काल देने को तत्पर इन्द्रदेव को कोई धन देने से रोक नहीं सकता॥५॥

स वीरो अप्रतिष्कुत इन्द्रेण शूशुवे नृभिः ।

यस्ते गभीरा सवनानि वृत्रहन्त्सुनोत्या च धावति ॥६॥

हे वृत्र को मारने वाले इन्द्रदेव ! जो आपके लिए प्रचुर मात्रा में सोम तैयार करते हैं, उस वीर के प्रति आप अनुकूल होते हैं, जिससे वे मानवों में सम्मान पाते हैं॥६॥

भवा वरूथं मघवन्मघोनां यत्समजासि शर्धतः ।
वि त्वाहतस्य वेदनं भजेमह्या दूणाशो भरा गयम् ॥७॥

हे धनवान् इन्द्रदेव ! आप कवच के समान हविदाताओं की सुरक्षा करें एवं शत्रुओं का विनाश करके प्राप्त धन हम सबको बाँट दें । आप हमें अविनाशी धन प्रदान करें॥७॥

सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित्पृणन्नित्पृणते मयः ॥८॥

हे याजको ! वज्रधारी सोमपायी इन्द्रदेव के लिए सोमाभिषव करो । इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए पुरोडाश पकाओ तथा यज्ञ करो। यजमान को सुखी बनाने के लिए इन्द्रदेव स्वयं हविष्यान्न ग्रहण करते हैं॥८॥

मा स्रेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आतुजे ।
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे ॥९॥

सोमयाग को दक्षतापूर्वक पूरा करें, पीछे न हटें । शत्रुनाशक इन्द्रदेव के निमित्त धन प्राप्ति की इच्छा से शुभ कर्म (यज्ञादि) करें । शीघ्रता से कार्य करने वाला अवश्य ही विजय प्राप्त करता है एवं पुष्ट होकर उत्तम घर में निवास करता है । कुत्सित कर्म करने में देवगण सहायक नहीं होते॥९॥

नकिः सुदासो रथं पर्यास न रीरमत् ।
इन्द्रो यस्याविता यस्य मरुतो गमत्स गोमति व्रजे ॥१०॥

सुदास (उत्तम हवि दाता) के रक्षक इन्द्रदेव और मरुद्गण हैं, अत: उनके रथ को पहुँचाने अथवा उनको रोकने में कोई समर्थ नहीं हो सकता है। उन्हें गौओं के गोष्त प्राप्त हों (प्रचुर मात्रा में गोधन की । प्राप्ति हो । ॥१०॥

गमद्वाजं वाजयन्निन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः ।
अस्माकं बोध्यविता रथानामस्माकं शूर नृणाम् ॥११॥

हे इन्द्रदेव ! आप जिसकी रक्षा करते हैं, वह आपका यशोगान करते हुए अन्न आदि प्राप्त करता है । हे शूरवीर ! आप हमारे पुत्र-पौत्रादि एवं रथ की रक्षा करें॥११॥

उदिन्न्वस्य रिच्यतेंऽशो धनं न जिग्युषः ।
य इन्द्रो हरिवान्न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि ॥१२॥

जो यजमान हरि (अश्व) युक्त इन्द्रदेव के लिए सोमरस तैयार कर अर्पित करते हैं, वे इन्द्रदेव की कृपा से प्राप्त बल द्वारा शत्रु को जीतते हैं॥१२॥

मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा ।
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् ॥१३॥

(हे स्तोतागण !) यजनीय देवताओं में इन्द्रदेव के लिए बड़े-सुगढ़ एवं सुन्दर-शोभनीय स्तोत्र अर्पित करो। जिसके स्तोत्रों को इन्द्रदेव मन से स्वीकार कर लेते हैं, उसे कोई, किसी प्रकार का बन्धन, कष्ट नहीं दे सकता॥१३॥

कस्तमिन्द्र त्वावसुमा मर्त्यो दधर्षति ।
श्रद्धा इत्ते मघवन्पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥१४॥

हे सबके आश्रयदाता इन्द्रदेव ! भला आपको कौन अपमानित कर सकता है ? हे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ! आपके प्रति श्रद्धा रखने वाले जन बलशाली होते हैं। वे दुःखों से पार होने के समय भी अनुदान प्राप्त करते हैं॥१४॥

मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु ।
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता ॥१५॥

हे वैभवशाली इन्द्रदेव ! हविष्यान्न समर्पित करने वाले याजकों को दुष्ट-दुराचारियों से संघर्ष की शक्ति प्रदान करें । हे अश्वपति ! आपकी प्रेरणा से ज्ञानी जन पापों से छुटकारा पायें॥१५॥

तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि नकिष्ट्वा गोषु वृण्वते ॥१६॥

हे इन्द्रदेव ! निम्नकोटि, मध्यम कोटि तथा उत्तम कोटि के धन के आप एक मात्र स्वामी हैं । आप जब गवादि धन का दान करते हैं, तो आपको कोई भी नहीं रोक सकता॥१६॥

त्वं विश्वस्य धनदा असि श्रुतो य ईं भवन्त्याजयः ।
तवायं विश्वः पुरुहूत पार्थिवोऽवस्युर्नाम भिक्षते ॥१७॥

हे इन्द्रदेव ! आप समस्त धन के दान करने वाले हैं। सभी युद्धों में भी आपकी प्रसिद्ध है। अनेकों द्वारा प्रशंसित हे वीर इन्द्रदेव ! भूलोक के सभी मनुष्य आपसे रक्षा और अन्न की याचना करते हैं॥१७॥

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय ॥१८॥

हे सम्पत्तिशाली इन्द्रदेव ! हम आपके समान सम्पदाओं के अधिपति होने की कामना करते हैं। स्तोताओं को धन प्रदान करने की हमारी अभिलाषा हैं, परन्तु पापियों को नहीं॥१८॥

शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।
नहि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन ॥१९॥

कहीं भी रहकर हम आपके यजन के लिए धन निकालते हैं । हे इन्द्रदेव ! मेरा तो आपके सिवाय और कोई भाई नहीं, कोई पिता तुल्य रक्षक भी नहीं हैं॥१९॥

तरणिरित्सिषासति वाजं पुरंध्या युजा ।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्र्वम् ॥२०॥

तत्परता से कार्य करने वाला ही प्रगतिशील होकर अन्न एवं बल प्राप्त करता हैं । तष्टा (बढ़ई) द्वारा चक्र-नेमि को झुकाने (गोलाई देने) की तरह हम अपने स्तोत्रों से इन्द्रदेव को (अपनी ओर) झुकायेंगे॥२०॥

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥२१॥

मनुष्य दुष्ट वाणी से धन नहीं पा सकता। हिंसकों के पास भी ऐश्वर्य नहीं जाता । हे मववन्! मेरे जैसे (साधक) को पार होने के लिए दिये जाने योग्य धन को आपसे कोई उत्तम कर्म करने वाला ही पा सकता है॥२१॥

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥२२॥

हे शूरवीर इन्द्रदेव! आप इस स्थावर एवं जंगम जगत् के स्वामी हैं । दिव्य दृष्टि-सम्पन्न आपके लिए हम उसी तरह लालायित रहते हैं, जैसे न दुहीं हुई गौएँ अपने बछड़े के पास जाने के लिए लालायित रहती हैं॥२२॥

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥२३॥

हे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव !आपके समान इस पृथ्वीलोक या दिव्यलोक में न कोई है, न कभी हुआ है और न कभी होगा । हे देव !अश्व, गौ तथा धन-धान्य की कामना वाले हम, (स्तोतागण) आपकी प्रार्थना करते हैं॥२३॥

अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।
पुरूवसुर्हि मघवन्त्सनादसि भरेभरे च हव्यः ॥२४॥

हे वैभव-सम्पन्न इन्द्रदेव ! आप अभीष्ट ऐश्वर्य को हम जैसे अकिंचन को प्रदान करने की कृपा करें । आप संग्रामों (जीवन-संग्राम में सहायता करने के लिए आवाहन करने योग्य हैं॥२४॥

परा णुदस्व मघवन्नमित्रान्त्सुवेदा नो वसू कृधि ।
अस्माकं बोध्यविता महाधने भवा वृधः सखीनाम् ॥२५॥

हे मघवन् (इन्द्रदेव) ! आप शत्रुओं को पराङ्मुख करते हुए हमसे दूर करें एवं हमें पर्याप्त धन दें । हे देव ! आप ही हमारे शरण-स्थल हैं । आप हमारी रक्षा करते हुए, हमें बढ़ने वाला धन प्रदान करें॥२५॥

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।

शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥२६॥

है इन्द्रदेव ! हमें उत्तम कर्मों (यज्ञों) का फल प्राप्त हो । जैसे पिता, पुत्रों को धन आदि प्रदान करके पोषण करता है, वैसे ही आप हमें पोषित करें । अनेकों द्वारा सहायता के लिए पुकारे गये हे इन्द्रदेव ! यज्ञ में आप हमें दिव्य तेज प्रदान करें॥२६॥

मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो माशिवासो अव क्रमुः ।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥२७॥

हे इन्द्रदेव ! अज्ञात पापी, दुष्ट, कुटिल, अमंगलकारी लोग हम पर आक्रमण न करें । हे श्रेष्ठ वीर ! आपके संरक्षण में हम विघ्नों-अवरोधों के प्रवाहों से पार हों॥२७॥

सूक्त ३३

ऋषि: १-९ मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:, १०-१४ वसिष्ठपुत्रा:
देवता – १-९ वसिष्ठ पुत्रा;, इन्द्रो, १०-१४ वसिष्ठ । छंद - त्रिष्टुप

श्वित्यञ्चो मा दक्षिणतस्कपर्दा धियंजिन्वासो अभि हि प्रमन्दुः ।
उत्तिष्ठन्वोचे परि बर्हिषो नॄन्न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः ॥१॥

(इन्द्रदेव का कथन) गौरवर्ण वाले, सिर के दक्षिण भाग में शिखा (जटा) रखने वाले, बुद्धिसंगत कार्य करने वाले वसिष्ठ गोत्रीय में अति प्रसन्न करते हैं । बर्हि (यज्ञ या कुश-आसन) से ऊपर उठते हुए हम यहीं कहते हैं। कि ऐसे वसिष्ठ वंशज (शिष्य या पुत्रगण) हमसे दूर न जाएँ ॥१॥

दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम् ।
पाशद्युम्नस्य वायतस्य सोमात्सुतादिन्द्रोऽवृणीता वसिष्ठान् ॥२॥

वसिष्ठ वंशीय साधकगण उग्र इन्द्रदेव को 'पाशद्युम्न' द्वारा तैयार सोम का अतिक्रमण कराकर, इस (अपने द्वारा तैयार) सोम के लिए

दूर से ले आये । इन्द्रदेव ने भी 'वयत' (वेगवान्) के पुत्र पाशद्युम्न को छोड़कर वसिष्ठ वंशियों का वरण कर लिया॥२॥

एवेन्नु कं सिन्धुमेभिस्ततारेवेन्नु कं भेदमेभिर्जघान ।
एवेन्नु कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः ॥३॥

इसी प्रकार वसिष्ठ पुत्रों ने सहजता से सिन्धु (नदी, समुद्र या बादलों) को पार किया एवं इसी प्रकार भेद का नाश किया तथा प्रसिद्ध "दाशराज युद्ध में आप (वसिष्ठ पुत्रो) के ब्रह्मबल से इन्द्रदेव ने सुदास को रक्षा को॥३॥

जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः पितृणामक्षमव्ययं न किला रिषाथ ।
यच्छक्करीषु बृहता रवेणेन्द्रे शुष्ममदधाता वसिष्ठाः ॥४॥

हे मनुष्यो ! अपने लक्ष्य के प्रति हम सक्रिय हैं । आप सब बलवान् बने तथा 'शक्करी' ऋचाओं और 'बृहत् (श्रेष्ठ) स्तुति-गान के द्वारा इन्द्रदेव का भी बलवर्धन करें । आपके स्तोत्रों से पितरगण भी तृप्त होते हैं॥४॥

उद्द्यामिवेत्तृष्णजो नाथितासोऽदीधयुर्दाशराज्ञे वृतासः ।
वसिष्ठस्य स्तुवत इन्द्रो अश्रोदुरुं तृत्सुभ्यो अकृणोदु लोकम् ॥५॥

'तृष्णज' (तृष्ण वंशीय राजाओं अथवा कामनायुक्तों) से घिरे वासियों ने दाशराज युद्ध में इन्द्र को तेजस्वी सूर्य की तरह धारण किया (उन्नत किया) । इन्द्रदेव ने उनके स्तोत्रों को सुनकर 'तृत्सुओं' (राजाओं अथवा वसष्ट समर्थित श्रेष्ठ इच्छा करने वाले साधको) को विस्तृत लोक (स्थान या क्षेत्र) प्रदान किया॥५॥

दण्डा इवेद्गोअजनास आसन्परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः ।
अभवच्च पुरएता वसिष्ठ आदित्तृत्सूनां विशो अप्रथन्त ॥६॥

गो प्रेरक टण्डा (अथवा इन्द्रियों को सही दिशा देने में समर्थ संकल्पों) की तरह भरत (भरण-पोषण में समर्थ संकल्प) कम और छोटे-छोटे थे; किन्तु जब वसाळगण (ब्रह्मबल सम्पन्न ऋषि) उनके पुरोहित (प्रगति-प्रेरक) हुए, तो उनकी संख्या-क्षमता बढ़ने लगी॥६॥

त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेतस्तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः ।
त्रयो घर्मास उषसं सचन्ते सर्वाँ इत्ताँ अनु विदुर्वसिष्ठाः ॥७॥

भुवनों (उत्पन्न हुए लोकों) में तीन (सूर्य या अग्नि, वायु एवं जल) रेतस् (उत्पादक तेज़) भरने वाले हैं। ज्योति की ओर बढ़ने वाली तीन (भावयुक्त, विचारयुक्त एवं कर्मयुक्त) श्रेष्ठ प्रजाएँ है। तीनों ही उष्णतायुक्त (जीवन या उत्साहयुक्त प्रजाएँ) उषा (प्रकाश के

प्रारम्भिक प्रवाहों) का सेवन करने वाली हैं । वसिष्ठ वंशज (ब्रह्मबल-सम्पन्न पुरोहित) यह सब (तथ्य या रहस्य) भली-भाँति समझते हैं॥७॥

सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा गभीरः ।
वातस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः ॥८॥

हे वसिष्ठ पुत्रो ! आपकी महिमा सूर्य की ज्योति के समान प्रकाशित है और समुद्र के समान गम्भीर हैं । वायु जैसे तीव्रगामी आपके स्तोत्र अद्वितीय हैं॥८॥

त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्शमभि सं चरन्ति ।
यमेन ततं परिधिं वयन्तोऽप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः ॥९॥

वे वसिष्टगण हृदयस्थ गूढ़ ज्ञान को प्रकट करते हुए सहस्रों शाखाओं से युक्त (जगत् में) सम्यक् रूप से विचरण करते हैं। वे यम (नियामक सत्ता) द्वारा फैलाये गये ताने-बाने को बुनते हुए (मातृरूपा) अप्सराओं के समीप पहुँचते हैं॥९॥

विद्युतो ज्योतिः परि संजिहानं मित्रावरुणा यदपश्यतां त्वा ।
तत्ते जन्मोतैकं वसिष्ठागस्त्यो यत्त्वा विश आजभार ॥१०॥

हे वसिष्ठ ! विद्युत् ज्योति से पृथक् होते हुए, जब आपको मित्रावरुण ने देखा, जब अगस्त्य आपको प्रजाओं (प्रकृति-प्रवाहों) से बाहर लाये, तब आपका एक (प्रथम) जन्म हुआ था॥१०॥

उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन्मनसोऽधि जातः ।
द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवाः पुष्करे त्वाददन्त ॥११॥

हे ऋषि वसिष्ठ ! आप मित्र-वरुण के पुत्र हैं । हे ब्रह्मन् ! आप उर्वशी के मन से उत्पन्न हुए हैं। (इस प्रकारे उत्पन्न हुए) आपको दिव्य मन्त्रों के साथ, विश्वेदेवों ने पुष्कर (पुष्टिकारक पदार्थों या विशाल क्षेत्र) में धारण किया था॥११॥

स प्रकेत उभयस्य प्रविद्वान्त्सहस्रदान उत वा सदानः ।
यमेन ततं परिधिं वयिष्यन्नप्सरसः परि जज्ञे वसिष्ठः ॥१२॥

ये वसिष्ठ दोनों लोकों के समस्त विषयों के विशेष विद्वान् हैं, सहस्रों प्रकार के दान देने वाले हैं। सर्व नियामक द्वारा विस्तारित ताने-बाने (सृजन के ताने-बाने) को बुनने की इच्छा से ये उर्वशी से उत्पन्न हुए॥१२॥

सत्रे ह जाताविषिता नमोभिः कुम्भे रेतः सिषिचतुः समानम् ।
ततो ह मान उदियाय मध्यात्ततो जातमृषिमाहुर्वसिष्ठम् ॥१३॥

दोनों (मित्र – वरुण ने) उस सत्र (अभियान या यज्ञ) में एक साथ रेतस् (उत्पादक तेज) कुंभ (पात्र अथवा विश्वघट) में स्थापित किया। उससे मान (अगस्त्य) उत्पन्न हुए। उसी (प्रक्रिया) से वसिष्ठ भी उत्पन्न कहे जाते हैं॥१३॥

उक्थभृतं सामभृतं बिभर्ति ग्रावाणं बिभ्रत्प्र वदात्यग्रे ।
उपैनमाध्वं सुमनस्यमाना आ वो गच्छाति प्रतृदो वसिष्ठः ॥१४॥

हे भरत लोगो ! वसिष्ठ ऋषि आप लोगों के पास आ रहे हैं। आप सब प्रसन्न मन से इन माननीय का सत्कार करें । वसिष्ठ ऋषि उक्थ एवं साम गान करने वालों एवं सोमरस तैयार करने वालों का उचित नेतृत्व करेंगे॥१४॥

सूक्त ३४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विश्वे देवा, १६ अहि:, १७ अहिर्बुध्न्य:। छंद – द्विपदा विराट्, २२-२५ त्रिष्टुप

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत्सुतष्टो रथो न वाजी ॥१॥

बलवान् अश्वों द्वारा संचालित सुगढ़ रथ की तरह देवी मनीषा हमारे समीप पधारें॥१॥

विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अध क्षरन्तीः ॥२॥

नीचे की ओर क्षरणशील जल (वृष्टि जल अथवा जीवन प्रवाह) द्यावा-पृथिवी के उत्पत्ति को जानने वाला है । वे (वह प्रवाह) सुनते भी हैं॥२॥

आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीर्वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः ॥३॥

पृथ्वी पर जो जल विद्यमान है, वह इन्द्रदेव को पुष्टि प्रदान करता है । शत्रुओं के आक्रमण पर विद्वान् इन्हीं शूरवीर इन्द्रदेव को बुलाते हैं ॥३॥

आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वानिन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः ॥४॥

वज्रधारी और स्वर्ण पाणि इन्द्रदेव को यहाँ लाने के लिए, उनके रथ में अश्वों को नियोजित करें॥४॥

अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं यातेव पत्मन्त्मना हिनोत ॥५॥

हे मनुष्यो ! यज्ञ करने के लिए स्वयं की इच्छा से, सहर्ष, तीव्र वेग से अवश्य ही आगे बढ़े॥५॥

त्मना समत्सु हिनोत यज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम् ॥६॥

हे मनुष्यो ! संग्राम में स्वयं जाएँ एवं वीर पुरुषों को भी प्रेरित करें । लोगों के हित के लिए यज्ञ करें॥६॥

उदस्य शुष्माद्भानुर्नार्त बिभर्ति भारं पृथिवी न भूम ॥७॥

इस (यज्ञ) के बल से ही सूर्यदेव उगते हैं। जैसे पृथ्वी समस्त भूतों (प्राणियों) का भार वहन करती हैं; वैसे ही यज्ञ सबका आधार है ॥७॥

ह्वयामि देवाँ अयातुरग्ने साधन्नृतेन धियं दधामि ॥८॥

हे अहिंसक अग्निदेव ! हम साधनापूर्वक यज्ञ के देवों का आवाहन करते हैं और बुद्धि को देवों की परिचर्या में प्रयुक्त करते हैं (अर्थात् यज्ञीय अनुशासन में विचारों एवं कर्मों को नियोजित करते हैं)॥८॥

अभि वो देवीं धियं दधिध्वं प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम् ॥९॥

हे मनुष्यो ! आप लोग देवताओं के निमित्त बुद्धि का प्रयोग करें एवं देवों की स्तुति करें॥९॥

आ चष्ट आसां पाथो नदीनां वरुण उग्रः सहस्रचक्षाः ॥१०॥

सहस्रों नेत्रों वाले ओजस्वी वरुणदेव नदियों के जल का निरीक्षण करते रहते हैं॥१०॥

राजा राष्ट्रानां पेशो नदीनामनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायु ॥११॥

ये वरुण देवता राष्ट्रों के राजा के समान नदियों के रूप में अपने बल से सब जगह गमन करने वाले हैं॥११॥

अविष्टो अस्मान्विश्वासु विक्ष्वद्युं कृणोत शंसं निनित्सोः ॥१२॥

हे देवताओ ! आप कृपा करके हमारी रक्षा करें, हमारी निन्दा करने वाले शत्रुओं की तेजस्विता को नष्ट करें॥१२॥

व्येतु दिद्युद्द्विषामशेवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम् ॥१३॥

हे देवताओ ! आप सब हमारा अमंगल करने को तत्पर, शत्रुओं के आयुधों को चारों ओर से निवारण करें । हमारे कायिक पापों को भी दूर ले जाएँ॥१३॥

अवीन्नो अग्निर्हव्यान्नमोभिः प्रेष्ठो अस्मा अधायि स्तोमः ॥१४॥

हमने अग्निदेव के प्रति विनम्रतापूर्वक स्तोत्रों का गान किया है । वे अन्न का भक्षण करने वाले, प्रिय अग्निदेव प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करें॥१४॥

सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु ॥१५॥

अग्निदेव जल को ऊपर उठाते हैं, वे सखा भाव से हमारी रक्षा करें॥१५॥

अब्जामुक्थैरहिं गृणीषे बुध्ने नदीनां रजःसु षीदन् ॥१६॥

नदियों के समीपस्थ क्षेत्र में स्थापित अग्निदेव की स्तोत्रों द्वारा स्तुति करें । वे अग्निदेव जल के उत्पादक एवं शत्रुओं को मारने वाले हैं॥१६॥

मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धान्मा यज्ञो अस्य स्रिधदृतायोः ॥१७॥

मेघों में स्थित (विद्युत् रूप) अग्निदेव हमारे ऊपर घात न करें । सत्यमय जीवन जीने वाले का यज्ञ क्षीण नहीं होता है॥१७॥

उत न एषु नृषु श्रवो धुः प्र राये यन्तु शर्धन्तो अर्यः ॥१८॥

धनैश्वर्य प्राप्ति में हमारे प्रतिस्पर्धी (शत्रु) हमसे दूर चले जाएँ । हम सब पर्याप्त मात्रा में धन, यश एवं अन्न प्राप्त करें॥१८॥

तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमा महासेनासो अमेभिरेषाम् ॥१९॥

विशाल सेना से युक्त राजा अपने शत्रुओं को देवताओं की शक्ति से सूर्य की भाँति संतप्त करते हैं॥१९॥

आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान् ॥२०॥

जब पत्नियाँ हमारे निकट आती हैं, उस समय त्वष्टा (देवशिल्पी) श्रेष्ठ बाहुओं से वीरों को धारण करें॥२०॥

प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्यादस्मे अरमतिर्वसूयुः ॥२१॥

उत्तम बुद्धि वाले त्वष्टा देव हमारे यज्ञ को स्वीकार करें एवं प्रसन्न होकर हमें पर्याप्त धन प्रदान करें॥२१॥

ता नो रासन्रातिषाचो वसून्या रोदसी वरुणानी शृणोतु ।
वरूत्रीभिः सुशरणो नो अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः ॥२२॥

हमें अभीष्ट धन देने वाली दिव्य शक्तियाँ प्रदान करें । द्यावा-पृथिवीं और वरुणदेव की शक्ति हम लोगों द्वारा गाये जा रहे स्तोत्रों को सुने । श्रेष्ठ दानदाता त्वष्टादेव विघ्ननिवारक शक्तियों सहित हमारे लिए शरणदाता बने एवं हमें ऐश्वर्य प्रदान करें॥२२॥

तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आपस्तद्रातिषाच ओषधीरुत द्यौः ।
वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो नः ॥२३॥

पर्वत, जल, ओषधियाँ और द्युलोक, वनस्पतियों सहित अन्तरिक्ष एवं देवशक्तियाँ हमारे उस (प्राण रूप) धन का संरक्षण करें॥२३॥

अनु तदुर्वी रोदसी जिहातामनु द्युक्षो वरुण इन्द्रसखा ।
अनु विश्वे मरुतो ये सहासो रायः स्याम धरुणं धियध्यै ॥२४॥

विशाल द्यावा-पृथिवीं, शत्रुओं को हराने वाले मरुद्गण, तेजस्वी इन्द्रदेव एवं उनके मित्र वरुणदेव आदि देवतागण हमारे सहयोगी हों। इनकी कृपा से हम धारण करने योग्य धन को प्राप्त करें॥२४॥

तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२५॥

इन्द्रदेव, मित्रदेव, वरुणदेव, अग्निदेव, ओषधियाँ, जल एवं वन के वृक्षों के निमित्त हम स्तोत्र पाठ करते हैं। हमें मरुद्गणों के साथ मंगलकारी स्थान प्राप्त हों । आप सब हमें कल्याणकारी रक्षण-साधनों द्वारा सुरक्षित रखें॥२५॥

सूक्त ३५

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विश्वे देवा । छंद – त्रिष्टुप

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥

दिन और रात्रि हम सबके लिए मंगलकारी हों । इन्द्र और अग्निदेव तथा इन्द्र और वरुणदेव हम सभी का कल्याण करें । इन्द्र और पूषादेव मंगलकारी अन्न और ऐश्वर्य प्रदान करें । इन्द्र और सोमदेव सुसन्तति प्राप्ति के लिए तथा रोगों के शमन और भय दूर करने के लिए, हमारे लिए मंगलमय हों॥१॥

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥

भग देवता हमें शान्ति प्रदान करें। यह शान्ति मनुष्यों द्वारा प्रशंसित हो । बुद्धि एवं धन हमें शान्ति प्रदान करे । श्रेष्ठ एवं शिष्ट बोले गये

वचन हमें शान्ति देने वाले हों । अर्यमादेव हमें शान्ति देने वाले हों॥२॥

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥

धाता (आधार प्रदान करने वाले), धर्ता (धारण करने वाले), द्यावा-पृथिवी, पृथ्वी का अन्न, पर्वत, देवताओं की उपासना- ये सभी हम सबके लिए शान्तिदायक-कल्याणप्रद हों॥३॥

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥४॥

तेजस्वी अग्निदेव, मित्रावरुणदेव, सूर्यदेव, चन्द्रदेव, दोनों अश्विनीकुमार, सत्कर्मा एवं गमनशील वायुदेव हमें शान्ति प्रदान करें॥४॥

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५॥

द्यावा-पृथिवी हमें प्रथमबार प्रार्थना में शान्ति प्रदान करें । श्रेष्ठ दर्शन के निमित्त अंतरिक्ष में शान्ति प्रदान करें । वनस्पति एवं ओषधियाँ

हमें शान्ति प्रदान करें । विजयशील लोकपाल भी हमें शान्ति प्रदान करें॥५॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥

इन्द्र देवता वसुगणों के सहित हमें शान्ति प्रदान करें। आदित्यों के सहित वरुणदेव, रुद्रगणों सहित जलदेव हमें शान्ति प्रदान करें । त्वष्टा देव, देवपत्नियों सहित हमें शान्ति दें । (सभी देवगण) हमारी विनय सुनें॥६॥

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥७॥

सोम एवं मावा (सोम कूटने वाला पत्थर) हमें शान्ति दें । ब्रह्म एवं यज्ञदेव हमें शान्ति प्रदान करें । यूपों का प्रमाण, ओषधियाँ, वेदिका आदि सभी हमें शान्ति प्रदान करे॥७॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥

विशाल तेजधारी सूर्यदेव हमें शान्ति प्रदान करने के लिए उदित हों। चारों दिशाएँ हमें शान्ति दें, स्थिर पर्वत, जल एवं समुद्र में शान्ति प्रदान करें॥८॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥

अदिति अपने व्रतों द्वारा हमें शान्ति प्रदान करें । उत्तम तेजस्वी मरुद्गण हमें शान्ति प्रदान करें । विष्णुदेव, पूषादेव, अन्तरिक्ष एवं वायुदेव हमें शान्ति प्रदान करें॥९॥

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥१०॥

त्राण प्रदाता सवितादेव हमें शान्ति प्रदान करें। तेजस्वी उषाएँ हमें शान्ति प्रदान करें । पर्जन्य एवं क्षेत्रों के कल्याणकारी अधिपति हमारी प्रजा के लिए शान्ति प्रदायक-मंगलकारी हों॥१०॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः
॥११॥

विश्वदेव (समस्त देवगण) हमें शान्ति प्रदान करें । सद्बुद्धि देने वाली देवी सरस्वती हमें शान्ति प्रदान करें । यज्ञकर्ता, दानदाता, द्युलोक, पृथ्वी और जल के देवगण हमें शान्ति प्रदान करें॥११॥

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥

सत्य के अधिपति, अश्व एवं गौएँ हमें सुख-शान्ति प्रदान करें । श्रेष्ठ कर्म करने वाले एवं श्रेष्ठ भुजाओं वाले ऋभुगण हमें शान्ति प्रदान करें । हमारे पितरगण हमारी प्रार्थना सुनकर हमें शान्ति प्रदान करें॥१२॥

शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥१३॥

एक पाद अजदेव हमारा कल्याण करें । अहिर्बुध्य और समुद्रदेव हमें शान्ति प्रदान करें । अपांनपात्देव शान्ति दें । देवताओं से संरक्षित गौ (किरणे या प्रकृति) हमें शान्ति प्रदान करें॥१३॥

आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ।
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ॥१४॥

नवरचित स्तोत्रों को आदित्यगण, वसुगण एवं रुद्रगण ग्रहण करें । द्युलोक, पृथ्वी एवं स्वर्ग में उत्पन्न देवगण और भी जो यजनीय देव आदि हैं, वे सब हमारी स्तुति स्वीकार करें॥१४॥

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१५॥

यजनीय देवताओं के लिए भी जो पूज्य हैं एवं मनुष्य के लिए भी जो पूज्य हैं, ऐसे अमर, तज्ञदेव आज प्रसन्न होकर हमें यशस्वी पुत्र दें तथा हमारा पालन एवं कल्याण करें॥१५॥

सूक्त ३६

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विश्वे देवा । छंद – त्रिष्टुप

प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः ।
वि सानुना पृथिवी सस्र उर्वी पृथु प्रतीकमध्येधे अग्निः ॥१॥

ऋत के गृह (यज्ञशाला) से ब्रह्मज्ञान स्तोत्रादि प्रसरित होकर सूर्य आदि देवों तक पहुँचते हैं। सूर्यदेव अपनी किरणों से जल वृष्टि करते हैं। पर्वतादि सहित विस्तार वाली पृथ्वी पर अग्निदेव प्रदीप्त होते हैं॥१॥

इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिषं न कृण्वे असुरा नवीयः ।
इनो वामन्यः पदवीरदब्धो जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः ॥२॥

हे बलशाली वरुण और मित्रदेव ! आपके निमित्त इस नवीन स्तोत्र की रचना करते हैं। आप दोनों में एक वरुणदेव प्रभुता-सम्पन्न हैं। वे निष्पक्षरूप से धर्माधर्म का निर्णय करके सुनिश्चित स्थान (पद) प्रदान

करते हैं। दूसरे देव "मित्र' प्रशंसा किये जाने पर धर्ममार्ग में प्रेरणा प्रदान करते हैं॥२॥

आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या अपीपयन्त धेनवो न सूदाः ।
महो दिवः सदने जायमानोऽचिक्रददृवृषभः सस्मिन्नूधन् ॥३॥

वायुदेव गतिपूर्वक चारों दिशाओं में विचरण करते हैं, अन्तरिक्ष में गर्जते हुए मेघ सुशोभित होते हैं और बरसते हैं। इससे (जल वृष्टि से) दूध देने वाली गौएँ बढ़ती हैं॥३॥

गिरा य एता युनजद्धरी त इन्द्र प्रिया सुरथा शूर धायू ।
प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिनात्या सुक्रतुमर्यमणं ववृत्याम् ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! जो यजमान स्तुतिपाठ करते हुए आपके बलवान् अश्वों को रथ में नियोजित करता है, आप उस (यजमान की) यज्ञशाला में अवश्य जाते हैं । जो देव शत्रुओं की हिंसक वृत्ति नष्ट कर देते हैं, हम उन अर्यमादेव का आवाहन करते हैं॥४॥

यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च नमस्विनः स्व ऋतस्य धामन् ।
वि पृक्षो बाबधे नृभिः स्तवान इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम् ॥५॥

याजक अन्न-प्राप्ति के लिए, यज्ञ द्वारा रुद्रदेव को स्तुतियों से प्रसन्न करते हैं, उन रुद्रदेव को हम सब नमस्कार करते हैं॥५॥

आ यत्साकं यशसो वावशानाः सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता ।
याः सुष्वयन्त सुदुघाः सुधारा अभि स्वेन पयसा पीप्यानाः ॥६॥

मातृवत् स्नेह सलिला सिन्धु एवं सप्तम सरस्वती आदि नदियाँ पर्याप्त जलराशि से युक्त होकर प्रवहमान रहें । वे अपने जल से परिपूर्ण अन्न एवं दुग्धादि बढ़ाती हुई साथ-साथ प्रवहमान रहें॥६॥

उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु ।
मा नः परि ख्यदक्षरा चरन्त्यवीवृधन्युज्यं ते रयिं नः ॥७॥

आनन्दवर्धक पराक्रमी मरुद्गण हमारे पुत्रों को और सद्बुद्धि प्रेरित कर्मों को सुरक्षित रखें । वाक् के अधिपति देव हम पर सदैव प्रसन्न रहें । वे हम लोगों के धन को बढ़ाते हैं॥७॥

प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं प्र पूषणं विदथ्यं न वीरम् ।
भगं धियोऽवितारं नो अस्याः सातौ वाजं रातिषाचं पुरंधिम् ॥८॥

हे स्तोतागण ! आप इस विशाल एवं महान् पृथ्वी (देवी) का आवाहन करें । यजनीय, योद्धा, पराक्रमी पूषादेव का आवाहन करें ।

बुद्धिसंगत कर्म करने के प्रेरक भगदेव ऐवं पुरातन, दानवीर वाजदेव का यज्ञ में आवाहन करें॥८॥

अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्वच्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः ।
उत प्रजायै गृणते वयो धुर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥९॥

हे मरुद्गणो ! आप तक एवं गर्भ संरक्षक, आश्रये प्रदान करने वाले विष्णुदेव के पास तक हमारे ये स्तोत्र पहुँचे । वे हम स्तोताओं को पुत्र एवं अन्न प्रदान करें । आप सदैव हमारा पालन करते हुए कल्याण करें॥९॥

सूक्त ३७

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विश्वे देवा । छंद – त्रिष्टुप

आ वो वाहिष्ठो वहतु स्तवध्यै रथो वाजा ऋभुक्षणो अमृक्तः ।
अभि त्रिपृष्ठैः सवनेषु सोमैर्मदे सुशिप्रा महभिः पृणध्वम् ॥१॥

हे तेजस्वी त्राभुगणो ! आप श्रेष्ठ एवं निरापद रथ पर आरूढ़ होकर गमन करें । हे सुन्दर हनु वाले ऋभुगण ! आप सब दूध, दही और सत्तू मिले सोमरस का पान करके आनन्दित हों॥१॥

यूयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ स्वर्दृश ऋभुक्षणो अमृक्तम् ।
सं यज्ञेषु स्वधावन्तः पिबध्वं वि नो राधांसि मतिभिर्दयध्वम् ॥२॥

हे ऋभुगणो ! आप स्वदर्शी हैं, बलवान् हैं; आप सोमपायी होकर हम विदाताओं को विशेष रत्नादि प्रदान करें। बुद्धियों सहित सिद्धिदायक ऐश्वर्य हमें दें॥२॥

उवोचिथ हि मघवन्देष्णं महो अर्भस्य वसुनो विभागे ।
उभा ते पूर्णा वसुना गभस्ती न सूनृता नि यमते वसव्या ॥३॥

हे धनपति ! महाधन एवं अल्पधन के विभाग के समय आप भी अपना भाग ग्रहण करते हैं । हे देव ! आपके दोनों हाथों में पर्याप्त धन हैं । आप निर्विघ्न दान देते हैं॥३॥

त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षा वाजो न साधुरस्तमेष्यृक्वा ।
वयं नु ते दाश्वांसः स्याम ब्रह्म कृण्वन्तो हरिवो वसिष्ठाः ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! आप यशस्वी हैं, आप श्रेष्ठ साधक एवं ऋभुओं के स्वामी, हम स्तोताओं के घर में आएँ । हे हरितवर्ण वाले अश्व से युक्त पराक्रमी देव ! हम वसिष्ठगण आपकी स्तुति करते हुए, आप के निमित्त हवि अर्पित करते हैं॥४॥

सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद्याभिर्विवेषो हर्यश्व धीभिः ।
ववन्मा नु ते युज्याभिरूती कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ॥५॥

हरित वर्ण अश्व वाले हे देव ! आप हमारी स्तुतियों को सुनें । आप हवि-दाता याजक को उत्तम धन प्रदान करें । आप कब धन प्रदान करेंगे? आज तक हम आपके संरक्षण में सुरक्षित रहते हुए आपका भजन (ध्यान) करते हैं॥५॥

वासयसीव वेधसस्त्वं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः ।
अस्तं तात्या धिया रयिं सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी ॥६॥

हे इन्द्रदेव ! आप कब हमारे बचनों एवं प्रार्थनाओं पर ध्यान देंगे ? आप हमारे आश्रयदाता हैं । स्तुति से प्रसन्न होकर आप अपने बलवान् एवं तीव्रगामी अश्वों के द्वारा हमारे पास पराक्रमी पुत्र, धन एवं अन्न भेजे॥६॥

अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशे नक्षन्त इन्द्रं शरदः सुपृक्षः ।
उप त्रिबन्धुर्जरदष्टिमेत्यस्ववेशं यं कृणवन्त मर्ताः ॥७॥

पृथ्वी जिसे ईश मानती है, समस्त अन्नयुक्त संवत्सर जिन्हें सुख प्रदान करते हैं, मनुष्य जिन्हें अपने घरों में प्रतिष्ठित करते हैं; वे त्रिलोक-बन्धु इन्द्रदेव हमें विशाल बल प्रदान करें॥७॥

आ नो राधांसि सवितः स्तवध्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ ।
सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

हे सवितादेव ! आप हमें अपना धन प्रदान करें । पर्वत प्रदत्त धन भी हमें प्राप्त हो । इन्द्रदेव अपनी संरक्षण शक्तियों से सदैव हमारी रक्षा करें तथा हम सबका पालन करें॥८॥

सूक्त ३८

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – १-६ सविता, ७-८ वाजिन: । छंद – त्रिष्टुप

उदु ष्य देवः सविता ययाम हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत् ।
नूनं भगो हव्यो मानुषेभिर्वि यो रत्ना पुरूवसुर्दधाति ॥१॥

हे सवितादेव ! आप अपने आश्रित सुवर्ण आभा' को प्रकट करते हैं। मनुष्य सवितादेव की स्तुति करते हैं । वे अनेकों धनों के स्वामी स्तोताओं को श्रेष्ठ धन प्रदान करते हैं॥१॥

उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यस्य हिरण्यपाणे प्रभृतावृतस्य ।
व्युर्वीं पृथ्वीममतिं सृजान आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः ॥२॥

हे सवितादेव ! आप उदित हों । हे स्वर्णमयी बाह वाले देव ! आप व्यापक आभा, मानवों के उपयोग-योग्य धन एवं अन्न देते हैं॥२॥

अपि ष्टुतः सविता देवो अस्तु यमा चिद्विश्वे वसवो गृणन्ति ।
स नः स्तोमान्नमस्यश्चनो धाद्विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरीन् ॥३॥

हम सवितादेव की स्तुति करते हैं। जो सवितादेव सब देवों द्वारा स्तुत्य हैं, वे पूजनीय सवितादेव स्तोत्र एवं अन्न स्वीकार करें । हे देव ! आप अपनी समस्त रक्षण शक्तियों द्वारा स्तोताओं का पालन करें !॥३॥

अभि यं देव्यदितिर्गृणाति सवं देवस्य सवितुर्जुषाणा ।
अभि सम्राजो वरुणो गृणन्त्यभि मित्रासो अर्यमा सजोषाः ॥४॥

अदिति देवी जिन सवितादेव की स्तुति करती हैं एवं जिन देव की प्रेरणा का पालन करती हैं। उन्हीं सवितादेव की स्तुति मित्रावरुण देव एवं अर्यमादेव भी करते हैं॥४॥

अभि ये मिथो वनुषः सपन्ते रातिं दिवो रातिषाचः पृथिव्याः ।
अहिर्बुध्न्य उत नः शृणोतु वरूत्र्येकधेनुभिर्नि पातु ॥५॥

समस्त दानी भक्तगण आपस में मिलकर द्युलोक एवं पृथ्वीलोक के सखारूप सवितादेव की सेवा करते हैं; वे अहिर्बुध्य (विद्युत्रूप) देव हमारी स्तुति सुनें । वाग्देवी विशेष धेनुओं (वाणियों) सहित हम सबका पालन करें॥५॥

अनु तन्नो जास्पतिर्मंसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।

भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमनुग्रो अध याति रत्नम् ॥६॥

प्रजाओं का पालन करने वाले सवितादेवता हमारी प्रार्थना सुनकर हमें रत्नादि प्रदान करें । पराक्रमी स्तोता भग देवता से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं। जो पराक्रमी नहीं हैं, वे केवल धन माँगते हैं॥६॥

शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः ।
जम्भयन्तोऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥७॥

संतुलित गति वाले, स्तुत्य, वाजी (अन्न या बल देने वाले) देव यज्ञीय प्रार्थनाओं से (प्रसन्न होकर) हम सबको सुख प्रदान करें । ये देव अदानशील और दुष्टों का संहार करें । समस्त जीर्ण रोगों से हम मुक्त हो॥७॥

वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥८॥

हे वाजी (बलशाली) देवगण ! आप अदर, ऋतज्ञ एवं विद्वान् हैं। आप धन के निमित्त होने वाले युद्धों में हमारी रक्षा करें। आप इस यज्ञ में आकर, सोमरस पीकर आनन्दित हों एवं तृप्त हुए आप देवयान मार्ग से प्रस्थान करें॥८॥

सूक्त ३९

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विश्वे देवा: । छंद – त्रिष्टुप

ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत्प्रतीची जूर्णिर्देवतातिमेति ।
भेजाते अद्री रथ्येव पन्थामृतं होता न इषितो यजाति ॥१॥

हे ऊर्ध्वगामी अग्निदेव ! आप अपने याजकों की स्तुति को सुनें । पूर्व दिशा वाली उषादेवी इस यज्ञ में आएँ । आदरणीय याजक पति और पत्नी, रथी के समान, यज्ञ-मार्ग का आश्रय लेते हैं । होता यज्ञ करते हैं॥१॥

प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिट इयाते ।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् ॥२॥

समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए नियुत संज्ञा वाले वाहन में आरूढ़ वायुदेव और पूषादेव, रात्रि के अन्त में, उषाकाल के पूर्व मनुष्यों द्वारा

बुलाये जाने पर राजाओं की भाँति आते हैं। इन दोनों देवों के लिए यज्ञशाला में उत्तम प्रकार से कुश के आसन प्रयुक्त किये जाते हैं॥२॥

ज्मया अत्र वसवो रन्त देवा उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः ।
अर्वाक्पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य ॥३॥

इस यज्ञ में वसुगण भूमि पर विचरण करते हैं । विशाल अन्तरिक्ष में रहने वाले मरुद्गणों की सेवा इस यज्ञ से की जाती हैं । हे वसुगणो एवं मरुतो ! आप हमारे दूत की प्रार्थना पर ध्यान देकर हमारी ओर आएँ॥३॥

ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः सधस्थं विश्वे अभि सन्ति देवाः ।
ताँ अध्वर उशतो यक्ष्यग्ने श्रुष्टी भगं नासत्या पुरंधिम् ॥४॥

रक्षा करने वाले यजनीय विश्वेदेवा यज्ञ में आये हैं ! हे अग्निदेव ! आप यज्ञ में उपस्थित देवों के निमित्त यजन करें । हे भगदेव ! आप अश्विनीकुमारों एवं इन्द्रदेव का सत्कार करें॥४॥

आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्या मित्रं वह वरुणमिन्द्रमग्निम् ।
आर्यमणमदितिं विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम् ॥५॥

हे अग्निदेव ! द्युलोक एवं पृथ्वी के स्तुति करने योग्य मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि, अर्यमा, अदिति, विष्णु आदि देवताओं को आप हमारे इस यज्ञ में आवाहित करें । देवी सरस्वती और मरुद्गण (यहाँ आकर) आनन्दित हों॥५॥

रेरे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां नक्षत्कामं मर्त्यानामसिन्वन् ।
धाता रयिमविदस्यं सदासां सक्षीमहि युज्येभिर्नु देवैः ॥६॥

यजनीय देवताओं के निमित्त हम स्तोत्र एवं हवि अर्पित करते हैं । मानवों की प्रगति की कामना से अग्निदेव यजन करें । हम आपके सहित समस्त सहायक देवताओं का आवाहन करते हैं । प्रसन्न होकर सब देवता हमें स्थायी एवं अक्षय धन प्रदान करें॥६॥

नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

आज वसिष्ठों ने द्यावा-पृथिवी की सुनिश्चित स्तुति की । यजनीय वरुण, इन्द्र और अग्निदेव की स्तुति की गयीं । आनन्ददाता देवता हमें पूजा में प्रयुक्त किये जाने योग्य श्रेष्ठतम अन्न एवं धन प्रदान करें॥७॥

सूक्त ४०

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः
देवता – विश्वे देवा: । छंद – त्रिष्टुप

ओ श्रुष्टिर्विदथ्या समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम् ।
यदद्य देवः सविता सुवाति स्यामास्य रत्निनो विभागे ॥१॥

हम वेगवान् देवताओं के लिए स्तोत्रों का पाठ करते हैं। हमें वे सुख मिले; जो 'सहकारिता' के आधार पर प्राप्त होते हैं । रत्नों के स्वामी सविता देव जिस समय अपना धन बाँटते हैं, उस समय उपस्थित रहकर हम भी वह धन प्राप्त करे॥१॥

मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्द्रो अर्यमा ददातु ।
दिदेष्टु देव्यदिती रेक्णो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च ॥२॥

मित्र, वरुण, द्यावा-पृथिवी, इन्द्र, अर्यमा, वायु, भगदेव एवं अदिति देवी सहित समस्त देवता हमारे स्तोत्रों से प्रसन्न होकर हमें वह श्रेष्ठ धन प्रदान करें, जो तेजस्वियों के लिए सेवनीय है॥२॥

सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्यं पृषदश्वा अवाथ ।
उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येतास्ति ॥३॥

हे पृषत् (चित्तीदार अथवा वायुवेग) घोड़े वाले मरुद्गणो ! आप महान् पराक्रमी एवं बलवान् मनुष्य की सुरक्षा करते हैं । उस मनुष्य को अग्निदेव, देवी सरस्वती तथा अन्य देवगण प्रेरणा देकर सत्कर्म में नियोजित करते हैं। ऐसे मनुष्य के धन का नाश नहीं होता है॥३॥

अयं हि नेता वरुण ऋतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः ।
सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्षन्नरिष्टान् ॥४॥

वे सत्य मार्ग में नेतृत्व करने वाले शासक देवता, वरुण, मित्र, अर्यमा आदि देव हमारे द्वारा किये जाने वाले श्रेष्ठ कार्यों को धारण करते हैं। विस्तृत तेजस्वी देवी अदिति स्तुवनीय हैं । ये समस्त देवगण, हमारे श्रेष्ठ कम को निर्विघ्न सम्पन्न होने में सहायक होकर हमें पाप कर्मों से बचाएँ॥४॥

अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः ।
विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ॥५॥

देवगण यज्ञ में हवि द्वारा उपासनीय एवं कामनाओं की पूर्ति करने वाले विष्णुदेव के अंश हैं । रुद्रदेव अपनी महत्त्वपूर्ण शक्ति हमें प्रदान करें। हे अश्विनीकुमारो ! आप हमारे अन्नपूरित घर में आएँ॥५॥

मात्र पूषन्नाघृण इरस्यो वरूत्री यद्रातिषाचश्च रासन् ।
मयोभुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिज्मा वातो ददातु ॥६॥

हे तेजस्वी पूषन्देव ! सर्वश्रेष्ठ देवी सरस्वती और दानशील दिव्यशक्तियों से धन प्राप्त कराने में आप हमारे सहायक हों । सर्वत्रगामी वायुदेव जल वृष्टि में सहयोग करें एवं प्रगतिशील तथा सुखदायक देवता हमारा कल्याण करें-पोषण करें॥६॥

नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

आप वसिष्ठों ने द्यावा-पृथिवी की सुनिश्चित स्तोत्रों से स्तुति की। यज़न करने योग्य वरुण, इन्द्र एवं अग्निदेव की स्तुति भी की गयी । आनन्ददाता देवता हमें पूजा (श्रेष्ठ कार्यों) में प्रयुक्त किए जाने योग्य श्रेष्ठतम अन्न एवं धन प्रदान करें॥७॥

सूक्त ४१

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – १, मित्र, वरुण, आश्विन, भग, पूषा, ब्रह्मणस्पति, सोम, रुद्रा:
२-६ भग, ७ उषस: । छंद – त्रिष्टुप, जगती

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥१॥

प्रभातकाल में (यज्ञार्थ) हम अग्निदेव का आवाहन करते हैं । प्रभात में ही यज्ञ की सफलता के निमित्त इन्द्रदेव, मित्रावरुण, अश्विनीकुमारों, भग, पूषा, ब्रह्मणस्पति, सोम और रुद्रदेव का भी आवाहन करते हैं॥१॥

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥२॥

हम उन भगदेवता का आवाहन करते हैं, जो जगत् को धारण करने वाले, उग्रवीर एवं विजयशील हैं । वे अदिति पुत्र हैं, जिनकी स्तुति

करने से दरिद्र भी धनवाने हो जाता हैं । राजा भी उनसे धन की याचना करते हैं॥२॥

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३॥

हे भगदेवता ! आप हीं वास्तविक धन हैं । शाश्वत-सत्य ही धन है । हे भगदेव ! आप हमारी स्तुति से प्रसन्न होकर हमें इच्छित सत्य-धन प्रदान करें । हे देव ! हमें गौएँ, घोड़े, पुत्रादि प्रदान कर, श्रेष्ठ मानवों के समाज वाला बनाएँ॥३॥

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥४॥

हे देव ! आपकी कृपा से हम भाग्यवान् बने । दिन के प्रारम्भ और मध्य में भी हम भाग्यवान् रहें । हे धनवान् भगदेवता ! हम सूर्योदय के समय, समस्त देवताओं का अनुग्रह प्राप्त करें॥४॥

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ॥५॥

हे देवताओ ! भग देवता ही ऐश्वर्यवान् हों । वे कृपा कर हमें धनवान् बनायें ! हे भगदेवता ! समस्त मानव समुदाय आपका आवाहन करता है, आप हमारे यज्ञ में आएँ॥५॥

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु ॥६॥

दधिक्रावा की तरह पवित्र पद की प्राप्ति के लिए उषाकाल में (देवगण) यज्ञ में पधारें । जिस प्रकार तीव्रगामी अश्व रथ को लाते हैं, वैसे ही वे धनवान् भगदेव को हमारे पास लाएँ॥६॥

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

समस्त गुणों से युक्त अश्वों, गौओं, वीरों से युक्त एवं घृत का सिंचन करने वाली कल्याणकारी उषाएँ हमारे घरों को प्रकाशित करें। आप सदैव हमारा पालन करते हुए कल्याण करें॥७॥

सूक्त ४२

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विश्वे देवा: । छंद – त्रिष्टुप

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु ।
प्र धेनव उदप्रुतो नवन्त युज्यातामद्री अध्वरस्य पेशः ॥१॥

अंगिरस के मन्त्र (स्तोत्र) सर्वव्यापी हों । पर्जन्य हमारे स्तोत्रों के लिए इच्छुक रहें । प्रसन्नता देने वाली नदियाँ जल का सिंचन करती हुई प्रवाहित हों । आदरणीय यजमान सपत्नीक यज्ञ के स्वरूप को और श्रेष्ठ बनाएँ॥१॥

सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च ।
ये वा सद्मन्नरुषा वीरवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः ॥२॥

हे अग्निदेव ! आपका चिरपुरातन गमनयोग्य मार्ग सुगम बने । श्यामवर्ण एवं लाल वर्ण के अश्व यज्ञशाला में वीरों को लाते हैं। ऐसे

तेजस्वी घोड़ों वाले रथं पर आरूढ़ हो, आप यज्ञ में आएँ । देवों के प्रकट होने के निमित्त हम स्तोत्रों का गान करते हैं॥२॥

समु वो यज्ञं महयन्नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिच उपाके ।
यजस्व सु पुर्वणीक देवाना यज्ञियामरमतिं ववृत्याः ॥३॥

हे देवताओ ! नमस्कार करने वाले ये स्तोता, आपके यज्ञ की महिमा को बढ़ाते हैं। श्रेष्ठ यज्ञ के उपासक होता" सर्वोत्तम माने जाते हैं । हे परम तेजस्वी अग्निदेव ! आप प्रदीप्त होकर, देवों का उत्तम प्रकार से यजन करें॥३॥

यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत् ।
सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमियत्यै ॥४॥

धनवान् वीर के घर में जिस समय आदरणीय अग्निदेव सुखपूर्वक प्रतिष्ठित होकर प्रदीप्त होते हैं, उस समय समीपस्थ जनों (अर्थात् याजकों) को श्रेष्ठ धन प्राप्त होता है॥४॥

इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रे यशसं कृधी नः ।
आ नक्ता बर्हिः सदतामुषासोशन्ता मित्रावरुणा यजेह ॥५॥

हे अग्निदेव ! आप हमारे यज्ञ का सेवन करें । मरुद्गणों एवं इन्द्रदेव के बीच हमें यशस्वी बनाये । इस यज्ञ में मित्रावरुण का यजन करें । रात्रि और उषाकाल में भी कुशाओं पर विराजें॥५॥

एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्स्न्यस्य स्तौत् ।
इषं रयिं पप्रथद्वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

ऐश्वर्य के इच्छुक वसिष्ठ ने सब प्रकार के धन हेतु बल के पुत्र अग्निदेव की स्तुति की। अग्निदेव हमें अन्न, बल और धन प्रदान करें । हे देवगणो ! आप हमारी पालन करें, कल्याण करें॥६॥

सूक्त ४३

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विश्वे देवा: । छंद – त्रिष्टुप

प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन्द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्यै ।
येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विष्वग्वियन्ति वनिनो न शाखाः ॥१॥

विद्वान् स्तोताओं के स्तोत्र वृक्ष की शाखाओं के समान समस्त दिशाओं में गमन करते हैं । वे स्तोतागण देवत्व प्राप्ति के निमित्त नमस्कारों सहित आपकी तथा द्युलोक एवं पृथिवीलोक की भी स्तुति करते हैं॥१॥

प्र यज्ञ एतु हेत्वो न सप्तिरुद्यच्छध्वं समनसो घृताचीः ।
स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधूर्ध्वा शोचींषि देवयून्यस्थुः ॥२॥

हमारा यह यज्ञ देवताओं की ओर तीव्रगामी अश्व के समान गमन करे । समान मन वाले आप घृत अर्पित करने वाले स्रुक् को उठाएँ । यज्ञ में देवों के लिए कुशाएँ बिछाएँ । हे अग्निदेव ! देवताओं की ओर जाने वाली आपकी ज्वालाएँ ऊर्ध्वगामी हों॥२॥

आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानौ देवासो बर्हिषः सदन्तु ।
आ विश्वाची विदथ्यामनक्त्वग्ने मा नो देवताता मृधस्कः ॥३॥

भरण-पोषण के योग्य बालक जिस प्रकार माता की गोद में बैठते हैं, उसी प्रकार देवगण कुशा के आसनों पर विराजें । हे अग्निदेव ! आपकी ज्वालाओं पर "जुहू" घृत का सिंचन करे । हे देव ! आप युद्ध में हमारे शत्रुओं को परास्त करें॥३॥

ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः ।
ज्येष्ठं वो अद्य मह आ वसूनामा गन्तन समनसो यति ष्ठ ॥४॥

यजन के योग्य देवता जल वृष्टि करते हुए हमारी सेवा स्वीकार करें। हे देवताओ ! आप सब समान मन से हमारे यज्ञ में पधारें एवं आज हमें श्रेष्ठ धन प्रदान करें॥४॥

एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्क्राः ।
राया युजा सधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

हे अग्निदेव ! आप प्रजाजनों में हमें धन प्रदान करें । हे बलवान् अग्निदेव ! हम सदा आपके आश्रय में रहकर धनवान्, हृष्ट-पुष्ट एवं अहिंसक वृत्ति वाले बनें । आप हमारा पालन एवं कल्याण करें॥५॥

सूक्त ४४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – दधिक्रा: । छंद – त्रिष्टुप, जगती

दधिक्रां वः प्रथममश्विनोषसमग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे ।
इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिमादित्यान्द्यावापृथिवी अपः स्वः ॥१॥

आपकी सुरक्षा के निमित्त हम सर्वप्रथम दधिक्रादेव का आवाहन करते हैं । तत्पश्चात् दोनों अश्विनीकुमारों, उषा, समिद्ध अग्नि और भगदेव का आवाहन करते हैं । इन्द्र, पूषा, ब्रह्मणस्पति, आदित्यगण, द्यावा-पृथिवी, जलदेवता और सूर्यदेव की स्तुति भी करते हैं॥१॥

दधिक्रामु नमसा बोधयन्त उदीराणा यज्ञमुपप्रयन्तः ।
इळां देवीं बर्हिषि सादयन्तोऽश्विना विप्रा सुहवा हुवेम ॥२॥

हम दधिक्रादेव को नमस्कारों द्वारा प्रवर्तित एवं प्रबोधित करते हुए, यज्ञ के निकट पहुँचते हैं । यज्ञ में इळा देवी की प्रतिष्ठा करके श्रेष्ठ, प्रार्थनीय विद्वज्जन, अश्विनीकुमारों को आवाहित करते हैं॥२॥

दधिक्रावाणं बुबुधानो अग्निमुप ब्रुव उषसं सूर्यं गाम् ।
ब्रध्नं मँश्चतोर्वरुणस्य बभ्रुं ते विश्वास्मद्दुरिता यावयन्तु ॥३॥

हम दधिक्रावा को संबोधित करते हुए अग्नि, उषी, सूर्य और भूमि अथवा गौ की स्तुति करते हैं । अहंकारी शत्रुओं के संहारक वरुणदेव के भूरे वर्ण वाले अश्व का स्तवन करते हैं । ये समस्त देवगण हमें सब प्रकार के पापों से बचाएँ॥३॥

दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वाग्रे रथानां भवति प्रजानन् ।
संविदान उषसा सूर्येणादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ॥४॥

सर्वप्रधान, तीव्रगामी दधिक्रा, मंतव्य को जानकर उषा, आदित्यगण, वसुगण और अंगिरा एवं सूर्यदेव से सहमत होकर स्वयं ही रथ के अग्रभाग में नियोजित हो जाते हैं॥४॥

आ नो दधिक्राः पथ्यामनक्त्वृतस्य पन्थामन्वेतवा उ ।
शृणोतु नो दैव्यं शर्धो अग्निः शृण्वन्तु विश्वे महिषा अमूराः ॥५॥

यजन मार्ग से गमन के लिए दधिक्रादेव हमारे मार्ग को जल से सीचें । दिव्य रूप वाले वे अग्निदेव एवं समस्त बलवान् विद्वान् हमारी प्रार्थना सुनें॥५॥

सूक्त ४५

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – सविता । छंद – त्रिष्टुप

आ देवो यातु सविता सुरत्नोऽन्तरिक्षप्रा वहमानो अश्वैः ।
हस्ते दधानो नर्या पुरूणि निवेशयञ्च प्रसुवञ्च भूम ॥१॥

जो देव उत्तम धन को धारण करते हैं, अपने तेज से अन्तरिक्ष को प्रकाशित करते हैं एवं हरित अश्व जिनके रथ को खींचते हैं, वे सवितादेव हमारे यज्ञ में पधारे । सवितादेव मनुष्य के हितसाधक धन को अपने हाथों (किरणों) में धारण किये रहते हैं। ये देव प्राणियों को धारण करते हैं एवं उन्हें कर्म की प्रेरणा प्रदान करते हैं॥१॥

उदस्य बाहू शिथिरा बृहन्ता हिरण्यया दिवो अन्ताँ अनष्टाम् ।
नूनं सो अस्य महिमा पनिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम् ॥२॥

ये स्वर्णपाणि, दानशील सवितादेव द्युलोक में अन्त तक संव्याप्त हैं। इन देव की इस महिमा का हम गान करते हैं। ये सवितादेव मनुष्यों को शुभ कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करें॥२॥

स घा नो देवः सविता सहावा साविषद्वसुपतिर्वसूनि ।
विश्रयमाणो अमतिमुरूचीं मर्तभोजनमध रासते नः ॥३॥

धन के स्वामी, तेजस्वी सवितादेव हमें धन प्रदान करें । वे अति विशाल स्वरूप वाले देव हम मानवोचित भोग्य सामग्री एवं धन प्रदान करें॥३॥

इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगभस्तिमीळते सुपाणिम् ।
चित्रं वयो बृहदस्मे दधातु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥४॥

उत्तम जिह्वा वाले, समस्त धन से सम्पन्न, उत्तम हाथो (किरणा) वाले सवितादेव की हम इन स्तोत्री द्वारा स्तुति करते हैं॥४॥

सूक्त ४६

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – रुद्र: । छंद – जगती, त्रिष्टुप

इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाव्ने ।
अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः ॥१॥

ये स्तोत्र सुदृढ़ धनुषधारी, शीघ्रगामी बाण छोड़ने वाले, अजेय, तीक्ष्णास्त्रधारी एवं अन्न से पूर्ण रुद्रदेव को तुष्ट करे । वे इन्हे (हमारे स्तोत्रों को) सुने॥१॥

स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति ।
अवन्नवन्तीरुप नो दुरश्चरानमीवो रुद्र जासु नो भव ॥२॥

हे रुद्रदेव ! आपको भौतिक एवं दिव्य विभूतियों के द्वारा जाना जाता है। आप सबको सुखी-सम्पन्न बनाते हुए, हमें नीरोग बनाकर हमारे घर में निवास करें॥२॥

या ते दिद्युदवसृष्टा दिवस्परि क्ष्मया चरति परि सा वृणक्तु नः ।
सहस्रं ते स्वपिवात भेषजा मा नस्तोकेषु तनयेषु रीरिषः ॥३॥

हे स्वपिवात् (वायु के समान संचरणशील) रुद्रदेव ! आपके द्वारा संचरित अंतरिक्षीय विद्युत् हमें कष्ट न पहुँचाए। आपकी सहस्रों ओषधियाँ (रोगनाशक प्रवाह) हमारे बच्चों को क्षीण न करे॥३॥

मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य ।
आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥४॥

हे (रुद्र) देव ! ने हमें मारें और न हमारा त्याग करें । आपके क्रोध के बन्धन हमें ग्रसित न करें । प्राणियों द्वारा प्रशंसित कार्य में हमें भागीदार बनायें । कल्याणप्रद साधनों से हमारी रक्षा करें॥४॥

सूक्त ४७

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वशिष्ठ:
देवता – आप: । छंद – त्रिष्टुप

आपो यं वः प्रथमं देवयन्त इन्द्रपानमूर्मिमकृण्वतेळः ।
तं वो वयं शुचिमरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम ॥१॥

हे जलदेव ! देवत्व के इच्छुकों के द्वारा इन्द्रदेव के पीने के लिए भूमि पर प्रवाहित शुद्ध जल को मिलाकर सोमरस बनाया गया है । शुद्ध पापरहित, मधुर रसयुक्त सोम का हम भी पान करेंगे॥१॥

तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वोऽपां नपादवत्वाशुहेमा ।
यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाते तमश्याम देवयन्तो वो अद्य ॥२॥

हे जलदेवता ! आपका मधुर प्रवाह सोमरस में मिला है। उसे शीघ्रगामी अपांनपात् (अग्निदेव) सुरक्षित रखें उसी सोम के पान से वसुओं के साथ इन्द्रदेव मत्त होते हैं । हम देवत्व की इच्छावाले आज उसे प्राप्त करेंगे॥२॥

शतपवित्राः स्वधया मदन्तीर्देवीर्देवानामपि यन्ति पाथः ।
ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवज्जुहोत ॥३॥

ये जल देवता हर प्रकार से पवित्र करके तृप्ति सहित (प्राणियों में) प्रसन्नता भरते हैं। वे (जलदेव) यज्ञ में पधारते हैं, परन्तु विघ्न नहीं डालते । इसलिए नदियों के निरन्तर प्रवाह के लिए यज्ञ करते रहें॥३॥

याः सूर्यो रश्मिभिराततान याभ्य इन्द्रो अरदद्गातुमूर्मिम् ।
ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥४॥

जिस जल को सूर्यदेव अपनी रश्मियों के द्वारा बढ़ाते हैं एवं इन्द्रदेव के द्वारा जिन्हें प्रवाहित होने का मार्ग दिया गया है । हे सिन्धो (जल प्रवाहो) ! आप उन जलधाराओं से हमें धन-धान्य से परिपूर्ण करें तथा कल्याणप्रद साधनों से हमारी रक्षा करें॥४॥

सूक्त ४८

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – ऋभव: ४ विश्वे देवा: । छंद – त्रिष्टुप

ऋभुक्षणो वाजा मादयध्वमस्मे नरो मघवानः सुतस्य ।
आ वोऽर्वाचः क्रतवो न यातां विभ्वो रथं नर्यं वर्तयन्तु ॥१॥

हे कर्मकुशल धनवान् भुओ ! आप हमारे सोमरस से प्रसन्न हों । आपके कर्मकुशल समर्थ अश्व मनुष्यों के लिए हितकर मार्ग प्रशस्त करें॥१॥

ऋभुर्ऋभुभिरभि वः स्याम विभ्वो विभुभिः शवसा शवांसि ।
वाजो अस्माँ अवतु वाजसाताविन्द्रेण युजा तरुषेम वृत्रम् ॥२॥

हम आपके साथ रहकर कर्म-कुशल, ऐश्वर्यवान् एवं बलवान् होंगे । वाज नामक प्रभुदेव युद्ध में हमारी रक्षा करें । इन्द्रदेव का सहयोग प्राप्त कर हम वृत्र से बच सकेंगे॥२॥

ते चिद्धि पूर्वीरभि सन्ति शासा विश्वाँ अर्य उपरताति वन्वन् ।
इन्द्रो विभ्वाँ ऋभुक्षा वाजो अर्यः शत्रोर्मिथत्या कृणवन्वि नृम्णम् ॥३॥

वे वीर शत्रु की बड़ी सेना को उत्तम अस्त्र-शस्त्रों से युद्ध भूमि में पराजित करते हैं। ऐश्वर्यवान् श्रेष्ठ शिल्पियों-विश्वकर्मा आदि से सेवित, बलवान् शत्रु को पराभूत करने वाले आर्य इन्द्र और त्रभुदेव शत्रुओं का विनाश करते हैं॥३॥

नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः ।
समस्मे इषं वसवो ददीरन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥४॥

हे देवो ! हमें धन प्रदान करें तथा सभी एक विचार वाले ऋभुगण हमारी सुरक्षा करें । हमें अन्न प्रदान करके कल्याणकारी साधनों से सुरक्षित करें॥४॥

सूक्त ४९

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आप: । छंद – त्रिष्टुप

समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनाना यन्त्यनिविशमानाः ।
इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥१॥

समुद्र जिनमें ज्येष्ठ हैं, वे जल-प्रवाह सदा अंतरिक्ष से आने वाले हैं। इन्द्रदेव ने जिनका मार्ग प्रशस्त किया था, वे जलदेव यहाँ हमारी रक्षा करें॥१॥

या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः ।
समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥२॥

जो दिव्य जल आकाश से (वृष्टि के द्वारा प्राप्त होते हैं, जो नदियों में सदा गमनशील हैं, खोदकर जो (कुएँ आदि से) निकाले जाते हैं और

जो स्वयं स्रोतों के द्वारा प्रवाहित होकर पवित्रता बिखेरते हुए समुद्र की ओर जाते हैं, वे दिव्यतायुक्त पवित्र जल हमारी रक्षा करें॥२॥

यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम् ।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥३॥

सर्वत्र व्याप्त होकर सत्य और मिथ्या के साक्षी वरुणदेव जिनके स्वामी हैं, वे ही रसयुक्ता, दीप्तिमती, शोधिका जल देवियाँ हमारी रक्षा करें॥३॥

यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति ।
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥४॥

राजा वरुण और सोम जिस जल में निवास करते हैं, जिसमें विद्यमान सभी देवगण अन्न से आनन्दित होते हैं, विश्व-व्यवस्थापक अग्निदेव जिसमें निवास करते हैं। वे दिव्य जलदेव हमारी रक्षा करें॥४॥

सूक्त ५०

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – १ मित्रवरुणौ, २ अग्नि, ३ विश्वे देवा:, ४ नद्य: । छंद – जगती, अतिजगती, शक्करी

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं कुलाययद्विश्वयन्मा न आ गन् ।
अजकावं दुर्दशीकं तिरो दधे मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः ॥१॥

हे मित्रावरुण ! आप यहाँ (संसार में) हमारी रक्षा करें । कुलायत (एक स्थान पर घर बनाकर रहने वाले) अथवा विश्वयत (सर्वत्र फैलने वाले विष या विषैले जन्तु) हमारे निकट न आएँ । अजकाय (पशुओं के आकार वाले) अथवी कठिनाई से दिखने वाले (सूक्ष्म) छद्म से आघात करने वाले सपदि हमारे पदचाप को न पहचानें, हमसे दूर ही रहें॥१॥

यद्विजामन्परुषि वन्दनं भुवदष्ठीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत् ।
अग्निष्टच्छोचन्नप बाधतामितो मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः ॥२॥

हे अग्निदेव ! वंदन नाम का (जकड़न पैदा करने वाला) जो विष सन्धि स्थानों में रुक जाता है, जो विष "जानु" और "पैरों" की ग्रन्थियो को फुला देता है; हम सबसे उस विष को दूर रखें । हमारे पद चाप से छद्मगामी सर्प हमें न पहचान सकें॥२॥

यच्छल्मलौ भवति यन्नदीषु यदोषधीभ्यः परि जायते विषम् ।
विश्वे देवा निरितस्तत्सुवन्तु मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः ॥३॥

हे विश्वेदेवागण ! जो विष शाल्मली वृक्ष पर होता हैं, जो विष नदी जल एवं ओषधियों से उत्पन्न होता है, उसे दूर करें । छिपकर चलने वाले सर्पो से हमारी रक्षा करें॥३॥

याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीरनुदकाश्च याः ।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु ॥४॥

जो नदियाँ प्रवण देश (प्रवाह की दिशा में प्रवहमान हैं, जो उच्च और निम्न प्रदेशों में होकर बहती हैं, जो जल-शून्य अथवा आप्लावित होकर संसार को तृप्त करती हैं। वे सभी दिव्य नदियाँ शिपद रोग से बचाकर कल्याणकारी बने । सभी नदियाँ हमारी रक्षा करें॥४॥

सूक्त ५१

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आदित्या: । छंद – त्रिष्टुप

आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शंतमेन ।
अनागास्त्वे अदितित्वे तुरास इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः ॥१॥

हे आदित्यो ! आपकी कृपा से हमें नवीन एवं सदा सुख देने वाला घर प्राप्त हो । हमारी प्रार्थना सुनकर यज्ञ और यजमान को पापरहित दरिद्रता से मुक्त करें॥१॥

आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां मित्रो अर्यमा वरुणो रजिष्ठाः ।
अस्माकं सन्तु भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोममवसे नो अद्य ॥२॥

हे वेगवान् देव आदित्य, अदिति, वरुण, अर्यमा और मित्र ! आप प्रसन्न हों । आप समस्त विश्व के रक्षक हैं, आप हमारा हित करें । आप आज हमारे हित-साधन के लिए सोमपान करें॥२॥

आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्व ऋभवश्च विश्वे ।
इन्द्रो अग्निरश्विना तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥

हमने समस्त देवगणों, समस्त मरुद्गणों, सभी आदित्यों, सभी ऋभुओं, अश्विनीकुमारों, इन्द्र और अग्नि देवों की प्रार्थना की है । कल्याणकारी साधनों द्वारा वे सदा हमारी रक्षा करें॥३॥

सूक्त ५२

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आदित्या: । छंद – त्रिष्टुप

आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्देवत्रा वसवो मर्त्यत्रा ।
सनेम मित्रावरुणा सनन्तो भवेम द्यावापृथिवी भवन्तः ॥१॥

हे आदित्यगण ! हम आपके अपने हैं, आप हमें दुःखों से मुक्त रखें । हे वसुओ !देवों की शक्ति से मानवमात्र का कल्याण हो । हे मित्रावरुण देवो !आपके यजन से हम धन प्राप्त करें । हे द्यावा-पृथिवि !हम शक्तिशाली हों॥१॥

मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः ।
मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ॥२॥

मित्र और वरुण आदि देवगण में उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करें और हमारी सन्तानों को भी सुख देने वाले हों। हम आपके आत्मीय बनें, दूसरों

के पापों का फल न भोगें । हे वसुदेवो ! जिस (कर्म) के कारण आप विनाश करते हैं, वह कर्म हम न करें॥२॥

तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सवितुरियानाः ।
पिता च तन्नो महान्यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त ॥३॥

त्वरित गति से कार्य करने वाले अंगिरा ने सवितादेव की उपासना करके जिस दिव्य धन को प्राप्त किया था, उसी ऐश्वर्य को प्रजापति और देवगण हमें प्रदान करें॥३॥

सूक्त ५३

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – द्यावा पृथ्वी । छंद – त्रिष्टुप

प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी नमोभिः सबाध ईळे बृहती यजत्रे ।
ते चिद्धि पूर्वे कवयो गृणन्तः पुरो मही दधिरे देवपुत्रे ॥१॥

जिन विशाल देव-जननी द्यौ और पृथ्वी की पूर्व काल में ऋषियों ने स्तुति की थी, उनसे हम यज्ञ और अन्न के द्वारा कष्ट दूर करने की प्रार्थना करते हैं॥१॥

प्र पूर्वजे पितरा नव्यसीभिर्गीर्भिः कृणुध्वं सदने ऋतस्य ।
आ नो द्यावापृथिवी दैव्येन जनेन यातं महि वां वरूथम् ॥२॥

हे याजको ! मातृ-पितृ रूपा द्यावा-पृथिवीं को यज्ञ के अग्र भाग में स्थापित नवीन स्तोत्रों द्वारा सुपूजित करो। हे द्यावा-पृथिवि ! देवों के साथ दिव्य ऐश्वर्य देने के लिए आप हमारे पास पधारें॥२॥

उतो हि वां रत्नधेयानि सन्ति पुरूणि द्यावापृथिवी सुदासे ।
अस्मे धत्तं यदसदस्कृधोयु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥

हे द्यावा-पृथिवि ! आपके पास जो अनेक प्रकार का दिव्य, रमणीय और अक्षय धन है, वह हमें प्रदान कर तथा कल्याण के साथ हमारा पालन करें॥३॥

सूक्त ५४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – वास्तोष्पति: छंद – त्रिष्टुप

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥

हे वास्तोष्पत (गृह-पालक देव) ! आप हमें जगाएँ । हमारे घर में पुत्र-पौत्र आदि द्विपदों, गौ, अश्व आदि चतुष्पदा को नीरोग एवं सुखी करें । जो धन हम आपसे माँगे, वह हमें प्रदान करे॥१॥

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो ।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व ॥२॥

हे वास्तोपते ! आप हमारे लिए कल्याणकारी धन का विस्तार करें । हे सोम ! हम आपकी कृपा से गौओ और घोड़ा के साथ नीरोग रहें । आप हमारा पुत्रवत् पालन करें॥२॥

वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या ।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥

हे वास्तोष्पते ! हम आपसे सुखकर, रमणीय एवं ऐश्वर्य-सम्पन्न स्थान प्राप्त करें । हमें प्राप्त हुए और प्राप्त होने वाले श्रेष्ठ धन की आप रक्षा करें । हमें सदा कल्याणकारी साधनों में सुरक्षित रखें॥३॥

सूक्त ५५

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – वास्तोष्पति: २-८ इन्द्र:। छंद – १ गायत्री, २-४ उपरिष्टाद्वृहती, ५-८ अनुष्टुप

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् ।
सखा सुशेव एधि नः ॥१॥

हे वास्तोष्पते (गृहपालको ! आप हमारे हर प्रकार से मित्र हैं, हमारे हरे प्रकार के रोगों का नाश करें॥१॥

यदर्जुन सारमेय दतः पिशङ्ग यच्छसे ।
वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्वेषु बप्सतो नि षु स्वप ॥२॥

श्वेत सरमा (देव-कुक्कुरी) के वंशधर पीले वर्ण वाले हे वास्तोपति देव !जब आप दाँत दिखाते हैं, तो वे शस्त्रों की तरह चमकते हैं । आहार के समय वे विशेष शोभा पाते हैं ऐसे (दाँतों वाले) देव आप सुख से सो जाएँ॥२॥

स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनःसर ।
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान्दुच्छुनायसे नि षु स्वप ॥३॥

हे सरमा के पुत्र ! आप चोरों-तस्करों के पास पुनः-पुनः जाएँ। आप इन्द्रदेव के भक्तों के निकट क्यों जाते है ? हमारे कार्यों में व्यवधान क्यों डालते हैं ? अभी आप भली प्रकार सो जाएँ॥३॥

त्वं सूकरस्य दर्दृहि तव दर्दर्तु सूकरः ।
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान्दुच्छुनायसे नि षु स्वप ॥४॥

(श्वान के प्रति) तुम शूकर को इराओं, शूकर तुम्हें डराये । इन्द्र के भक्तों (श्रेष्ठ कर्मियों) की ओर क्यों दौड़ते हो ? हमें परेशान ने करो, जाकर सो जाओ॥४॥

सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः ।
ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः ॥५॥

(श्वान के प्रति) तुम्हारी माँ शयन करे । तुम्हारे पिता सोएँ । स्वयं (श्वान) तुम भी सो जाओ । गृहस्वामी, सभी बान्धव एवं परिकर के सब लोग सो जाएँ॥५॥

य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः ।
तेषां सं हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा ॥६॥

जो यहाँ ठहरता एवं आता-जाता रहता है और हमारी ओर देखता है, उनकी दृष्टि को हम राज-प्रासाद की तरह निश्चल बनाएँ॥६॥

सहस्रश्रृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् ।
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि ॥७॥

सहस्र श्रृंगो (रश्मियों) वाला वृषभ (वर्षा करने वाला सूर्य) समुद्र से ऊपर आ गया है । शत्रु का पराभव करने वाले उन (सूर्य) के बल से हम (स्तोतागण) सबको सुख़ से शयन करा देते हैं॥३॥

प्रोष्ठेशया वह्येशया नारीर्यास्तल्पशीवरीः ।
स्त्रियो याः पुण्यगन्धास्ताः सर्वाः स्वापयामसि ॥८॥

जो नारियाँ घर के आँगन में शयन करती हैं । जो राह चलते वाहन पर सोने वाला है, जो बिछाने पर माता हैं, जो उत्तम गंध से सुवासित होकर श्रेष्ठ शय्याओं पर सोती हैं । हम उन्हीं की तरह से सभी स्त्रियों को सुखपूर्वक मुला देते हैं॥८॥

सूक्त ५६

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – मरुत::। छंद – त्रिष्टुप, १-११ द्विपदा विराट

क ईं व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अध स्वश्वाः ॥१॥

एक ही तरह के गृह में रहने वाले, कान्तियुक्त, उत्तम घोड़ों से युक्त, सबके हितेषी ये रुद्रगण कोन हैं ?॥१॥

नकिर्ह्येषां जनूंषि वेद ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम् ॥२॥

अपने जन्म के बारे में ये (मरुद्गण) स्वयं जानते हैं। दूसरा कोई नहीं जानता॥२॥

अभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त वातस्वनसः श्येना अस्पृध्रन् ॥३॥

अपने दिव्य साधनों को साथ लेकर जब ये मिलते हैं, उस समय श्येन (बाज़) पक्षी की तरह आपस में । प्रतिस्पर्धा करते हैं॥३॥

एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्निर्यदूधो मही जभार ॥४॥

बुद्धिमान् मनुष्य इन श्वेतवर्ण वाले मरुतों को जानते हैं । मरुतों की माता ने इन्हें अंतरिक्ष में अथवा अपने उदर में धारण कर रखा था॥४॥

सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात्सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम् ॥५॥

वीर मरुतों के कारण वे मानवी शक्ति को बढ़ाने वाली और शत्रुहन्ता वीर पुत्र वाली हैं॥५॥

यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया सम्मिश्ला ओजोभिरुग्राः ॥६॥

वे वीर मरुद्गण आवश्यकता पड़ने पर (शत्रु पर) प्राण-घातक हमला करने वाले हैं। श्रेष्ठ अलंकारों से युक्त एवं तेजस्वी हैं॥६॥

उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्यधा मरुद्भिर्गणस्तुविष्मान् ॥७॥

हे मरुतो ! आप बुद्धिमान् हैं । आपके कारण यह (देव) संगठन बलवान् हुआ । आपका बल स्थिर एवं तेज उग्र है॥७॥

शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः ॥८॥

हे मरुद्गणो ! आप शोभायमान बल वाले हैं। आप मन से (शत्रुहनन के निमित्त) क्रोध (भी) करते हैं और आपका दूसरों को अभिभूत करने वाला वेग वृक्षादिकों को कम्पित करके उसी तरह शब्दायमान कर देता है, जैसे (मननशील) मुनिगण (स्तोत्रादि पाठ के समय) शब्दोच्चार करते हैं॥८॥

सनेम्यस्मद्युयोत दिद्युं मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ्नः ॥९॥

हे मरुद्गणो ! आपके शत्रु-विनाशक, क्रूर-चिन्तन से हमारा अहित न हो। हमें श्रेष्ठ शक्ति दें । आपके तेजस्वी शस्त्र का हम पर आघात न हो॥९॥

प्रिया वो नाम हुवे तुराणामा यत्तृपन्मरुतो वावशानाः ॥१०॥

हे वीर मरुत् ! आप वेगपूर्वक कार्य करने वाले हैं। हम प्रिय वाणी से आपके श्रेष्ठ नामों को लेकर पुकारते हैं, जिससे आप प्रसन्न हों॥१०॥

स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वः शुम्भमानाः ॥११॥

गतिमान्, श्रेष्ठ वीर मरुत् अस्त्र-शस्त्रों और आभूषणों को धारण करके अतिशय सुशोभित हो रहे हैं॥११॥

शुची वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः ।
ऋतेन सत्यमृतसाप आयञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः ॥१२॥

हे वीर मरुतो ! आप पवित्र अन्न से पोषित, पवित्र जीवन वाले हैं। आपके लिए हम हिंसारहित यज्ञ करते हैं, क्योंकि आप सत्य के व्यवहार से सत्यमय जीवन जीकर अन्यों को भी श्रेष्ठ बनाते हैं॥१२॥

अंसेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणाः ।
वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः ॥१३॥

हे मरुत् वीरो ! आपके कंधों पर आभूषण एवं वक्ष पर सोने के हार सुशोभित हैं। वर्षा के समय आप बिजली की तरह चमकीले अस्त्रों की वर्षा करके अपनी स्वधा शक्ति का परिचय देते हैं। जिस प्रकार वर्षा के समय बिजली शोभा पाती है, उसी प्रकार (शत्रुओं पर) आयुधों की वर्षा करके आप अपनी स्वधा शक्ति का परिचय देते हैं॥१३॥

प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र नामानि प्रयज्यवस्तिरध्वम् ।
सहस्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्वम् ॥१४॥

हे पूज्य मरुतो ! आपका प्रखर तेज अन्तरिक्ष में प्रवाहित रहता है । आप जल की वृष्टि करें । हजारों गृहो के गृहस्वामियों द्वारा प्रदत्त इस यज्ञ भाग को ग्रहण करें॥१४॥

यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथेत्था विप्रस्य वाजिनो हवीमन् ।
मक्षू रायः सुवीर्यस्य दात नू चिद्यमन्य आदभदरावा ॥१५॥

हे मरुत् वीर ! यदि आप तेजस्वी, ज्ञानी मनुष्यों के द्वारा यज्ञ में की गई स्तुति को भली प्रकार जानते हों, तो श्रेष्ठ पुत्रयुक्त ऐसा धन प्रदान करें, जो शत्रु के द्वारा विनष्ट न हो॥१५॥

अत्यासो न ये मरुतः स्वञ्चो यक्षदृशो न शुभयन्त मर्याः ।
ते हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीळिनः पयोधाः ॥१६॥

मरुद्गण तीव्रगामी अश्व की तरह निरन्तर गमनशील हैं । वे यज्ञ दर्शक की तरह पवित्र मन वाले, राजकुमारों जैसे सुन्दर एवं खेलने वाले शिशु की तरह हैं । वे जल के धारक हैं॥१६॥

दशस्यन्तो नो मरुतो मृळन्तु वरिवस्यन्तो रोदसी सुमेके ।

आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु सुम्नेभिरस्मे वसवो नमध्वम् ॥१७॥

शत्रुओं का संहार कर द्युलोक एवं पृथिवी लोक को संरक्षण देने वाले मरुद्गण हमें सुखी बनाएँ। आपके गो (मेघ स्थित जल) एवं मनुष्यों के लिए घातक शस्त्र हमारे पास न आएँ । हमें सुख के साधन प्रदान करें॥१७॥

आ वो होता जोहवीति सत्तः सत्राचीं रातिं मरुतो गृणानः ।
य ईवतो वृषणो अस्ति गोपाः सो अद्वयावी हवते व उक्थैः ॥१८॥

हे वीर मरुतो ! यज्ञशाला में बैठे हुए याजक आपकी दानवीरता की प्रशंसा करके बार-बार आपका आवाहन करते हैं। हे वर्षणशील (कामनाओं की पूर्ति करने वाले) ! जो याजक कर्मनिष्ठ एवं यजमान का संरक्षक हैं, वह माया-मुक्त होकर आपकी स्तुति करता है॥१८॥

इमे तुरं मरुतो रामयन्तीमे सहः सहस आ नमन्ति ।
इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति ॥१९॥

ये मरुद्गण त्वरित गति से कार्य करने वाले यजमान से प्रसन्न होते हैं, अपने पराक्रम से दूसरे बलवानों को झुका देते हैं (अभिभूत कर देते हैं), स्तोतागणों की हिंसकों (व्यक्तियों-प्राणियों) से रक्षा करते हैं तथा यज्ञ न करने वालों से अत्यधिक रुष्ट हो जाते हैं॥१९॥

इमे रध्रं चिन्मरुतो जुनन्ति भृमिं चिद्यथा वसवो जुषन्त ।
अप बाधध्वं वृषणस्तमांसि धत्त विश्वं तनयं तोकमस्मे ॥२०॥

ये मरुद्गण धनी और दरिद्र दोनों को समान रूप से संरक्षण प्रदान करते हैं। मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाले हे वीरो ! आप हमें अंधकार से दूर कर पुत्र-पौत्रादि सहित सब प्रकार के सुख प्रदान करें॥२०॥

मा वो दात्रान्मरुतो निरराम मा पश्चाद्दघ्म रथ्यो विभागे ।
आ नः स्पार्हे भजतना वसव्ये यदीं सुजातं वृषणो वो अस्ति ॥२१॥

हे रथारूढ़ मरुतो ! अपनी सम्पत्ति-दान के समय आप हमें अलग न करें। अपनी दिव्य सम्पत्ति में हमें भी भागीदार बनाएँ॥२१॥

सं यद्धनन्त मन्युभिर्जनासः शूरा यह्वीष्वोषधीषु विक्षु ।
अध स्मा नो मरुतो रुद्रियासस्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः ॥२२॥

हे रुद्रपुत्र मरुतो ! जिस समय विक्रमशाली योद्धा उत्साहित होकर नदियों में, ओषधि क्षेत्रों एवं प्रज्ञाओं में शत्रुओं की तरह क्रोधसहित आक्रमण करें, तब उस संग्राम में आप हमें संरक्षण प्रदान करें॥२२॥

भूरि चक्र मरुतः पित्र्याण्युक्थानि या वः शस्यन्ते पुरा चित् ।
मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साळ्हा मरुद्भिरित्सनिता वाजमर्वा ॥२३॥

हे मरुतो !हमारे पूर्वजों के लिए आपने अनेक कार्य किए हैं । पहले भी अपने प्रशंसित कार्य किए हैं। ओजस्वी व्यक्ति आपसे सहयोग पाकर शत्रुजयी होता हैं । आपकी कृपा से स्तोतागण अन्नादि प्राप्त करते हैं॥२३॥

अस्मे वीरो मरुतः शुष्म्यस्तु जनानां यो असुरो विधर्ता ।
अपो येन सुक्षितये तरेमाध स्वमोको अभि वः स्याम ॥२४॥

हे मरुतो ! हमें (ऐसी) बलवान् संतति प्राप्त हो, जो बुद्धिमान् और शत्रुओं का विनाश करने वाली हो । जिस की सहायता से हम शत्रुओं का विनाश कर सकें और आपकी कृपा से अपने अभीष्ट स्थान पर प्रतिष्ठित हो सकें॥२४॥

तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२५॥

इन्द्र, वरुण, मित्र, अग्नि, जल, ओषधि और वृक्षदेव हमारी प्रार्थना स्वीकार करें । मरुतों की छत्रछाया में हम सुखी रहें । आप सब हमें कल्याणकारी साधनों से सुरक्षित रखें॥२५॥

सूक्त ५७

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – मरुत:। छंद – त्रिष्टुप

मध्वो वो नाम मारुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शवसा मदन्ति ।
ये रेजयन्ति रोदसी चिदुर्वी पिन्वन्त्युत्सं यदयासुरुग्राः ॥१॥

हे यजनीय मरुतो ! आपके सुन्दर नामों से स्तोतागण प्रार्थना करते हैं। आप पृथिवी और अंतरिक्ष को कम्पायमान कर सर्वत्र गमनशील हैं । आपकी कृपा से सर्वत्र जल वृष्टि होती हैं॥१॥

निचेतारो हि मरुतो गृणन्तं प्रणेतारो यजमानस्य मन्म ।
अस्माकमद्य विदथेषु बर्हिरा वीतये सदत पिप्रियाणाः ॥२॥

हे मरुतो ! आप अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें ढूंढकर उनकी मनोकामना पूरी करते हैं। आप हम पर प्रसन्न होकर, हमारी यज्ञशाला में कुशों के बने आसन पर विराजमान होकर सोमपान करें॥२॥

नैतावदन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मैरायुधैस्तनूभिः ।
आ रोदसी विश्वपिशः पिशानाः समानमञ्ज्यञ्जते शुभे कम् ॥३॥

ये मरुद्गण जितने उदारचेता हैं, वैसा कोई नहीं है। ये वीर आभूषण, वस्त्र एवं आयुधों से अपने तेज को प्रदीप्त करते हैं। आकाश और पृथिवी को सुशोभित करते हैं॥३॥

ऋधक्सा वो मरुतो दिद्युदस्तु यद्व आगः पुरुषता कराम ।
मा वस्तस्यामपि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ॥४॥

हे पूज्य वीरो ! आपके निमित्त हमसे जो गलतियाँ हुई हों, उन्हें क्षमा करे । हम आपको कोपभाजन न बने । आप हमें अन्नदान करने वाली बुद्धि प्रदान करें॥४॥

कृते चिदत्र मरुतो रणन्तानवद्यासः शुचयः पावकाः ।
प्र णोऽवत सुमतिभिर्यजत्राः प्र वाजेभिस्तिरत पुष्यसे नः ॥५॥

हे अनिन्दनीय पवित्र मरुतो ! हमारी यज्ञशाला में आप विहरण करें । हे पृज्य वीरो ! आपकी श्रन युद्ध हमारे कल्याण में लगी रहे । हमें आपकी सुन्दर स्तुति करते हैं । हमें अन्न के द्वारा पाषा प्रदान करे ॥५॥

उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हवींषि ।
ददात नो अमृतस्य प्रजायै जिगृत रायः सूनृता मघानि ॥६॥

नेतृत्व प्रदान करने वाले मरुद्गण अनेक नामों से प्रशंसित होकर हमारे द्वारा हमारी प्रज्ञा (मंगानो) । अमृत प्रदान करें तथा याजकों को सन्मार्ग से प्राप्त होनेवाली महान् धन प्रदान करें॥६॥

आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सूरीन्त्सर्वताता जिगात ।
ये नस्त्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे प्रशंसनीय मरुतो ! आप सर्वत्र व्याप्त होने वाले यज्ञ में ज्ञानियों की ओर अभिमुख हो । स्तानाओं का सदा कल्याण करें । ये स्वयं ही यजमान को संतानादि से परिपूर्ण बना देत है । आप कल्याणकारी साधनों से हमें सुरक्षा प्रदान करें॥७॥

सूक्त ५८

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – मरुत:। छंद – त्रिष्टुप

प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान् ।
उत क्षोदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निर्ऋतेरवंशात् ॥१॥

हे स्तोताओ ! आप देवस्थान में निवास करने वाले मरुतों की पूजा करो। जो अपने दिव्य प्रभाव से विनाशकारी आपदाओं से बचाते हैं और पृथिवीं तथा अन्तरिक्ष में स्वर्गीय परिस्थितियाँ बनाते हैं॥१॥

जनूश्चिद्वो मरुतस्त्वेष्येण भीमासस्तुविमन्यवोऽयासः ।
प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वो यामन्भयते स्वर्दृक् ॥२॥

हे विकराल रूप वाले मरुतो ! आपका जन्म रुद्रदेव से हुआ है । आपका बल और तेज दिग्दिगत में व्याप्त है। आपके प्रवाहित होने पर सूर्यदेव पर दृष्टि रखने वाला (सारा) जगत् भयभीत हो जाता है॥२॥

बृहद्वयो मघवद्भ्यो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः ।
गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेत ॥३॥

हे मरुद्गण ! आप यज्ञ करने वाले को धन-धान्य से परिपूर्ण करे । हमारी स्तुतियों से आप प्रसन्न हो । जिस मार्ग से आप जाते हैं, उसका अनुसरण करने पर प्राणी समुदाय विनष्ट नहीं होता। आप हमें मनोभिलषित ऐश्वर्य प्रदान करें॥३॥

युष्मोतो विप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अर्वा सहुरिः सहस्री ।
युष्मोतः सम्राळुत हन्ति वृत्रं प्र तद्वो अस्तु धूतयो देष्णम् ॥४॥

हे मरुत् वीरो ! आपके द्वारा रक्षित स्तोता (ज्ञानी) सहस्रों धनों का स्वामी होता है। आपके द्वारा संरक्षित चंचल (अश्व) शत्रुजयी होता है । आपसे संरक्षण प्राप्त कर राजा भी शत्रुओं का विनाश करता है। आपके द्वारा दिया गया धन वृद्धि को प्राप्त हो॥४॥

ताँ आ रुद्रस्य मीळ्हुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः पुनर्नः ।
यत्सस्वर्ता जिहीळिरे यदाविरव तदेन ईमहे तुराणाम् ॥५॥

मनोभिलषित ऐश्वर्य प्रदान करने वाले रुद्रपुत्र मरुतों की हम उपासना करते हैं। बार-बार हमें आपका संरक्षण प्राप्त होता है । शीघ्रता में हुए ज्ञाताज्ञात पाषों को हम आपकी प्रार्थना से धो देंगे॥५॥

प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोनामिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त ।
आराच्चिद्द्वेषो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हम ऐश्वर्यवान् मरुतों की स्तुति करते हैं। वे हमारी प्रार्थना से प्रसन्न हों । हमारे शत्रुओं को दूर से ही हटा दे । हमें सदा श्रेष्ठ साधनों से सुरक्षित रखें॥६॥

सूक्त ५९

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – १-११ मरुत:, १२ रुद्र । छंद – प्रगाथ

यं त्रायध्व इदमिदं देवासो यं च नयथ ।
तस्मा अग्ने वरुण मित्रार्यमन्मरुतः शर्म यच्छत ॥१॥

हे अग्नि, वरुण, मित्र, अर्यमा और मरुत् देवो ! आप जिन्हें श्रेष्ठ मार्ग पर चलाते हों, उन्हें सुख भी प्रदान करें । अपने उपासकों को भय से मुक्त करें॥१॥

युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः ।
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ॥२॥

हे देवो ! आपसे संरक्षित होकर शुभ दिवस में जो यज्ञ करता है, वह शत्रुओं को पराजित करता है । जो बहुत सा द्रव्य प्रदान करता है, वह अपनी हर तरह से वृद्धि (उन्नति) करता हैं॥२॥

नहि वश्चरमं चन वसिष्ठः परिमंसते ।
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः ॥३॥

हे मरुतो ! आपमें जो कनिष्ठ (मन्द) हैं, उनकी भी स्तुति वसिष्ठ ऋषि करते हैं। आज इ. इस यज्ञ में एक साथ बैठकर आप सभी (उनचासों मरुत्) सोमरस का पान करे॥३॥

नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अराध्वं नरः ।
अभि व आवर्त्सुमतिर्नवीयसी तूयं यात पिपीषवः ॥४॥

हे नेतृत्व क्षमता-सम्पन्न मरुद्गण ! आपसे संरक्षित व्यक्ति युद्ध में आपके . रनों से सुरक्षित रहता है। आपका नित-नव संरक्षण में प्राप्त हो । यथेच्छ सोम पान के लिए आप हमारे पास पधारें ॥४॥

ओ षु घृष्विराधसो यातनान्धांसि पीतये ।
इमा वो हव्या मरुतो ररे हि कं मो ष्वन्यत्र गन्तन ॥५॥

हे मरुद्गण ! आपकी शक्ति संगठित हैं । हव्य ग्रहण करने के लिए आप यहाँ पधारे, अन्यत्र कहीं न ज्ञाएँ॥५॥

आ च नो बर्हिः सदताविता च नः स्पार्हाणि दातवे वसु ।

असेधन्तो मरुतः सोम्ये मधौ स्वाहेह मादयाध्वै ॥६॥

आप हमारे बिछाये हुए कुशाओं पर विराजमान हो और मनोभिलषित सम्पत्ति प्रदान करें। किसी को कष्ट न देने वाले हे वीरो ! इस यज्ञ में आप अपना सोमरस रूपी स्वाहुति भाग स्वीकार करें और आनन्दित हों॥६॥

सस्वश्चिद्धि तन्वः शुम्भमाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपप्तन् ।
विश्वं शर्धो अभितो मा नि षेद नरो न रण्वाः सवने मदन्तः ॥७॥

अविज्ञात रूप से रहने वाले मरुद्गण नील वर्ण वाले हंसों की तरह अलंकारों से सुसज्जित होकर सोमपान कर आनन्दित होते हैं। रमणीय पुरुषों की तरह मरुद्गण हमारे चारों ओर बैठे॥७॥

यो नो मरुतो अभि दुर्हृणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति ।
द्रुहः पाशान्प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठेन हन्मना हन्तना तम् ॥८॥

हे वीर मरुतो ! जो अशिष्ट, तिरस्कृत करने वाले व्यक्ति हमारे मन को व्यग्र करना चाहते हैं, जो लोग पापा से द्रोह करने वाले वरुण के पशि में हमें बाँधना चाहते हैं, उन्हें आप अपने तीक्ष्ण आयुधों से नष्ट कर दें॥८॥

सांतपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन ।
युष्माकोती रिशादसः ॥९॥

शत्रुओं को संताप देने वाले तथा उनका नाश करने वाले हे मरुतो ! आप इस हव्य को ग्रहण करके हमें संरक्षण प्रदान करें॥९॥

गृहमेधास आ गत मरुतो माप भूतन ।
युष्माकोती सुदानवः ॥१०॥

गृहस्थ धर्मपालक, दानवीर हे मरुतो ! आप अपने रक्षा-साधनों के साथ यहाँ पधारें तथा हमसे दूर न जाएँ॥१०॥

इहेह वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः ।
यज्ञं मरुत आ वृणे ॥११॥

सूर्य के समान तेजस्वी, स्वयं प्रवृद्ध- बल से युक्त, ज्ञानी है मरुतो ! यहाँ यज्ञ में हम आपका आवाहन करते हैं॥११॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥१२॥

हम सुरभित पुण्य, कीर्ति एवं पुष्टिवर्धक (पोषण साधनों को बढ़ाने वाले) तथा तीन प्रकार से संरक्षण देने वाले (त्र्यम्बक) भगवान् की उपासना करते हैं। वे रुद्रदेव हमें उर्वारुक फल (ककड़ी-खरबूजा आदि) की तरह मृत्युबन्धन से मुक्त करें, (परन्तु) अमरता के सूत्रों से दूर न करें॥१२॥

सूक्त ६०

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – १ सूर्य, २-१२ मित्रावरुणौ। छंद – त्रिष्टुप

यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा उद्यन्मित्राय वरुणाय सत्यम् ।
वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन्गृणन्तः ॥१॥

हे सूर्यदेव ! आज उदय होते ही अनुष्ठान के समय आप हमें निष्पाप बना दें । हे अदिते ! हम मित्रावरुण देवों के प्रिय पात्र हों । हे अर्यमन ! हम आपकी कृपा के प्रिय पात्र हों । हे अर्यमन ! आपकी कृपा पाने के लिए हम प्रार्थना करते हैं॥१॥

एष स्य मित्रावरुणा नृचक्षा उभे उदेति सूर्यो अभि ज्मन् ।
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ॥२॥

हे मित्र और वरुण देवों ! ये सूर्यदेव पृथ्वी और अन्तरिक्ष में उदय होकर सवका पोषण करते हुए मनुष्यों के अच्छे बुरे कर्मों को देखते हैं॥२॥

अयुक्त सप्त हरितः सधस्थाद्या ईं वहन्ति सूर्यं घृताचीः ।
धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ॥३॥

हे मित्रावरुण देवों ! जलदाता, हरणशील, सात घोड़ों द्वारा सूर्यदेव का रथ चलता है । वे आप दोनों को सन्तुष्ट करके गोपालन करने वाले की तरह प्राणिजगत् का पालन करते हैं॥३॥

उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुरा सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः ।
यस्मा आदित्या अध्वनो रदन्ति मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ॥४॥

हे मित्रावरुण देवों ! पवित्र हव्यादि अन्न आपको समर्पित है। मित्र, वरुण और अर्यमा देव के बनाए रास्ते से सूर्य भगवान् अन्तरिक्ष में गमन करते हैं॥४॥

इमे चेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति ।
इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः ॥५॥

ये आदित्य, मित्र, वरुण, अर्यमा देवगण पापनाशक एवं सर्वत्र मंगल करने वाले हैं । ये अदितिपुत्र किसी से डरने वाले नहीं हैं । सदैव सुख प्रदान करने वाले ये यज्ञ द्वारा वृद्धि पाते हैं॥५॥

इमे मित्रो वरुणो दूळभासोऽचेतसं चिच्चितयन्ति दक्षैः ।
अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस्तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति ॥६॥

ये मित्र, वरुण और अर्यमादेव किसी से दबाये नहीं जा सकते । ये मूर्खों को भी ज्ञानवान बनाते हैं। बुद्धिमान कर्मनिष्ठ व्यक्ति को आगे बढ़ाते और पापियों को दण्ड देते हैं॥६॥

इमे दिवो अनिमिषा पृथिव्याश्चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति ।
प्रव्राजे चिन्नद्यो गाधमस्ति पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्षन् ॥७॥

ये आकाश और पृथ्वीलोक की साड़ी जानकारियाँ रखने वाले अज्ञानी को भी ज्ञानवान बनाकर श्रेष्ठ कर्मों में लगा देते हैं। इनकी प्रबल सामर्थ्य से गहरी नदियों में भी भूतल (ठोस आधार) मिल जाता है। ऐसे देव हमें कर्मों से पार लगायें॥७॥

यद्गोपावददितिः शर्म भद्रं मित्रो यच्छन्ति वरुणः सुदासे ।
तस्मिन्ना तोकं तनयं दधाना मा कर्म देवहेळनं तुरासः ॥८॥

मित्र, अर्यमा और वरुणदेव याजकों को जो कल्याणकारी और स्तुत्य सुख प्रदान करते हैं, वही सुख हमारी संततियों के लिए प्राप्त हो । शीघ्रता से कार्य करते समय हम कोई भूल करें॥८॥

अव वेदिं होत्राभिर्यजेत रिपः काश्चिद्वरुणध्रुतः सः ।
परि द्वेषोभिरर्यमा वृणक्तूरुं सुदासे वृषणा उ लोकम् ॥९॥

यज्ञ वेदी पर बैठकर जो देवों की प्रार्थना नहीं करता, वह वरुणदेव द्वारा मारा जाता है । मित्रावरुणदेव श्रेष्ठ दान करने वालों को सद्गति प्रदान करें तथा राक्षसों से बचाएँ॥९॥

सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेष्येषामपीच्येन सहसा सहन्ते ।
युष्मद्भिया वृषणो रेजमाना दक्षस्य चिन्महिना मृळता नः ॥१०॥

इन वीरों की संगति गूढ़ तथा तेजस्वी कही गई है। ये अपने गुप्त बल से शत्रु को पराजित करते हैं तथा भय से कंपाते हैं। ऐसे देव हमें उसी बल से सुखी बनाएँ॥१०॥

यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते वाजस्य सातौ परमस्य रायः ।
सीक्षन्त मन्युं मघवानो अर्य उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु ॥११॥

जा यजमान अन्न-धन दान के समय श्रेष्ठ स्तुति करता है, उसे मित्रादि देवगण ध्यानपूर्वक श्रवण करते हैं तथा स्तोतागणों को विशाल निवास प्रदान करते हैं॥११॥

इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१२॥

हे मित्रावरुण देवों ! यह उपासना, यज्ञादि कर्म आपको प्रसन्न करने के लिए हैं । आप सभी आपत्तियों से बचाकर, श्रेष्ठ साधनों से हमारा पालन करें॥१२॥

सूक्त ६१

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – मित्रवरुणौ । छंद – त्रिष्टुप

उद्वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरेति सूर्यस्ततन्वान् ।
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्युं मर्त्येष्वा चिकेत ॥१॥

हे मित्रावरुण देवों ! आप तेजस्वी हैं । आप देवों के नेत्रवत सूर्यदेव जैसा सुन्दर प्रकाश फैलाते हुए आकाश में गमन करते हैं तथा सारे भुवनों को देखते हुए लोगों के कर्मों एवं मनोभावों को जानते हैं॥१॥

प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियर्ति ।
यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू अवाथ आ यत्क्रत्वा न शरदः पृणैथे ॥२॥

है मित्रावरुणो ! वे सत्यनिष्ठ, बहुश्रुतज्ञानी (वसिष्ठ) यज्ञकर्ता आपके स्तोत्र का पाठ करते हैं । उन ब्राह्मण की आप दोनों रक्षा करते हैं। आप अनन्तकाल से श्रेष्ठकर्मा उन (वसिष्ठ) की सुरक्षा करते हैं ॥२॥

प्रोरोर्मित्रावरुणा पृथिव्याः प्र दिव ऋष्वाद्बृहतः सुदानू ।
स्पशो दधाथे ओषधीषु विक्ष्वृधग्यतो अनिमिषं रक्षमाणा ॥३॥

हे मित्रावरुणो ! आपने द्युलोक के साथ अति विस्तृत पृथ्वी की परिक्रमा की है । हे उत्तम दान देने वाले ! वनस्पतियों और प्रजाओं में आपका ही सौन्दर्य झलकता है । यज्ञ करने वालों की आप विशेष सुरक्षा करते हैं॥३॥

शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम शुष्मो रोदसी बद्बधे महित्वा ।
अयन्मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते ॥४॥

हे ऋषे ! आप तेजस्वी मित्र और वरुण देवों की स्तुति करें । वे अपने पराक्रम से द्युलोक एवं पृथ्वीलोक को संतुलित रखे हुए हैं। यज्ञरहित व्यक्ति सन्तान रहित हों तथा यज्ञ करने वाले अपने बुद्धि-बल को बढ़ाएँ॥४॥

अमूरा विश्वा वृषणाविमा वां न यासु चित्रं ददृशे न यक्षम् ।
द्रुहः सचन्ते अनृता जनानां न वां निण्यान्यचिते अभूवन् ॥५॥

हे प्राज्ञदेवो ! आपकी ये जो स्तुतियाँ की गई हैं, इनमें अतिशयोक्ति कुछ भी नहीं हैं। झूठी प्रशंसा करने वाले लोग जनद्रोही होते हैं। इसलिए आपके ये स्तोत्र भ्रम में डालने वाले नहीं होते॥५॥

समु वां यज्ञं महयं नमोभिर्हुवे वां मित्रावरुणा सबाधः ।
प्र वां मन्मान्यृचसे नवानि कृतानि ब्रह्म जुजुषन्निमानि ॥६॥

हे मित्रावरुणो ! आपके यज्ञ को स्तुतियों के साथ सम्पन्न कर रहे हैं। हम बाधाग्रसित हैं, इसलिए आपको बुलाते हैं । आपकी प्रसन्नता के लिए नये स्तोत्रों का पाठ कर रहे हैं॥६॥

इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे देवो ! यज्ञ के द्वारा की गई यह उपासना आप दोनों के लिए है । आप हमें समस्त विपत्तियों से मुक्त करे । सदैव कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा करें॥७॥

सूक्त ६२

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – १-३ सूर्य, ४-६ मित्रवरुणौ । छंद – त्रिष्टुप

उत्सूर्यो बृहदर्चींष्यश्रेत्पुरु विश्वा जनिम मानुषाणाम् ।
समो दिवा ददृशे रोचमानः क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ॥१॥

ये सूर्यदेव ऊपर उठकर प्रभूत तेजस् को प्राप्त करते हुए सबके आश्रयदाता बनते हैं। दिन में प्रकाशित होने पर सबको एक जैसे दिखाई देते हैं । यज्ञकर्ताओं द्वारा पूज्य वे सूर्यदेव सबके निर्माता हैं, जिन्हें परमात्मा ने स्वयं बनाया है॥१॥

स सूर्य प्रति पुरो न उद्गा एभिः स्तोमेभिरेतशेभिरेवैः ।
प्र नो मित्राय वरुणाय वोचोऽनागसो अर्यम्णे अग्नये च ॥२॥

हे सूर्यदेव ! आप हमारे स्तोत्रों से प्रसन्न होकर, अपने गमनशील अश्वों पर चढ़कर आकाशमार्ग से गमन करे। मित्र, वरुण, अर्यमा एवं अग्निदेवों को हमारी निर्दोष भावना की जानकारी दें॥२॥

वि नः सहस्रं शुरुधो रदन्त्वृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कमा नः कामं पूपुरन्तु स्तवानाः ॥३॥

मानव मात्र को दुःख से मुक्त करने वाले, सत्यव्रती मित्र, वरुण और अग्निदेव हमें सहस्री प्रकार के आनन्ददायक एवं प्रशंसनीय धन दें । प्रार्थना से प्रसन्न होकर वे हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण करें॥३॥

द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नो ये वां जज्ञुः सुजनिमान ऋष्वे ।
मा हेळे भूम वरुणस्य वायोर्मा मित्रस्य प्रियतमस्य नृणाम् ॥४॥

हे विशाल द्यावा-पृथिवि ! हे अदिते ! आप हमें संरक्षण प्रदान करें । हम श्रेष्ठ जन्म वाले आपको जानते हैं। हमें वायु, वरुण और श्रेष्ठ मानवों के क्रोध से बचाएँ ॥४॥

प्र बाहवा सिसृतं जीवसे न आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन ।
आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ॥५॥

हे चिरयुवा मित्रावरुणदेवो ! आप हमारी प्रार्थना से प्रसन्न होकर, भुजाएँ फैलाकर, उदारतापूर्वक हमें दीर्घजीवन प्रदान करें । हमारे जाने योग्य क्षेत्रों को घृत (पोषक रस) से सिंचित करें । हमें ख्याति प्रदान करें तथा हमारे आवाहन को सुनें॥५॥

नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हे मित्र, वरुण, अर्यमा देवो ! आप हमारी संततियों के लिए पवित्र धन दें । हमारे सभी गन्तव्य मार्ग सरल हों। आप श्रेष्ठ साधनों से हमारा पालन करें॥६॥

सूक्त ६३

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – १-३ सूर्य, ९ सूर्य मित्रवरुणौ, ६ मित्रवरुणौ अर्यमा । छंद – त्रिष्टुप

उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः साधारणः सूर्यो मानुषाणाम् ।
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देवश्चर्मेव यः समविव्यक्तमांसि ॥१॥

मित्रावरुण की आँख की तरह सुन्दर भाग्य वाले, समद्रष्टा सूर्यदेव चमड़े (बिछावन) की तरह अंधकार को समेटते हुए उदित हो रहे हैं॥१॥

उद्वेति प्रसवीता जनानां महान्केतुरर्णवः सूर्यस्य ।
समानं चक्रं पर्याविवृत्सन्यदेतशो वहति धूर्षु युक्तः ॥२॥

मानवी सृष्टि करने वाले, सबके ज्ञानदाता एवं जीवन देने वाले, ये सूर्यदेव सबके समय-चक्र को बदलने की इच्छा से उदित होकर हरि (हरित वर्ण अथवा हरि संज्ञक) अश्वों से जुते हुए रथ में चलते हैं॥२॥

विभ्राजमान उषसामुपस्थाद्रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः ।
एष मे देवः सविता चच्छन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम ॥३॥

अत्यन्त प्रकाशमान सूर्यदेव अपने भक्तों की स्तुति सुनते हुए उषाओं के बीच में उदित होते हैं । ये हमारी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं और अपने तेज को कभी कम नहीं होने देते॥३॥

दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरेअर्थस्तरणिर्भ्राजमानः ।
नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि ॥४॥

ये विशेष तेजस्वी सूर्यदेव दूर विराजमान होकर भी द्युलोक की शोभा बढ़ाते हुए उदित होते हैं । निश्चित हीं, सूर्यदेव को प्रेरणा से लोग कर्म में प्रवृत्त होते हैं॥४॥

यत्रा चक्रुरमृता गातुमस्मै श्येनो न दीयन्नन्वेति पाथः ।
प्रति वां सूर उदिते विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ॥५॥

देवताओं ने इन सूर्यदेव के लिए जिस मार्ग को बनाया है, वह (मार्ग) श्येन पक्षी की तरह अन्तरिक्ष से होकर जाता है । हे मित्रावरुण ! सूर्योदय होने पर यज्ञ और स्तोत्रों द्वारा हम आपका यजन करेंगे॥५॥

नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हे मित्र, वरुण और अर्यमा देवो ! आप हमें तथा हमारी संततियों को पवित्र धन प्रदान करें । हमारी प्रगति के सारे रास्ते निर्वाध हो । हमें कल्याणकारी साधनों से सुरक्षित रखें॥६॥

सूक्त ६४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – मित्रवरुणौ । छंद – त्रिष्टुप

दिवि क्षयन्ता रजसः पृथिव्यां प्र वां घृतस्य निर्णिजो ददीरन् ।
हव्यं नो मित्रो अर्यमा सुजातो राजा सुक्षत्रो वरुणो जुषन्त ॥१॥

हे मित्रावरुणदेवे ! आप द्यावा-पृथिवीं में जल के संचारकर्ता हैं । मित्र, सुजन्मा अर्यमा और बलवान् राजा वहण हमारे इस हव्य का सेवन करे॥१॥

आ राजाना मह ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक् ।
इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टिमव दिव इन्वतं जीरदानू ॥२॥

हे मित्र और वरुणदेवो ! आप सत्यरूपी यज्ञ के रक्षक, नदियों में जल के संचारकर्ता और क्षत्रिय (रक्षक वीर) हैं। हमारे लिए अन्तरिक्ष से जलरूपी अन्न प्रेषित करें॥२॥

मित्रस्तन्नो वरुणो देवो अर्यः प्र साधिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु ।
ब्रवद्यथा न आदरिः सुदास इषा मदेम सह देवगोपाः ॥३॥

भित्र, वरुण, अर्यमा देवगण उदारदाता (व्यक्ति, यज्ञ या परमात्मा) से हमारी कथा कहें । साधनों से सम्पन्न राजा के द्वारा हमे वहाँ पहुँचा दें । हम आप देव की कृपा से पुत्र-पौत्रादिकों के साथ अन्न द्वारा पोषन हो॥३॥

यो वां गर्तं मनसा तक्षदेतमूर्ध्वां धीतिं कृणवद्धारयच्च ।
उक्षेथां मित्रावरुणा घृतेन ता राजाना सुक्षितीस्तर्पयेथाम् ॥४॥

हे मित्रावरुणदेव ! उच्च धारणा शक्तिवाला व्यक्ति पूर्ण मनोयोग के साथ आपके रथ का निर्माण करता हैं । हे राजाओ ! आपकी कृपा से उसे सुन्दर निवास प्राप्त हो । उसे जल से सिंचित कर तृप्त करें॥४॥

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

मित्र, वरुण और वायु के लिए हमने सोमरस के समान आनन्द देने वाली यह स्तुति की है। आप हमारी बुद्धि और कर्म को संरक्षित करें । प्रज्ञा जाग्रत् करें तथा कल्याणकारी साधनों द्वारा हमारा कल्याण करें॥५॥

सूक्त ६५

ऋषिः मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः
देवता – मित्रवरुणौ । छंद – त्रिष्टुप

प्रति वां सूर उदिते सूक्तैर्मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।
ययोरसुर्यमक्षितं ज्येष्ठं विश्वस्य यामन्नाचिता जिगत्नु ॥१॥

कभी नष्ट न होने वाला जिन (मित्रावरुण) का श्रेष्ठ बल प्राप्त होने पर व्यक्ति सर्वत्र विजयी होता है, उन सूर्योदय के समय पवित्र बल वाले वरुण और मित्रदेवों की सूक्तों से प्रार्थना करते हैं॥१॥

ता हि देवानामसुरा तावर्या ता नः क्षितीः करतमूर्जयन्तीः ।
अश्याम मित्रावरुणा वयं वां द्यावा च यत्र पीपयन्नहा च ॥२॥

हे मित्रावरुणो ! आप बलशाली हैं। हम आपकी प्रार्थना करते हैं। आप हमारी संततियों की वृद्धि करें । हम आपका सर्वत्र यशोगान करेंगे॥२॥

ता भूरिपाशावनृतस्य सेतू दुरत्येतू रिपवे मर्त्याय ।
ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नावा दुरिता तरेम ॥३॥

हे मित्रावरुण ! आप यज्ञ से विमुख व्यक्ति को अपने दृढ़ बन्धनों से बाँधते हैं। जैसे नाव से (नदी) जल पार किया जाता है, हे देव ! उसी प्रकार यज्ञ मार्ग से हम दुःखों से पार हो जाएँ॥३॥

आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः ।
प्रति वामत्र वरमा जनाय पृणीतमुद्रो दिव्यस्य चारोः ॥४॥

हे मित्रावरुणो ! आप हमारे यज्ञ में पधारकर हव्य ग्रहण करें और अन्न एवं जल से हमारी गोचर भूमि का सिंचन करें । अमृत के समान मधुर जल से लोगों को तृप्ति प्रदान करें॥४॥

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

मित्र, वरुण और वायु देवों के लिए हमने सोम रस के समान आनन्द देने वाली स्तुति की हैं। आप हमारे बुद्धि और कर्म को संरक्षित करें । प्रज्ञा जाग्रत् कर कल्याणकारी साधनों द्वारा हमारा कल्याण करें॥५॥

सूक्त ६६

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – मित्रवरुणौ, ४-१३ आदित्या: १४-१६ सूर्य: । छंद – गायत्री:
१०-१५ प्रगाथ:, १६ पुर उष्णिक

प्र मित्रयोर्वरुणयोः स्तोमो न एतु शूष्यः ।
नमस्वान्तुविजातयोः ॥१॥

हमारे स्तोत्र बार-बार आविर्भूत होने वाले मित्रावरुणदेव का अनुगमन करें॥१॥

या धारयन्त देवाः सुदक्षा दक्षपितरा ।
असुर्याय प्रमहसा ॥२॥

मित्रावरुणदेव आप श्रेष्ठ बल वाले और तेजस्वी हैं । शान्ति प्राप्त करने के लिए देवों ने आपको धारण किया था॥२॥

ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितॄणाम् ।
मित्र साधयतं धियः ॥३॥

मित्र और वरुणदेव, गृह एवं शरीरों को संरक्षण प्रदान करते हैं। आप उपासकों के स्तोत्रों को स्वीकार करें॥३॥

यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा ।
सुवाति सविता भगः ॥४॥

सूर्योदय होने पर निष्पाप मित्र, अर्यमा, भग, सवितादेव हमारी ओर अभीष्ट धन को प्रेरित करें॥४॥

सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः ।
ये नो अंहोऽतिपिप्रति ॥५॥

हे कल्याणकारी देवो ! आपके आगमन से हमारा वह आवास सुरक्षित बने। आप हमें पापों से मुक्त कराएँ ॥५॥

उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये ।
महो राजान ईशते ॥६॥

मित्रादि देवगण अपनी माता अदिति सहित हमारे संकल्पों के अधिष्ठाता हैं। हमारा अभीष्ट पूर्ण करने में समर्थ हैं, अत: वे शासक हैं॥६॥

प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।
अर्यमणं रिशादसम् ॥७॥

(हे मित्र और वरुणदेव !) हम सूर्योदय के अवसर पर आप दोनों तथा शत्रुसंहारक अर्यमा के साथ-साथ समस्त देवताओं की स्तुति करते हैं॥७॥

राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे ।
इयं विप्रा मेधसातये ॥८॥

हे विद्वान् मित्र और वरुणदेव ! कल्याणकारी श्रेष्ठ धन तथा दुष्टतारहित बल एवं सद्बुद्धि पाने के लिए हम आपकी वन्दना करते हैं। आप इसे स्वीकार करें॥८॥

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह ।
इषं स्वश्च धीमहि ॥९॥

हे वरुणदेव ! ज्ञानवानों के साथ आपकी स्तुति करते हुए हम वैभवयुक्त हों । हे मित्र ! आपकी स्तुति से हम अन्न-धन और स्वर्गापम सुखों को उपलब्ध करें॥९॥

बहवः सूरचक्षसोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वानि परिभूतिभिः ॥१०॥

अनेकों सूर्य की तरह तेजस्वी, अग्नि रूप जिह्वा वाले, यज्ञ के विस्तारक ये (मित्रादि देव) विश्व के तीनों स्थानों (द्‌यु, अन्तरिक्ष एवं पृथ्वी) को श्रेष्ठ विभूतियों द्वारा सुनियंत्रित रखते हैं॥१०॥

वि ये दधुः शरदं मासमादहर्यज्ञमक्तुं चादृचम् ।
अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत ॥११॥

वर्ष, मास, दिन, रात्रि को बनाकर यज्ञ और मन्त्र को धारण करने वाले वीर मित्रावरुण और अर्यमा देव ने दूसरों की भलाई के लिए अप्राप्य शक्ति पायी थी॥११॥

तद्वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते ।
यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः ॥१२॥

हम आज सूर्योदय के समय वह धन माँगेंगे, जिसे सन्मार्ग दर्शक वीर मित्रावरुण और अर्यमा आदि देवगण धारण करते हैं॥१२॥

ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः ।
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः ॥१३॥

आप सत्य को धारण करके यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करते हैं तथा सत्य से विमुख रहने वालों के शत्रु हैं। ऋत्विजों के साथ हम आपकी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करें॥१३॥

उदु त्यद्दर्शतं वपुर्दिव एति प्रतिह्वरे ।
यदीमाशुर्वहति देव एतशो विश्वस्मै चक्षसे अरम् ॥१४॥

आज सूर्य उदित होने पर पापरहित हुए हमको मित्र, सविता, भग और अर्यमा देव उत्तम प्रेरणा देकर श्रेष्ठ कर्म में प्रेरित करें॥१४॥

शीर्ष्णःशीर्ष्णो जगतस्तस्थुषस्पतिं समया विश्वमा रजः ।
सप्त स्वसारः सुविताय सूर्यं वहन्ति हरितो रथे ॥१५॥

सबके शीर्षभाग में स्थित, सबके वन्दनीय, रथारूढ़ सूर्यदेव को संसार के कल्याण के लिए गतिमान् सप्त हर्याश्व सारे विश्व में ले जाते हैं॥१५॥

तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ॥१६॥

विश्व का कल्याण करने वाले, अंधकार को दूर करने वाले, सबके नेत्र स्वरूप ये सूर्यदेव हमारे सामने उदित हो रहे हैं । हे देव ! हम सौ वर्षों तक देखें, सौ वर्षों तक जिएँ॥१६॥

काव्येभिरदाभ्या यातं वरुण द्युमत् ।
मित्रश्च सोमपीतये ॥१७॥

हे मित्र और वरुणदेव ! आप तेजस्वी और निडर हैं। आप स्तोता के पास सोमपान के लिए पधारें॥१७॥

दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यातमद्रुहा ।
पिबतं सोममातुजी ॥१८॥

हे सत्य की वृद्धि करने वाले मित्र और वरुणदेव ! आप द्रोह रहित हैं। आप अपने लोक से सोमपान के निमित्त पधारें॥१८॥

आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा ।
पातं सोममृतावृधा ॥१९॥

सत्यवती, नेतृत्व की क्षमता से सम्पन्न हे मित्रावरुणदेव !आप हमारी आहुति ग्रहण करके सोमरस का पान करें॥१९॥

सूक्त ६७

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आश्विनो । छंद – त्रिष्टुप

प्रति वां रथं नृपती जरध्यै हविष्मता मनसा यज्ञियेन ।
यो वां दूतो न धिष्ण्यावजीगरच्छा सूनुर्न पितरा विवक्मि ॥१॥

हे बुद्धिसम्पन्न स्वामी दोनों अश्विनीकुमारो ! हम उदार एवं पवित्र मन से आपके रथ का आवाहन करते हैं। पिता जैसे पुत्र को जगाता है, आपका रथ उसी तरह सबको सतर्क रखे॥१॥

अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उपो अदृश्रन्तमसश्चिदन्ताः ।
अचेति केतुरुषसः पुरस्ताच्छ्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः ॥२॥

हमारे लिए अग्निदेव प्रदीप्त हो रहे हैं, अंधकार का अन्त दिख रहा है । द्युलोक की पुत्री (उषा) के सम्मुख प्रकट होने वाले ये सूर्यदेव शोभा का बोध कराने वाले हैं॥२॥

अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति नासत्या विवक्वान् ।
पूर्वीभिर्यातं पथ्याभिरर्वाक्स्वर्विदा वसुमता रथेन ॥३॥

हे सत्यव्रती अश्विदेवो ! सुन्दर अभिव्यक्ति वाले श्रेष्ठ होता स्तोत्रों के द्वारा आपकी प्रार्थना करते हैं। आप ऐश्वर्ययुक्त रथ पर आरूढ़ होकर प्राची दिशा से पधारें॥३॥

अवोर्वां नूनमश्विना युवाकुर्हुवे यद्वां सुते माध्वी वसूयुः ।
आ वां वहन्तु स्थविरासो अश्वाः पिबाथो अस्मे सुषुता मधूनि ॥४॥

हे अश्विनीकुमारो ! आप रक्षक और मृदुभाषी हैं। हम ऐश्वर्य की कामना से इस सोमयाग में आपका आवाहन करते हैं। अपने प्रौढ़ अश्वों से आप सोमपान के लिए पधारें॥४॥

प्राचीमु देवाश्विना धियं मेऽमृध्रां सातये कृतं वसूयुम् ।
विश्वा अविष्टं वाज आ पुरंधीस्ता नः शक्तं शचीपती शचीभिः ॥५॥

हे शक्ति के स्वामी अश्विदेवो ! आप हमारी धनाभिलाषी बुद्धि को सरल एवं अहिंसक बनाएँ, उसे लाभ के योग्य बनायें। युद्ध में हमारी बुद्धि को संरक्षण दें। आप हमें शक्तियों से सम्पन्न बनाएँ ॥५॥

अविष्टं धीष्वश्विना न आसु प्रजावद्रेतो अह्रयं नो अस्तु ।
आ वां तोके तनये तूतुजानाः सुरत्नासो देववीतिं गमेम ॥६॥

हे अश्विनीकुमारो । श्रेष्ठकर्म के लिए आप हमारी बुद्धि का रक्षण करें । हमारी सन्तानोत्पादन की शक्ति समाप्त न हो। आपकी कृपा से संतानों को यथेच्छ धन देकर, रत्नों (सद्गुणों से अलंकृत होकर हम दिव्य पवित्रता प्राप्ति हेतु यज्ञीय जीवन जिएँ॥६॥

एष स्य वां पूर्वगत्वेव सख्ये निधिर्हितो माध्वी रातो अस्मे ।
अहेळता मनसा यातमर्वागश्नन्ता हव्यं मानुषीषु विक्षु ॥७॥

हे मधुर भाषी अश्विदेवो ! हमने आपके द्वारा प्रदत्त सम्पत्ति आपको समर्पित की है। प्रसन्न होकर आप हमारे सामने पधारें और प्रजाओं द्वारा दिया हुआ हव्य ग्रहण करें॥७॥

एकस्मिन्योगे भुरणा समाने परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् ।
न वायन्ति सुभ्वो देवयुक्ता ये वां धूर्षु तरणयो वहन्ति ॥८॥

हे पोषक अश्विदेवो ! आपका रथ बहने वाली सात नदियों को लाँघ जाता है । देवों द्वारा नियोजित हुए सुजन्मा अश्व कभी नहीं थकते॥८॥

असश्चता मघवद्भ्यो हि भूतं ये राया मघदेयं जुनन्ति ।

प्र ये बन्धुं सूनृताभिस्तिरन्ते गव्या पृञ्चन्तो अश्व्या मघानि ॥९॥

जो मधुर भाषी होकर गौ-अश्वों से युक्त ऐश्वर्य दान करते हुए दूसरों को प्रेरणा देते हैं, आप ऐसे लोगों से दूर न रहें, उनके घर पधारें॥९॥

नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१०॥

हे युवा अश्विद्य ! आप हमारी स्तुति सुनें । जहाँ से आपको हव्य मिलता है, वहाँ पधारें और उन्हें रत्न देकर सुखी करें तथा सदा कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करें॥१०॥

सूक्त ६८

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आश्विनौ । छंद – विराट, ८-९ त्रिष्टुप

आ शुभ्रा यातमश्विना स्वश्वा गिरो दस्रा जुजुषाणा युवाकोः ।
हव्यानि च प्रतिभृता वीतं नः ॥१॥

हे सुन्दर घोड़ों से युक्त शत्रुहन्ता अश्विदेवो ! हम स्तोताओं की प्रार्थना सुनते ही आप यहाँ पधार कर, हमारे हव्य को ग्रहण करें॥१॥

प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुररं गन्तं हविषो वीतये मे ।
तिरो अर्यो हवनानि श्रुतं नः ॥२॥

हे अश्विनीकुमारो ! आपके लिए यह श्रेष्ठ हवि समर्पित है । इस हव्य को ग्रहण करने के लिए हमारी प्रार्थना सुनकर आप यहाँ पधारें तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करें॥२॥

प्र वां रथो मनोजवा इयर्ति तिरो रजांस्यश्विना शतोतिः ।
अस्मभ्यं सूर्यावसू इयानः ॥३॥

हे देवो ! आप सूर्यदेव के साथ सहस्रों साधनों से युक्त, मन के समान वेगवान् रथ पर आरूढ़ होकर, अन्य लोकों को लाँघते हुए हमारे यज्ञ में आते हैं॥३॥

अयं ह यद्वां देवया उ अद्रिरूर्ध्वो विवक्ति सोमसुद्युवभ्याम् ।
आ वल्गू विप्रो ववृतीत हव्यैः ॥४॥

हे अश्विदेवो ! जब हम यज्ञ में आपको बुलाने के लिए सोमाभिषव करते हैं, तब यह सोम निचोड़ने वाला पत्थर घोर शब्द करता हैं; तब ज्ञानी होतागण हविष्यान्न से आपका आवाहन करते हैं॥४॥

चित्रं ह यद्वां भोजनं न्वस्ति न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् ।
यो वामोमानं दधते प्रियः सन् ॥५॥

(हे अश्विदेवो !) आपका जो विलक्षण भोजन है, वह महिष्वन्त (सबल बनाने वाला भोज्य पदार्थ) अत्रि के लिए अलग निकाला गया था। वे (अत्रि) आपके प्रिय होने के कारण आपके आश्रय में रहते हैं॥५॥

उत त्यद्वां जुरते अश्विना भूच्च्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।
अधि यद्वर्प इतऊति धत्थः ॥६॥

हे अश्विनीकुमारो ! ढ्य प्रदान करने वाले तथा जीर्ण हुए च्यवन ऋषि को आपके द्वारा वह मृत्यु से संरक्षित करने वाला जो रूप दिया गया, वह (कर्म) प्रसिद्ध हुआ॥६॥

उत त्यं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।
निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः ॥७॥

हे अश्विदेवो ! राजपुत्र भुज्यु को उसके दुष्ट मित्रों ने समुद्र में छोड़ दिया था। आपकी प्रार्थना करने वाले उस भुज्यु को आपने पार लगाया था॥७॥

वृकाय चिज्जसमानाय शक्तमुत श्रुतं शयवे हूयमाना ।
यावघ्न्यामपिन्वतमपो न स्तर्यं चिच्छक्त्यश्विना शचीभिः ॥८॥

हे देवो ! आपने क्षीणकाय वृक को शक्ति देकर शक्तिमान् बनाया था तथा शयु का हित करने के लिए भी आप पधारे थे । आपने दोनों की प्रार्थना सुनी थी । आप दोनों ने बन्ध्या गौ को भी दूध देने में समर्थ बनाया था॥८॥

एष स्य कारुर्जरते सूक्तैरग्रे बुधान उषसां सुमन्मा ।
इषा तं वर्धदघ्न्या पयोभिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥९॥

श्रेष्ठ विचारों वाले स्तोता (वसिष्ठ) उषाकाल से प्रथम उठकर प्रार्थना करते हैं। आप उन्हें अन्न दुग्ध आदि से सुखी करें तथा कल्याणकारी साधनों द्वारा उनका पालन करें॥९॥

सूक्त ६९

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आश्विनौ । छंद – त्रिष्टुप

आ वां रथो रोदसी बद्बधानो हिरण्ययो वृषभिर्यात्वश्वैः ।
घृतवर्तनिः पविभी रुचान इषां वोळ्हा नृपतिर्वाजिनीवान् ॥१॥

बलवान् अश्वों से खींचा जाने वाला, आपका रथ पृथ्वी-आकाश में हर जगह पहुँचता है जिसके पहिए में जल हैं, जो अन्नवाहक घृत आदि ओषधियों से युक्त एवं प्रजाओं का स्वामी है, वह रथ यहाँ आगमन करे॥१॥

स पप्रथानो अभि पञ्च भूमा त्रिवन्धुरो मनसा यातु युक्तः ।
विशो येन गच्छथो देवयन्तीः कुत्रा चिद्यामममश्विना दधाना ॥२॥

(हे अश्विद्य !) पाँचों (पंचभूतों अथवा पंचप्राणों) को व्यापक स्थान देने वाले तीन वन्धुरों (सारथी के बैठने वाले आसनों) से युक्त, मन के

अनुसार चलने वाले रथ से, कहीं भी जाने के इच्छुक आप यहाँ अवश्य आएँ॥२॥

स्वश्वा यशसा यातमर्वाग्दस्रा निधिं मधुमन्तं पिबाथः ।
वि वां रथो वध्वा यादमानोऽन्तान्दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् ॥३॥

हे शत्रुहन्ता अश्विदेवो ! आप श्रेष्ठ घोड़ों से जुते रथ पर बैठकर , अन्न के सहित यहाँ पधारें और मधुरस का पान करें । सूर्या के साथ गमन करने वाला आपका रथ गतिशील चक्रों से द्युलोक के अन्तिम छोर को भी आन्दोलित करता है॥३॥

युवोः श्रियं परि योषावृणीत सूरो दुहिता परितक्म्यायाम् ।
यद्देवयन्तमवथः शचीभिः परि घ्रंसमोमना वां वयो गात् ॥४॥

सूर्य पुत्री उषा, आपके सुन्दर रथ पर बैठ गई हैं । जब आप स्तोता की सुरक्षा करते हैं, उस समय अन्नादि साधन आपके पास आते हैं॥४॥

यो ह स्य वां रथिरा वस्त उस्रा रथो युजानः परियाति वर्तिः ।
तेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन् ॥५॥

हे रथारूढ़ वीरो। आपको वह रथ तेज से आच्छादित होकर, अश्वों से नियोजित होकर स्वमार्ग से जाता हैं । (इसलिए) हे अश्विनीकुमारो ! आप प्रात: काल होने पर पापों के शमन और सुख-शान्ति प्रदान करने के लिए उसी रथ से हमारे इस यज्ञ में पधारें॥५॥

नरा गौरेव विद्युतं तृषाणास्माकमद्य सवनोप यातम् ।
पुरुत्रा हि वां मतिभिर्हवन्ते मा वामन्ये नि यमन्देवयन्तः ॥६॥

हे नेतृत्व क्षमता-सम्पन्न अश्विद्य ! गौर मृग की तरह शीघ्रतापूर्वक सोमपान की कामना वाले आप दोनों हमारे यज्ञ में पधारें । देवत्व की कामना वाले अनेक लोग स्तुति करके आपको बुलाते हैं । आप (अन्यत्र) न रुकें॥६॥

युवं भुज्युमवविद्धं समुद्र उदूहथुरर्णसो अस्रिधानैः ।
पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्दंसनाभिरश्विना पारयन्ता ॥७॥

हे अश्विद्य ! समुद्र में फंसे भुज्यु को आपने, पक्षी के समान गतिशील, कभी जीर्ण न होने वाले, अश्रान्त, द्रुतगामी (अश्वों या विमान द्वारा) कुशल क्रियाओं द्वारा निकाला था॥७॥

नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

हे युवा अश्विद्वय ! आप हमारी प्रार्थना सुनें और जहाँ से आपको हव्य मिलता है, वहाँ पधारें । स्तोताओं को रत्न देकर सुखी करें । सदा कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करें॥८॥

सूक्त ७०

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – आश्विनौ । छंद – त्रिष्टुप

आ विश्ववाराश्विना गतं नः प्र तत्स्थानमवाचि वां पृथिव्याम् ।
अश्वो न वाजी शुनपृष्ठो अस्थादा यत्सेदथुर्ध्रुवसे न योनिम् ॥१॥

हे सर्वश्रेष्ठ अश्विदेवो ! आप हमारे यहाँ आएँ और अपने बैठने के सुखकर स्थान की तरह, मजबूत घोड़े की पीठ के समान इस स्थान पर बैठे । पृथ्वी पर यह स्थान (यज्ञस्थल) प्रशंसनीय हैं॥१॥

सिषक्ति सा वां सुमतिश्चनिष्ठातापि घर्मो मनुषो दुरोणे ।
यो वां समुद्रान्त्सरितः पिपर्त्येतग्वा चिन्न सुयुजा युजानः ॥२॥

हे अश्विदेवो ! बुद्धिमान् स्तोता आपकी प्रार्थना कर रहे हैं। मनुष्य के गृह (यज्ञशाला) में उष्णता देने वाला (धूप या यज्ञाग्नि) सक्रिय है। उसके प्रभाव से (जल-वृष्टि से) नदी-समुद्र भर रहे हैं । जिस प्रकार से अश्व रथ को खीचते हैं, उसी प्रकार यज्ञ आप दोनों से युक्त होता है॥२॥

यानि स्थानान्यश्विना दधाथे दिवो यह्वीष्वोषधीषु विक्षु ।
नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्तेषं जनाय दाशुषे वहन्ता ॥३॥

हे अश्विदेवो ! द्युलोक से अवतरित होकर आप पर्वत शिखरों, सोमादि ओषधियों में विराजते हैं। वह सब अन्नादि (पोषण) आप यज्ञस्थल पर दानशील प्रजाजनों को प्रदान करें॥३॥

चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु यद्योग्या अश्नवैथे ऋषीणाम् ।
पुरूणि रत्ना दधतौ न्यस्मे अनु पूर्वाणि चख्यथुर्युगानि ॥४॥

हे अश्विदेवो ! आप अषयों द्वारा प्रदत्त अन्न (हव्य), जल आदि प्राप्त करते हैं, इसलिए हमारे द्वारा ओषधि (चरु-पुरोडाश) और जल (सोमरस) ग्रहण करें । जैसे पहले के युग में आप दोनों ने दम्पतियों को रत्नादि से पूर्ण बनाया था, उसी प्रकार इस समय में भी बना दें॥४॥

शुश्रुवांसा चिदश्विना पुरूण्यभि ब्रह्माणि चक्षाथे ऋषीणाम् ।
प्रति प्र यातं वरमा जनायास्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ॥५॥

हे अश्विदेवो ! ऋषियों द्वारा स्तुत्य होकर आप सदा से सबका कल्याण करते आ रहे हैं। इस मनुष्य (यजमान) के यज्ञ में आप दोनों पधारें तथा आपकी अनुकम्पा (सुमति) हमें भी प्राप्त हो ॥५॥

यो वां यज्ञो नासत्या हविष्मान्कृतब्रह्मा समर्यो भवाति ।
उप प्र यातं वरमा वसिष्ठमिमा ब्रह्माण्यृच्यन्ते युवभ्याम् ॥६॥

हे सत्यव्रती अश्विदेवो ! स्तुति मंत्रों का निर्माण कर हविष्यान्न से विश्वकल्याणार्थ यज्ञ करने वाले वसिष्ठ के पास आप जाते हैं, क्योंकि वे आपकी ही प्रार्थना करते हैं॥६॥

इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे बलवान् अश्विदेवो ! हमने अपनी इच्छा से वाणी द्वारा यह स्तुति आपकी प्रसन्नता के लिए की है। आप इसे स्वीकार करें तथा कल्याणकारी साधनों से हमें सुरक्षित रखें॥७॥

सूक्त ७१

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ:
देवता – आश्विनौ । छंद – त्रिष्टुप

अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते रिणक्ति कृष्णीररुषाय पन्थाम् ।
अश्वामघा गोमघा वां हुवेम दिवा नक्तं शरुमस्मद्युयोतम् ॥१॥

रात्रि अपनी भगिनी उषा से अलग होकर लाल बिम्ब वाले सूर्यदेव का रास्ता खोल देती है । गोधन-वाजिधन के रूप में ऐश्वर्य देने वाले (हे देवो !) आपका हम आवाहन करते हैं । आप दिन या रात्रि के शत्रुओं को दूर करें॥१॥

उपायातं दाशुषे मर्त्याय रथेन वाममश्विना वहन्ता ।
युयुतमस्मदनिराममीवां दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः ॥२॥

मधुर स्वभाव वाले अश्विदेव हविदाता के लिए अपने रथ से सुन्दर पदार्थ लेकर पधारें और हमारे रोग तथा दारिद्य को दूर करते हुए दिन-रात हमारी सुरक्षा करें॥२॥

आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ सुम्नायवो वृषणो वर्तयन्तु ।
स्यूमगभस्तिमृतयुग्भिरश्वैराश्विना वसुमन्तं वहेथाम् ॥३॥

हे अश्विदेवो ! उषाकाल होने पर बलिष्ठ और स्वेच्छा से चलने वाले अश्व आपको लेकर हमारे पास आएँ तथा हमें तेजस्विता एवं उत्तम सम्पत्ति प्रदान करें॥३॥

यो वां रथो नृपती अस्ति वोव्हा त्रिवन्धुरो वसुमाँ उस्रयामा ।
आ न एना नासत्योप यातमभि यद्वां विश्वप्स्न्यो जिगाति ॥४॥

हे याजकों के रक्षक देवो ! आपका शीघ्रगामी रथ ऐश्वर्य-सम्पन्न, तीन वन्धुरों (बैठने के स्थान) वाला, दिन के लिए व्यापक होकर चलने वाला है । आप रथ से हमारी ओर बढ़े॥४॥

युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रिं नि जाहुषं शिथिरे धातमन्तः ॥५॥

हे देवो! आपने च्यवन ऋष को जरा मुक्त किया था । (युद्ध में) राजा पेदु पास द्रुतगामी अश्व भेजा था, अत्रि को पापान्धकार से मुक्त किया था और राज्य-च्युत हुए "जाहुष" को पुन: राज्य दिलाया था ॥५॥

इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हे बलशाली अश्विदेवों ! हमने अपनी इच्छा से, वाणी के द्वारा यह स्तुति आपकी प्रसन्नता के लिए की है। आप इसे स्वीकार करें तथा कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करें॥६॥

सूक्त ७२

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आश्विनौ । छंद – त्रिष्टुप

आ गोमता नासत्या रथेनाश्वावता पुरुश्चन्द्रेण यातम् ।
अभि वां विश्वा नियुतः सचन्ते स्पार्हया श्रिया तन्वा शुभाना ॥१॥

हे सत्यवती अश्विदेवो ! गौ और अश्वादि ऐश्वर्य से सम्पन्न रथ से आप यहाँ पधारें । आप श्रेष्ठ तेज से शोभायमान हों । स्तोता अनेक स्तुतियों से आपकी स्तुति कर रहे हैं॥१॥

आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक्सजोषसा नासत्या रथेन ।
युवोर्हि नः सख्या पित्र्याणि समानो बन्धुरुत तस्य वित्तम् ॥२॥

हे सत्यव्रती अश्विदेवो ! आप दोनों देवों के साथ प्रेमपूर्वक रथारूढ़ होकर हमारे यहाँ आएँ। आपके साथ हमारे पूर्वजों का सम्बन्ध भी था । हमारे और आपके पूर्वज तथा उनका धन एक ही है॥२॥

उदु स्तोमासो अश्विनोरबुध्रञ्जामि ब्रह्माण्युषसश्च देवीः ।
आविवासन्रोदसी धिष्ण्येमे अच्छा विप्रो नासत्या विवक्ति ॥३॥

अश्विनीकुमारों को (ये) स्तुतियाँ जगाती हैं । सब लोग उत्तम कर्म से उषाकाल को चैतन्य करते हैं । वसिष्ठ, द्यु और पृथ्वी लोकों की सेवा करते हुए अश्विद्य की स्तुति करते हैं॥३॥

वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।
ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद्बृहदग्नयः समिधा जरन्ते ॥४॥

हे अश्विद्वय ! उषा के द्वारा अन्धकार हटाने पर स्तोता आपकी प्रार्थना करते हैं। सूर्यदेवता ऊर्ध्वगामी होते हुए तेजस्विता धारण कर रहे हैं । यज्ञ में समिधाओं के द्वारा अग्नि प्रज्वलित हो रही है॥४॥

आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

हे सत्यव्रती अश्विदेवो ! पंचजनों (सभी) का हित करने के लिए ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, चारों तरफ से धन लेकर आएँ। आप सदैव कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा करें॥५॥

सूक्त ७३

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः
देवता – आश्विनौ । छंद – त्रिष्टुप

अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः ।
पुरुदंसा पुरुतमा पुराजामर्त्या हवते अश्विना गीः ॥१॥

हे अश्विद्य ! हम देवत्व प्राप्ति की इच्छा से प्रार्थना करते हुए अज्ञानान्धकार से पार हो जायें । बहुकर्मा, पूर्वकाल से अमर कीर्ति वाले हे अश्विदेवो ! स्तोतागण आपका आवाहन करते हैं॥१॥

न्यु प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च ।
अश्नीतं मध्वो अश्विना उपाक आ वां वोचे विदथेषु प्रयस्वान् ॥२॥

हे सत्यपालक अश्विदेवो ! यज्ञ और प्रणाम करने वाला याजक यज्ञशाला में बैठ गया है, आप उसके पास जाकर मधुर सोमरस की

पान करें। यज्ञ में हव्य समर्पित करके हम आपकी प्रार्थना करते हैं॥२॥

अहेम यज्ञं पथामुराणा इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
श्रुष्टीवेव प्रेषितो वामबोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः ॥३॥

हे बलशाली (अश्विदेवो) ! स्तोता वसिष्ठ आपको जाग्रत् करने के लिए शीघ्रगामी दूतों की तरह स्तोत्र संप्रेषित कर रहे हैं। आप स्तुतियों से प्रसन्न हों। हम आपके मार्गों का अनुसरण करने के लिए यज्ञ सम्पन्न करते हैं॥३॥

उप त्या वह्नी गमतो विशं नो रक्षोहणा सम्भृता वीळुपाणी ।
समन्धांस्यग्मत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ॥४॥

दोनों राक्षस हन्ता, दृढ़पाणि (अश्विनीकुमार) हमारी संतानों के पास आएँ । आप हमारा कष्ट न बढ़ाएँ, आनन्द देने वाले सोमपान के लिए मंगलपूर्वक यहाँ पधारें॥४॥

आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

हे सत्यव्रती अश्विदेवो ! पंचजनों (सभी) का हित करने के लिए ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, चारों तरफ से धन लेकर आएँ। आप सदैव कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा करें॥५॥

सूक्त ७४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – आश्विनौ । छंद – प्रगाथ

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना ।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥१॥

हे सम्पूर्ण प्राणियों के आश्रय-स्थल अश्विन देवो ! प्रकाश की कामना करने वाले प्रजाजन आपका आवाहन करते हैं । सम्पूर्ण मानवों के निकट जाने वाले तथा पराक्रम से धनार्जन करने वाले अपने संरक्षण के निमित्त आपका आवाहन करते हैं॥१॥

युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते ।
अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ॥२॥

हे नेतृत्व प्रदान करने वाले अश्विनीकुमारो ! आप दिव्य आहार देने वाले हैं। स्तुति करने वालों के प्रेरक हे देव ! आप रथ रोककर मनोयोगपूर्वक यहाँ मधुर रस का पान करें॥२॥

आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना ।
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम् ॥३॥

हे अश्विनीकुमारो ! आप दोनों हमारे यज्ञ में आएँ और शोभा बढ़ाएँ । यहाँ आकर मधुर रसों का पान करें। हे वषर्णशील देवो और धन के स्वामियो ! आप हमें दुग्धादि पेयों से अभिपूरित करते हुए आगमन करें । हमें पीड़ित न करें॥३॥

अश्वासो ये वामुप दाशुषो गृहं युवां दीयन्ति बिभ्रतः ।
मक्षूयुभिर्नरा हयेभिरश्विना देवा यातमस्मयू ॥४॥

हे नेतृत्व क्षमता-सम्पन्न अश्विदेवो ! आपको धारण करके अश्व हव्यदाता के घर तक पहुँचाते हैं । आप शीघ्रगामी घोड़ों से यहाँ पधारें॥४॥

अधा ह यन्तो अश्विना पृक्षः सचन्त सूरयः ।
ता यंसतो मघवद्भ्यो ध्रुवं यशश्छर्दिरस्मभ्यं नासत्या ॥५॥

हे सत्यव्रती अश्विदेवो ! स्तोतागण (आप से) अन्नादि प्राप्त करते हैं। आप हमें अविचल यश और उत्तम घर प्राप्त कराएँ । हम आपकी कृपा से मघवान् (धन-सम्पन्न) हैं॥५॥

प्र ये ययुरवृकासो रथा इव नृपातारो जनानाम् ।
उत स्वेन शवसा शूशुवुर्नर उत क्षियन्ति सुक्षितिम् ॥६॥

जो प्रजा का पालक और अहिंसक होकर रथ की तरह (गतिशील होकर) आपके पास आते हैं, वे नेतृत्व कर्ता अपनी शक्ति से आगे बढ़ते और रहने के अच्छे स्थान प्राप्त करते हैं॥६॥

सूक्त ७५

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – उषस: । छंद – त्रिष्टुप

व्युषा आवो दिविजा ऋतेनाविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।
अप द्रुहस्तम आवरजुष्टमङ्गिरस्तमा पथ्या अजीगः ॥१॥

देवी उषा अंतरिक्ष से प्रादर्भूत होकर, प्रकाश मलाती हुई, तेज से अपनी महत्ता प्रकट करती हुई आ रही हैं । उनने शत्रुओं और अन्धकार को दूर कर गंतव्य पथ को प्रकाशित किया हैं॥१॥

महे नो अद्य सुविताय बोध्युषो महे सौभगाय प्र यन्धि ।
चित्रं रयिं यशसं धेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम् ॥२॥

हे उषा देवि ! आज आप हमारे सुख-संवर्धन के लिए चैतन्य होकर सौभाग्य प्रदान करें तथा हमारे लिए विशेष यश युक्त धन धारण करें। मनुष्यों का हिन करने वाली देवी उषा अन्न सहित पुत्र प्रदान करे॥२॥

एते त्ये भानवो दर्शतायाश्चित्रा उषसो अमृतास आगुः ।

जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्यापृणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः ॥३॥

देवा उषा की ये किरणें, दर्शनीय, विचित्र और अविनाशी हैं। ये दिव्य व्रतों (क) का उत्पादन कर, समस्त अंतरिक्ष को पूर्ण करके, सब तरफ फैल जाती हैं॥३॥

एषा स्या युजाना पराकात्पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति ।
अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी ॥४॥

ये नहीं द्युलोक की पुत्री उषा हैं, शो पंच मानवों (सभी वर्गों) को उद्योग (कर्म) में लगाती हुई, उनके पास पहुँचकर भुवनों का पालन करती हैं॥४॥

वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् ।
ऋषिष्टुता जरयन्ती मघोन्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना ॥५॥

सूर्यगृहिणी उषा अन्नवती विचित्र धन और वैभवों को स्वामिनी हैं । ऋषियों द्वारा स्तुत्य, (रात्रि एवं अंधकार को) जर्जरित करने वाली, धन देने वाली देवी उपा स्रोता द्वारा प्रशंसित होकर सबेरा (उष: काल प्रकट) करती हैं॥५॥

प्रति दयुतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदृश्रन्नुषसं वहन्तः ।
याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधते जनाय ॥६॥

दीप्तिमती उषा को ले जाने वाले विलक्षण, सुशोभित अश्व दिखाई पड़ रहे हैं । शुभ्रवर्णा उषा सुन्दर रथ से सर्वत्र गमन करती हैं तथा कर्मठ लोगों को ऐश्वर्य प्रदान करती हैं॥६॥

सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।
रुजदृद्दव्ळ्हानि ददुस्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त ॥७॥

सत्यस्वरूपा, पूज्या देवी उषा सत्यपालक महान देवों के साथ घने अन्धकार को समाप्त करती हैं तथा गौओं को प्रकाश देती हैं, इसलिए गौएँ उषा को चाहती हैं॥७॥

नू नो गोमद्वीरवद्धेहि रत्नमुषो अश्वावत्पुरुभोजो अस्मे ।
मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

हे उषादेवि ! हम सबके लिए गौ, अश्व और वीर पुत्र से युक्त धन प्रदान करे । मनुष्यों के समाज में हमारा यज्ञ निन्दित न हो। हमें सदा कल्याणकारी साधनों से सुरक्षित रखें॥८॥

सूक्त ७६

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – उषस: । छंद – त्रिष्टुप

उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत् ।
क्रत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुराविरकर्भुवनं विश्वमुषाः ॥१॥

विश्व नेता (मार्गदर्शन करने वाले) सविता देवता ने अमृत सदृश सर्वहितैषी ज्योति (प्रकाश) को धारण किया हैं। देव- नेत्र स्वरूप सूर्य देवकार्य के लिए प्रकट हुए हैं। देवी उषा सभी भुवनों को प्रकाश से भर देती हैं॥१॥

प्र मे पन्था देवयाना अदृश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः ।
अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात्प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः ॥२॥

हमने संस्कारित किये हुए स्थिर तेज और बिना कष्ट वाले देवों के आने-जाने के मार्ग को देख लिया है। उषा का केतु (तेज रूपी ध्वज) पूर्व दिशा में फहरने लगा है एवं उषा हमारे सामने ऊर्ध्वलोक से आती हैं॥२॥

तानीदहानि बहुलान्यासन्या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।
यतः परि जार इवाचरन्त्युषो दद्दक्षे न पुनर्यतीव ॥३॥

हे उषादेवि ! सूर्योदय से पहले ही आपका तेज प्रकाशित होता है, क्योंकि आप पतिव्रता स्त्री की तरह सूर्यदेव की सेवा करती हैं, कुलटा की तरह नहीं॥३॥

त इद्देवानां सधमाद आसन्नृतावानः कवयः पूर्व्यासः ।
गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्त्सत्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम् ॥४॥

प्राचीन काल के अंगिरागण सत्यव्रती, कवि, मन्त्रों को सिद्ध करने वाले और पालक थे । उन्होंने गुप्त तेज़ प्राप्त किया था एवं देवताओं के साथ सोमरस ग्रहण किया था। उन्होंने ही मंत्रों के बल से उषा को प्रादुर्भूत किया॥४॥

समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते ।
ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः ॥५॥

वे ऋषि गौ, यज्ञ आदि कार्यों के लिए संगठित होकर, एक विचार वाले हुए हैं। वे सदैव देवों की मर्यादा का पालन करते हुए आपस में हिंसा और कलह कभी भी नहीं करते, इसीलिए वे धन-ऐश्वर्य के स्वामी हुए॥५॥

प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः ।
गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व ॥६॥

हे सुभगा उषादेवि ! उष:काल में जाग कर वसिष्ठगण स्तोत्रों से आपकी प्रार्थना करते हैं। आप गौओं को प्राप्त करने वाली और अन्नों की सुरक्षा करने वाली हैं । सुजाता उषा, सबको प्रकाश देने के कारण देवों में प्रशंसित हैं॥६॥

एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ।
दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

अंधकार को मिटाने वाली एवं वसिष्ठों द्वारा प्रशंसित होने वाली ये देवी उषा स्तुतियों की प्रेरक हैं । ऐसी हे उषादेवि ! आप हमें प्रसिद्ध, श्रेष्ठ धन प्रदान करके हमारा पालन एवं कल्याण करें॥७॥

सूक्त ७७

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – उषस: । छंद – त्रिष्टुप

उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।
अभूदग्निः समिधे मानुषाणामकर्ज्योतिर्बाधमाना तमांसि ॥१॥

उषादेवी तरुण पत्नी की तरह सूर्यदेव रूपी पति के प्रकट होने के पहले ही जगत् के जीवों में कर्म करने की प्रेरणा भरने की शक्ति सूर्यदेव से ही पाती हैं। ऐसे समय में मनुष्य अग्निदेव को प्रदीप्त (प्रसन्न करें । अग्निदेव प्रसन्न होकर तम को नष्ट करने वाली ज्योति प्रकट करते हैं॥१॥

विश्वं प्रतीची सप्रथा उदस्थाद्रुशद्वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत् ।
हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंदृग्गवां माता नेत्र्यह्नामरोचि ॥२॥

सर्व प्रसिद्ध देवी उषा जगत् के सम्मुख उदित होकर, तेजपूरित श्वेत वस्त्रों को धारण करके बढ़ रही हैं। स्वर्ण के रंग के तेज वाली, सुन्दर

किरणों की माता एवं दिन की नेतृत्वकर्जी देवी उषा अत्यधिक सुशोभित हो रही हैं॥२॥

देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम् ।
उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता ॥३॥

देवताओं की नेत्र-ज्योति को धारण करने वाली, सौभाग्यशालिनी, विलक्षण धनवाली, सुन्दर श्वेत वर्ण-किरणों द्वारा बढ़ती हुई (देवी उषा) विश्व में और अधिक प्रभापूर्ण हो रही हैं॥३॥

अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः ।
यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ॥४॥

हे उषादेवि ! आप प्रकाशित होकर, हमसे द्वेष करने वाले शत्रुओं को दूर करें । आप हमारी गो (इन्द्रियों) के उपयोग के क्षेत्र को भयरहित बनाएँ । हे धन-सम्पन्न उषादेवि ! आप धन लाकर स्तोताओं को प्रदान करें॥४॥

अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाह्युषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।
इषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्वावद्रथवच्च राधः ॥५॥

हे उषादेवि ! आप हमारे लिए हितकारी सूर्य-रश्मियों सहित प्रकाशित होकर, हमारी आयु को बढ़ाएँ । हम सबको गौ, अश्व एवं रथों सहित पर्याप्त धन प्रदान करें॥५॥

यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।
सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हे उषादेवि ! आप द्युलोक की कुलीन पुत्री हैं। आपकी, वसिष्ठ ऋषिगण स्तुति करते हैं। आप हमें उपयोगी और महत्वपूर्ण धन प्रदान करें। आप हमारा पालन करें, कल्याण करें॥६॥

सूक्त ७८

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वैशिष्ठ:
देवता – उषस: । छंद – त्रिष्टुप

प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन्नूर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते ।
उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि ॥१॥

इन (देवी उषा) के प्रथम केतु (किरण पुंज) दिख रहे हैं। उनकी वे गतिशील (किरणें) ऊँचे भागों का आश्रय लेती हैं। हे उषादेवि ! आप हमारे लिए तेजोयुक्त रथ पर धन लेकर पधारें॥१॥

प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गृणन्तः ।
उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिताप देवी ॥२॥

(उषाकाल में) सर्वत्र अग्निदेव समिधाओं द्वारा प्रदीप्त होते हैं। ज्ञानी जन स्तोत्रों से स्तुति करते हुए देवत्व (की ओर) प्रगति करते हैं। देवी उषा सब अन्धकारों एवं पापों को क्षीण करती हुई जाती हैं॥२॥

एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन्पुरस्ताज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः ।
अजीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्निमपाचीनं तमो अगादजुष्टम् ॥३॥

आभामयी एवं तेजोमयी इन समस्त उषाओं का प्रथम दर्शन पूर्व में ही होता हैं । उषा काल में ही सूर्यदेव, अग्निदेव एवं यज्ञदेव प्रकट होते हैं। इनके तेज से निम्नगामी (गहरे स्थानों में परिव्याप्त) एवं अप्रिय अन्धकार नष्ट होता है॥३॥

अचेति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् ।
आस्थाद्रथं स्वधया युज्यमानमा यमश्वासः सुयुजो वहन्ति ॥४॥

हे धनवती उषादेवि ! आप द्‌युलोक की पुत्री के रूप में प्रसिद्ध हैं । अन्न से भरपूर रथ पर आरूढ़ देवी उषा को समस्त लोग देखते हैं। नियोजित-सुशिक्षित घोड़े उस रथ को ले जाते हैं॥४॥

प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्तास्माकासो मघवानो वयं च ।
तिल्विलायध्वमुषसो विभातीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

हे उषादेवि ! धनी एवं बुद्धिमान् जन तथा हम सब आपको जानते हैं । हे उषादेवि ! आप प्रकाशित होकर जगत् को स्नेहयुक्त करें । आप कल्याणकारी साधनों से सदैव हमारी रक्षा करें॥५॥

सूक्त ७९

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ:
देवता – उषस: । छंद – त्रिष्टुप

व्युषा आवः पथ्या जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्बोधयन्ती ।
सुसंदृग्भिरुक्षभिर्भानुमश्रेद्वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः ॥१॥

मानवों की हितैषी देवी उषा अन्धकार को नष्ट करती हुई पाँचों जनों को, सूर्याश्रित, उत्तम, तेजस्वी रश्मियों द्वारा जगाती हैं । सूर्य देव भी अपने तेज से द्यावा-पृथिवी को भर देते हैं॥१॥

व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून्विशो न युक्ता उषसो यतन्ते ।
सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू ॥२॥

उषा देवियाँ अपने तेज को अन्तरिक्ष में फैलाती हैं एवं प्रजाओं की तरह परस्पर मिलकर, अन्धकार को विनष्ट करने का यत्न करती हैं। सूर्यदेव की भाँति ही वे (देवी उषा) ज्योतित बाहुओं (किरणों) को फैलाती हैं॥२॥

अभूदुषा इन्द्रतमा मघोन्यजीजनत्सुविताय श्रवांसि ।
वि दिवो देवी दुहिता दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि ॥३॥

धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न श्रेष्ठ स्वामिनी देवी उषा प्रकट हुई एवं सबके निमित्त हितकारी अन को उत्पन्न किया। द्युलोक की पुत्री देवी उषा तेजस्विनी होकर श्रेष्ठ कर्म करने वालों के लिए धन प्रदान करती हैं॥३॥

तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत्स्तोतृभ्यो अरदो गृणाना ।
यां त्वा जज्ञुर्वृषभस्या रवेण वि दृव्ळ्हस्य दुरो अद्रेरौर्णोः ॥४॥

हे उषादेवि ! आपने जो धन पहले भी स्तोताओं को प्रदान किये हैं, प्रसन्न होकर वैसे ही धन हमें भी दें। वृषभ (प्रवृद्ध स्तोत्र) के रव (शब्द) को सुनकर हम सब आपको (आपकी उपस्थिति को) जानते हैं। आपने सुदृढ़ पर्वत के किले का द्वार (जिसमें पणियों द्वारा गौएँ बँधी थी) खोल दिया हैं॥४॥

देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मद्र्यक्सूनृता ईरयन्ती ।
व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

हे उषादेवि ! आप स्तोताओं को धन के लिए एवं हमें सत्यभाषण के लिए प्रेरित करती हैं। आप अन्धकार का नाश करती हैं। हमें धन प्रदान करने के लिए आप स्थिरमति हों । कल्याणकारी साधनों द्वारा आप हमारा पालन करें॥५॥

सूक्त ८०

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – उषस: । छंद – त्रिष्टुप

प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अबुध्रन् ।
विवर्तयन्तीं रजसी समन्ते आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा ॥१॥

वसिष्ठ गोत्र के ज्ञानी ऋषिगण सर्वप्रथम अपने स्तोत्रों द्वारा स्तुति करके, देवी उषा को जगाते हैं। देवी उषा समान क्षेत्रवाली द्यावा-पृथिवीं और सब प्राणियों को प्रकाश से भर देती हैं॥१॥

एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूढ्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि ।
अग्र एति युवतिरह्रयाणा प्राचिकितत्सूर्यं यज्ञमग्निम् ॥२॥

ये वहीं देवी उषा हैं, जो तरुण होती हुई अपने तेज से गहन अन्धकार को दूर करती हैं । संकोच न करने वाली नव युवती (पत्नी) की तरह देवी उषा अपने (पति) सूर्य के पहले ही आगमन करती हैं। वे, सूर्य, यज्ञ एवं अग्नि को प्रज्ञापित (सूचित) करती हैं॥२॥

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥

अनेकों घोड़ों और गौओं वाली देवी उषा घृत एवं दुग्ध को सर्वत्र बढ़ाती हैं । हे उषादेवि ! आप हमारा कल्याणकारी साधनों से पालन करें॥३॥

सूक्त ८१

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – उषस: । छंद – प्रगाथ

प्रत्यु अदर्श्यायत्युच्छन्ती दुहिता दिवः ।
अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥१॥

द्युलोक की पुत्री, अन्धकार को नष्ट करने वाली देवी उषा दिखाई दे रही हैं। वे अन्धकार को दूर करके प्रकाश फैलाती हैं, ताकि सब लोग सब कुछ देख सकें॥१॥

उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचाँ उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥२॥

सूर्यदेव उदित होने के पूर्व नक्षत्रों को प्रकाशित करते हैं । सूर्यदेव रश्मियों को एक साथ विकीर्ण करते हैं। हे उषादेवि ! आपके एवं सूर्यदेव के प्रकाशित होने पर हमें श्रेष्ठ अन प्राप्त हो॥२॥

प्रति त्वा दुहितर्दिव उषो जीरा अभुत्स्महि ।

या वहसि पुरु स्पार्हं वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयः ॥३॥

धुलोक की पुत्री हे उषादेवि ! हम शीघ्रतापूर्वक कर्म करके आपको जगायेंगे । हे धनवती देवि ! आप यजमान के सुख के लिए बहुत-सा श्रेष्ठ धन प्रदान करती हैं॥३॥

उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्रख्यै देवि स्वर्दृशे ।
तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः ॥४॥

हे उषा देवि ! आप अन्धकार को नष्ट कर, अपना महत्त्व प्रकट करती हैं। रत्नों वाली आप जगत् के दर्शन के लिए प्रकाश करती हैं। जैसे माता, पुत्रों को पोषित करती है, उसी प्रकार आप हमें भी पोषित करें॥४॥

तच्चित्रं राध आ भरोषो यद्दीर्घश्रुत्तमम् ।
यत्ते दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तद्रास्व भुनजामहै ॥५॥

हे उषादेवि ! आप हमें वह धन प्रदान करें, जिससे यश बढ़े । हे स्वर्गलोक की पुत्री उषा देवि ! आप अपने पास के मानवोचित भोग्य अन्नों को हमें प्रदान करें॥५॥

श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजाँ अस्मभ्यं गोमतः ।
चोदयित्री मघोनः सूनृतावत्युषा उच्छदप स्रिधः ॥६॥

हे उषादेवि ! आप अपने स्तुतिकर्ताओं को यश और अक्षय धन प्रदान करें । हम सबको गौओं के सहित अन्न प्रदान करें । सत्य भाषण एवं यज्ञीय कर्म करने की प्रेरिका हे उषादेवि ! आप शत्रुओं का नाश करें॥६॥

सूक्त ८२

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्रवरुणौ । छंद – जगती

इन्द्रावरुणा युवमध्वराय नो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।
दीर्घप्रयज्युमति यो वनुष्यति वयं जयेम पृतनासु दूढ्यः ॥१॥

हे इन्द्रदेव और वरुणदेव ! आप दोनों हमारे प्रजाजनों को यज्ञ कर्म करने के लिए विशाल गृह प्रदान करें । महान् यज्ञकर्ताओं को कष्ट देने वाले बलिष्ठ शत्रुओं को हम युद्ध में आपकी कृपा से जीत लें॥१॥

सम्राळन्यः स्वराळन्य उच्यते वां महान्ताविन्द्रावरुणा महावसू ।
विश्वे देवासः परमे व्योमनि सं वामोजो वृषणा सं बलं दधुः ॥२॥

महत्त्वपूर्ण धन के स्वामी हे महान् इन्द्र और वरुणदेव ! आप में से एक स्वराट् तथा दूसरा सम्राट् है । कामनाओं की पूर्ति करने वाले आप दोनों को परमोच्च आकाश में विश्वेदेवों ने तेज और बल प्रदान किया है॥२॥

अन्वपां खान्यतृन्तमोजसा सूर्यमैरयतं दिवि प्रभुम् ।
इन्द्रावरुणा मदे अस्य मायिनोऽपिन्वतमपितः पिन्वतं धियः ॥३॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप दोनों ने सर्वप्रेरक सवितादेव को आकाश में गमन के लिए प्रेरित किया । आपने अपनी सामर्थ्य से जल वृष्टि कराई । शक्तिवर्धक सोमपान करके अपने नदियों को जल से पूरित किया एवं हमारे सत्कर्मों को पूर्ण किया॥३॥

युवामिद्युत्सु पृतनासु वह्नयो युवां क्षेमस्य प्रसवे मितज्ञवः ।
ईशाना वस्व उभयस्य कारव इन्द्रावरुणा सुहवा हवामहे ॥४॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! ज्ञानीजन घुटने टेक कर एवं योद्धा संग्राम के समय सुरक्षा की आशा से आपको पुकारते हैं । दिव्यलोक एवं पृथ्वीलोक के धन के स्वामी, सरलता से पुकार सुनने वाले आपको हम स्तोतागण सहायता के लिए पुकारते हैं॥४॥

इन्द्रावरुणा यदिमानि चक्रथुर्विश्वा जातानि भुवनस्य मज्मना ।
क्षेमेण मित्रो वरुणं दुवस्यति मरुद्भिरुग्रः शुभमन्य ईयते ॥५॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आपने जगत् के समस्त प्राणियों का सृजन किया है । लोक कल्याण के लिए सक्रिय वरुणदेव का सहयोग मित्रदेव करते हैं। दूसरे (इन्द्रदेव) मरुद्देवों के साथ तेजस्वी होकर सुशोभित होते हैं॥५॥

महे शुल्काय वरुणस्य नु त्विष ओजो मिमाते ध्रुवमस्य यत्स्वम् ।
अजामिमन्यः श्नथयन्तमातिरद्दभ्रेभिरन्यः प्र वृणोति भूयसः ॥६॥

इन्द्र और वरुणदेव, महान् सम्पत्ति एवं स्वयं के स्थायी बल को बढ़ाते हुए तेजस्वी होते हैं। इनका यह बल नित्य और असामान्य है । वरुणदेव हिंसक शत्रुओं को भी पार कर जाते हैं एवं दूसरे (इन्द्रदेव) थोड़े साधनों के द्वारा ही अनेकानेक शत्रुओं को बाधित कर देते हैं॥६॥

न तमंहो न दुरितानि मर्त्यमिन्द्रावरुणा न तपः कुतश्चन ।
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं न तं मर्तस्य नशते परिह्वृतिः ॥७॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप जिसके यज्ञ में पहुँचते हैं एवं जिसका आप कल्याण करना चाहते हैं, उस मानव को पाप, संताप एवं दुष्टकर्म कष्ट नहीं पहुँचा सकते । वह आपकी कृपा से सुरक्षित रहता हैं॥७॥

अर्वाङ्नरा दैव्येनावसा गतं शृणुतं हवं यदि मे जुजोषथः ।
युवोर्हि सख्यमुत वा यदाप्यं मार्डीकमिन्द्रावरुणा नि यच्छतम् ॥८॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप हमारे स्तोत्रों को सुनें और यदि प्रसन्न हों, तो हमारे पास आकर हमें दिव्य संरक्षण प्रदान करें। आप दोनों मित्रता, बन्धुत्व एवं सुख के साधन, हमें प्रदान करें॥८॥

अस्माकमिन्द्रावरुणा भरेभरे पुरोयोधा भवतं कृष्ट्योजसा ।
यद्वां हवन्त उभये अध स्पृधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु ॥९॥

अपने बल से शत्रुओं को घसीटने वाले हे इन्द्रदेव और वरुणदेव ! आप संग्राम-भूमि में हमारा नेतृत्व करें। प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों समय के मनुष्य युद्ध में विजय, पुत्र-पौत्रादि एवं सुख प्राप्ति की कामना से आपका आवाहन करते हैं॥९॥

अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।
अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे ॥१०॥

इन्द्रदेव, वरुणदेव, मित्रदेव और अर्यमादेव हमें विशाल तेजस्वी निवास, धन एवं सुख प्रदान करें । यज्ञ को बढ़ाने वाली देवी अदिति का तेज हमारा पालन करे । हम सब सविता देवता की स्तुति करते हैं॥१०॥

सूक्त ८३

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्रवरुणौ । छंद – जगती

युवां नरा पश्यमानास आप्यं प्राचा गव्यन्तः पृथुपर्शवो ययुः ।
दासा च वृत्रा हतमार्याणि च सुदासमिन्द्रावरुणावसावतम् ॥१॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! जो गौओं को पाने की इच्छा से परशु को धारण करते हों एवं आपकी ओर बन्धुभाव से देखते हों, उन्हें आप उन्नति की ओर ले चलें । आप दास, वृत्र और सुदास के शत्रुओं का संहार करके अपने भक्तों का रक्षण करें॥१॥

यत्रा नरः समयन्ते कृतध्वजो यस्मिन्नाजा भवति किं चन प्रियम् ।
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दृशस्तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम् ॥२॥

जहाँ मनुष्य अपनी-अपनी ध्वज्ञाएँ उठाये युद्ध-संग्राम के निमित्त एकत्रित होते हैं, ऐसे युद्धों से मानवों का अहित ही होता है । हे इन्द्रदेव और वरुणदेव ! आप सुख-शान्ति जैसी स्वर्गीय स्थिति के पक्षधर हम सबको संग्राम में संरक्षण प्रदान करें॥२॥

सं भूम्या अन्ता ध्वसिरा अदृक्षतेन्द्रावरुणा दिवि घोष आरुहत् ।
अस्थुर्जनानामुप मामरातयोऽर्वागवसा हवनश्रुता गतम् ॥३॥

युद्ध में पृथ्वी के सारे अन्न, सेना द्वारा नष्ट किये जाते हैं और संग्राम के लिए तत्पर सैनिकों का कोलाहल आकाश में गूंजता है । मानवों के शत्रु हमारे सम्मुख आ गये हैं, अत: आवाहन सुनने वाले हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप हमारे पास आये और सुरक्षा प्रदान करें॥३॥

इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति भेदं वन्वन्ता प्र सुदासमावतम् ।
ब्रह्माण्येषां शृणुतं हवीमनि सत्या तृत्सूनामभवत्पुरोहितिः ॥४॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आपने अपने आयुधों के द्वारा 'भेद' (शत्रु) को मार डाला (विघटन दूर करके संगठित किया) तथा अपने भक्त 'सुदास' राजा की रक्षा की । युद्धकाल में 'तृत्सुओं' का पौरोहित्य सफल रहा। क्योंकि आपने उनके स्तोत्रों को सुना॥४॥

इन्द्रावरुणावभ्या तपन्ति माघान्यर्यो वनुषामरातयः ।
युवं हि वस्व उभयस्य राजथोऽध स्मा नोऽवतं पार्ये दिवि ॥५॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! शत्रुओं के हथियार एवं हिंसक शत्रु हमें अति कष्ट दे रहे हैं । दिव्य एवं पार्थिव दोनों धन के स्वामी हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप संग्राम के समय हमारी रक्षा करें॥५॥

युवां हवन्त उभयास आजिष्विन्द्रं च वस्वो वरुणं च सातये ।
यत्र राजभिर्दशभिर्निबाधितं प्र सुदासमावतं तृत्सुभिः सह ॥६॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! युद्ध के समय दोनों (सुदास और तृत्सु) लोग धन प्राप्ति की कामना से आप दोनों का आवाहन करते हैं । इस युद्ध में दस राजाओं द्वारा पीड़ित 'सुदास' की 'तृत्सुओं सहित आपने रक्षा की॥६॥

दश राजानः समिता अयज्यवः सुदासमिन्द्रावरुणा न युयुधुः ।
सत्या नृणामद्मसदामुपस्तुतिर्देवा एषामभवन्देवहूतिषु ॥७॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप दोनों के संरक्षण में रहने वाले 'सुदास' राजा को यज्ञ विहीन दस राजा मिलकर भी परास्त नहीं कर सके । हविर्दान कर्ताओं के स्तो-पाठ सफल हुए। इनके यज्ञ में सभी देवता उपस्थित थे॥७॥

दाशराज्ञे परियत्ताय विश्वतः सुदास इन्द्रावरुणावशिक्षतम् ।
श्वित्यञ्चो यत्र नमसा कपर्दिनो धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सवः ॥८॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! दस राजाओं ने मिलकर 'सुदास' को चारों ओर से घेर लिया था, तब आपने बल प्रदान करके उनकी सुरक्षा की थी, क्योंकि उस देश में निर्मल जटाधारी, ज्ञानी तृत्सुजन, नमस्कारपूर्वक यज्ञकर्म में सेवा करते हैं॥८॥

वृत्राण्यन्यः समिथेषु जिघ्नते व्रतान्यन्यो अभि रक्षते सदा ।
हवामहे वां वृषणा सुवृक्तिभिरस्मे इन्द्रावरुणा शर्म यच्छतम् ॥९॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आपमें से इन्द्रदेव संग्राम में शत्रुओं के संहारक हैं एवं दूसरे वरुणदेव सदैव सत्कर्मों के रक्षक हैं। अभीष्ट कामनाओं की वर्षा करने वाले आप दोनों को हम स्तुति द्वारा आवाहन करते हैं। आप हमें सुखी बनाएँ॥९॥

अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।
अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे ॥१०॥

इन्द्रदेव, वरुणदेव, मित्रदेव एवं अर्यमादेव हमें विशाल निवास, तेजस्वी धन एवं सुख प्रदान करें। यज्ञ को बढ़ाने वाली देवी अदिति का तेज हमारा पालन करे । हम सब सवितादेव की स्तुति करते हैं॥१०॥

सूक्त ८४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्रवरुणौ । छंद – त्रिष्टुप

आ वां राजानावध्वरे ववृत्यां हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।
प्र वां घृताची बाह्वोर्दधाना परि त्मना विषुरूपा जिगाति ॥१॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! हम स्तुति एवं आहुतियों द्वारा इस यज्ञ में आपको बुलाते हैं। हाथों में धारण की गई विविध वि एवं घृत से आपूरित जुहू (पात्र) स्वयं आपकी ओर आती है॥१॥

युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौर्यौ सेतृभिररज्जुभिः सिनीथः ।
परि नो हेळो वरुणस्य वृज्या उरुं न इन्द्रः कृणवदु लोकम् ॥२॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आपका द्युलोकरूपी विशाल राष्ट्र सबको प्रसन्न करता है। आप रज्जुरहित बन्धनों (रोगादि-मोहादि) के द्वारा पापियों को बाँध लें । वरुणदेव हमें सुरक्षित रखते हुए अन्यों (दुष्टों) पर क्रोध करें । इन्द्रदेव हमारे लिए क्षेत्र का विस्तार करें॥२॥

कृतं नो यज्ञं विदथेषु चारुं कृतं ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता ।

उपो रयिर्देवजूतो न एतु प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेतम् ॥३॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप हमारे गृहों के यज्ञों को उत्तम बनाएँ एवं स्तोताओं के स्तोत्रों को प्रशंसित बनाएँ । देवताओं द्वारा प्रेरित धन हमें प्राप्त हो; प्रशंसनीय रक्षण-साधनों से वे हमें संवर्धित करें॥३॥

अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं रयिं धत्तं वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।
प्र य आदित्यो अनृता मिनात्यमिता शूरो दयते वसूनि ॥४॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! हम सबके लिए श्रेष्ठ घर, अन्न एवं धन प्रदान करें। जो आदित्य असत्य को नष्ट करते हैं, वे देव ही पराक्रमी जनों को धनवान् बनाते हैं॥४॥

इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

इन्द्र और वरुणदेव तक हमारी स्तुतियाँ पहुँचें, जो पुत्र-पौत्रादि सहित हमारी रक्षा करें । हम श्रेष्ठ रत्न वाले होकर सप्त कर्मरूप यज्ञ करें । आप अपनी कल्याणकारी संरक्षक शक्तियों से हमारा पालन करें॥५॥

सूक्त ८५

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्रवरुणौ । छंद – त्रिष्टुप

पुनीषे वामरक्षसं मनीषां सोममिन्द्राय वरुणाय जुह्वत् ।
घृतप्रतीकामुषसं न देवीं ता नो यामन्नुरुष्यतामभीके ॥१॥

हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप दोनों की अराक्षस मनीषा (दैवी विचार-प्रवाह) को हम (वसिष्ठ ऋषि), देवी उषा की भाँति पवित्र करते हैं । तेजस्वी स्तुति एवं सोम की आहुतियों से आप दोनों को प्रसन्न करते हैं, आप संग्राम के समय हमारी रक्षा करें॥१॥

स्पर्धन्ते वा उ देवहूये अत्र येषु ध्वजेषु दिद्यवः पतन्ति ।
युवं ताँ इन्द्रावरुणावमित्रान्हतं पराचः शर्वा विषूचः ॥२॥

शत्रु पक्ष एवं हमारे पक्ष के वीरों के परस्पर स्पर्धा वाले युद्ध में ध्वजाओं पर भी शस्त्र प्रहार होते हैं । हे इन्द्र और वरुणदेव ! आप दोनों हिंसक आयुधों द्वारा शत्रुओं का नाश करें॥२॥

आपश्चिद्धि स्वयशसः सदःसु देवीरिन्द्रं वरुणं देवता धुः ।
कृष्टीरन्यो धारयति प्रविक्ता वृत्राण्यन्यो अप्रतीनि हन्ति ॥३॥

दिव्य सोम, यज्ञ-गृहों में तेजस्वी होकर इन्द्र और वरुण आदि देवताओं को धारण किए हुए हैं। वरुणदेव प्रजाजनों को पृथक्-पृथक् धारण करते हैं एवं इन्द्रदेव दुर्धर्ष शत्रुओं को भी नाश करते हैं॥३॥

स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु होता य आदित्य शवसा वां नमस्वान् ।
आववर्तदवसे वां हविष्मानसदित्स सुविताय प्रयस्वान् ॥४॥

हे अदिति पुत्रो ! आप यज्ञ विधि के परम ज्ञाता हैं । जो नमस्कारपूर्वक आपकी सेवा करते हैं, जो हविष्यान्न से आहुति प्रदान करने के निमित्त आपका आवाहन करते हैं, वे अन्नसहित उत्तम फलों को प्राप्त करते हैं॥४॥

इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

इन्द्र और वरुणदेव तक हमारी स्तुतियाँ पहुँचें । वे हमारी एवं हमारे पुत्र-पौत्रों की रक्षा करें । हम उत्तम रत्नयुक्त होकर सत्कर्मरूप यज्ञ सम्पन्न करें । आप अपनी कल्याणकारी संरक्षक शक्तियों से हमारा पालन करें॥५॥

सूक्त ८६

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्रवरुणौ । छंद – त्रिष्टुप

धीरा त्वस्य महिना जनूंषि वि यस्तस्तम्भ रोदसी चिदुर्वी ।
प्र नाकमृष्वं नुनुदे बृहन्तं द्विता नक्षत्रं पप्रथच्च भूम ॥१॥

इन धैर्यवान् वरुणदेव का जन्म महिमायुक्त है। इन्हीं देव ने विस्तृत द्यावा-पृथिवी को स्थिर किया है । ये दोनों समय में (दिन में विशाल सूर्य एवं (रात्रि में) नक्षत्रों को प्रेरित करते हैं। इन्हीं देव ने भूमि को विस्तृत किया है॥१॥

उत स्वया तन्वा सं वदे तत्कदा न्वन्तर्वरुणे भुवानि ।
किं मे हव्यमहृणानो जुषेत कदा मृळीकं सुमना अभि ख्यम् ॥२॥

क्या हम अपने इस शरीर के साथ वरुणदेव से बात करेंगे? कब वरुणदेव के साथ रहेंगे? क्या हमारी आहुति वरुणदेव शान्तिपूर्वक स्वीकार करेंगे? हम कब श्रेष्ठ विचारवान् होकर वरुणदेव के दर्शन करेंगे ?॥२॥

पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षूपो एमि चिकितुषो विपृच्छम् ।

समानमिन्मे कवयश्चिदाहुरयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते ॥३॥

हे वरुणदेव ! हमने विभिन्न विद्वानों से पूछा है, सभी ने हमें बताया कि वरुणदेव क्रोधित हैं। " वह बात (क्रोध का कारण) हम आप से ही पूछते हैं॥३॥

किमाग आस वरुण ज्येष्ठं यत्स्तोतारं जिघांससि सखायम् ।
प्र तन्मे वोचो दूळभ स्वधावोऽव त्वानेना नमसा तुर इयाम् ॥४॥

हे वरुणदेव ! हमने ऐसा कौन-सा अपराध किया है, जिसके कारण आप हमारे मित्र स्तोता को मारते हैं । हे दुर्धर्ष तेजस्वी वरुणदेव ! आप हमारे द्वारा किया गया वह पाप बतायें, जिसका प्रायश्चित्त करके हम आपको (आपकी कृपा दृष्टि) प्राप्त करें॥४॥

अव द्रुग्धानि पित्र्या सृजा नोऽव या वयं चकृमा तनूभिः ।
अव राजन्पशुतृपं न तायुं सृजा वत्सं न दाम्नो वसिष्ठम् ॥५॥

हे वरुणदेव ! आप हमारे स्वकृत एवं वंशानुगत पापों का शमन करें । हे राजन् ! हे वरुणदेव ! चोर प्रायश्चित्त स्वरूप पशुओं को घासादि खिलाकर उन्हें तृप्त करके, चोरी के पाप से उसी तरह मुक्त हो जाते हैं, जैसे बँधा हुआ बछड़ा मुक्त हो जाता है। आप हमें भी इसी तरह पापों से मुक्त करें॥५॥

न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः ।

अस्ति ज्यायान्कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता ॥६॥

वह पाप स्वयं के दोष से नहीं होता है, बल्कि मद्यपान, क्रोध, जुआ और अज्ञान आदि से उत्पन्न होता है । पाप के क्षेत्र में जो ज्येष्ठ (कुशल) हैं, वे कनिष्ठ (अल्पज्ञ) को पाप में लगाते हैं। ऐसे लोग वृत्ति बिगड़ जाने के कारण स्वप्न में भी पाप में प्रवृत्त रहते हैं (तो जाग्रत् अवस्था का क्या कहना? जाग्रत् अवस्था में तो निरन्तर पाप में ही निरत रहते हैं ।)॥६॥

अरं दासो न मीळ्हुषे कराण्यहं देवाय भूर्णयेऽनागाः ।
अचेतयदचितो देवो अर्यो गृत्सं राये कवितरो जुनाति ॥७॥

हे कामनाओं की पूर्ति करने वाले, पालक वरुणदेव ! हम निष्पाप होकर आपकी भक्ति करते हैं। आप हम अज्ञानियों को ज्ञान प्रदान करें । हे ज्ञानी वरुणदेव ! आप स्तोताओं को धन की ओर प्रेरित करें॥७॥

अयं सु तुभ्यं वरुण स्वधावो हृदि स्तोम उपश्रितश्चिदस्तु ।
शं नः क्षेमे शमु योगे नो अस्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

हे अन्नवान् वरुणदेव ! हमारा यह स्तोत्र आपके हृदय में स्थान पाये। आप प्रसन्न होकर हमारे क्षेत्र और उपलब्धियों को कल्याणकारी बनाएँ। आप अपने कल्याणकारी रक्षण-साधनों द्वारा सदैव हमारा पालन करें॥८॥

सूक्त ८७

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – वरुण । छंद – त्रिष्टुप

रदत्पथो वरुणः सूर्याय प्रार्णांसि समुद्रिया नदीनाम् ।
सर्गो न सृष्टो अर्वतीर्ऋतायञ्चकार महीरवनीरहभ्यः ॥१॥

वरुणदेव ने सूर्यदेव के लिए पथ निर्धारित कर दिया है। समुद्र को प्राप्त होने वाली नदियों को जल से भर दिया है । गतिशील (अश्व या प्रवाहित जल) चञ्चला (अश्वा अथवा प्रवहमान नदियों) की ओर जाता है । द्रुतगामी (सूर्य) ने महती रात्रि को दिन से पृथक् कर दिया है॥१॥

आत्मा ते वातो रज आ नवीनोत्पशुर्न भूर्णिर्यवसे ससवान् ।
अन्तर्मही बृहती रोदसीमे विश्वा ते धाम वरुण प्रियाणि ॥२॥

हे वरुणदेव ! वायु आपकी आत्मा है । यह वायु जल को चारों और भेजता है । जैसे पशु घासादि (आहार) से अन्नोत्पादक होता है, वैसे ही जगत् का पोषक वायु भी (अन्नोत्पादक) है । हे वरुणदेव ! महान्

और विस्तृत द्यावा-पृथिवी के मध्य आपके समस्त स्थान लोकप्रिय हैं॥२॥

परि स्पशो वरुणस्य स्मदिष्टा उभे पश्यन्ति रोदसी सुमेके ।
ऋतावानः कवयो यज्ञधीराः प्रचेतसो य इषयन्त मन्म ॥३॥

वरुणदेव के सभी अनुचरगण प्रशंसनीय गति वाले हैं। वे सुन्दर द्यावा-पृथिवी के रूप में निरीक्षण करते हैं । वे सत्कर्म करने वालों , यज्ञ करने वालों एवं प्रज्ञावान् ऋषियों के स्तोत्रों का निरीक्षण करते तथा इष्ट तक पहुँचाते हैं॥३॥

उवाच मे वरुणो मेधिराय त्रिः सप्त नामाघ्न्या बिभर्ति ।
विद्वान्पदस्य गुह्या न वोचद्युगाय विप्र उपराय शिक्षन् ॥४॥

वरुणदेव ने मुझ मेधावी (शिष्य यो ऋत्विक्) से कहा "गौ (गाय, किरण, वाणी या पृथ्वी) के त्रि-सप्त (तीन४सात) नाम (भेद) हैं। पास आए (जिज्ञासु) शिष्य को शिक्षण देते हुए उन्होंने गुप्त पद प्रकट कर दिया॥४॥

तिस्रो द्यावो निहिता अन्तरस्मिन्तिस्रो भूमीरुपराः षड्विधानाः ।
गृत्सो राजा वरुणश्चक्र एतं दिवि प्रेङ्खं हिरण्ययं शुभे कम् ॥५॥

वरुणदेव के अन्तर्गत (अधिकार क्षेत्र में) द्युलोक के तीन विभाग एवं भूलोक के तीन प्रकार के विभाग हैं। छ: प्रकार के विभाग अर्थात् छ: ऋतुएँ भी हैं। वरुण राजा ने स्वर्ण के समान वर्ण वाले सूर्यदेव को द्युलोक में सबके हितों की रक्षा के लिए दीप्तिमान् बनाया है॥५॥

अव सिन्धुं वरुणो द्यौरिव स्थादद्रप्सो न श्वेतो मृगस्तुविष्मान् ।
गम्भीरशंसो रजसो विमानः सुपारक्षत्रः सतो अस्य राजा ॥६॥

वरुणदेव ने आकाश के समान ही समुद्र की स्थापना की है। वरुणदेव सोमरस के समान शुभवर्ण, गौर मृग की तरह बलवान हैं। वे अपने अति प्रशंसनीय बल के द्वारा अन्तरिक्ष का निर्माण करने वाले, दुःखों से पार ले जाने वाले एक मात्र राजा हैं॥६॥

यो मृळयाति चक्रुषे चिदागो वयं स्याम वरुणे अनागाः ।
अनु व्रतान्यदितेर्ऋधन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

जो वरुणदेव पापियों को भी प्रायश्चित्त करने पर, क्षमा करके सुख प्रदान करते हैं, उन्हीं धनवान् वरुणदेव के व्रतों का यथाक्रम संवर्धन करके, निष्पाप होकर हम उनके पास निवास करेंगे। आप (वरुणदेव) सदैव ही कल्याणकारी साधनों से हमारा पालन करें॥७॥

सूक्त ८८

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – वरुण । छंद – त्रिष्टुप

प्र शुन्ध्युवं वरुणाय प्रेष्ठां मतिं वसिष्ठ मीळ्हुषे भरस्व ।
य ईमर्वाञ्चं करते यजत्रं सहस्रामघं वृषणं बृहन्तम् ॥१॥

हे वसिष्ठ ! आप कामनाओं की पूर्ति करने वाले वरुणदेव के निमित्त शुद्ध एवं प्रिय स्तुतियाँ करें । वरुणदेव महान्, धनवान्, बलवान् एवं यजन करने योग्य हैं । वरुणदेव की कृपा से सूर्यदेव हमारे लिए प्रकट होते हैं॥१॥

अधा न्वस्य संदृशं जगन्वानग्नेरनीकं वरुणस्य मंसि ।
स्वर्यदश्मन्नधिपा उ अन्धोऽभि मा वपुर्दृशये निनीयात् ॥२॥

वरुणदेव जब सुन्दर पत्थर से निकले सोमरस का पान प्रचुर मात्रा में कर लेते हैं, तब वे अपने सुन्दर स्वरूप का हमें दर्शन कराते हैं। हम इन वरुणदेव के सुन्दर स्वरूप का दर्शन करके अग्निदेव की ज्वालाओं की स्तुति करते हैं॥२॥

आ यद्रुहाव वरुणश्च नावं प्र यत्समुद्रमीरयाव मध्यम् ।
अधि यदपां स्नुभिश्चराव प्र प्रेङ्ख ईङ्खयावहै शुभे कम् ॥३॥

जब हम नौका में वरुणदेव के साथ बैठे, नौका को समुद्र में चलाया एवं सागर में अन्य नौकाओं के साथ विचरण किया, तब हमने हितकारी झूले पर (मानों बैठे हुए) क्रीड़ा का आनन्द लिया॥३॥

वसिष्ठं ह वरुणो नाव्याधादृषिं चकार स्वपा महोभिः ।
स्तोतारं विप्रः सुदिनत्वे अह्नां यान्नु द्यावस्ततनन्यादुषासः ॥४॥

मेधावीं वरुणदेव ने अपनी सामर्थ्यों से वसिष्ठ को नौका पर चढ़ाया। दिन और रात्रि का विस्तार करके स्तोता विप्र वसिष्ठ को शुभ दिन में ऋषि (द्रष्टा, श्रेष्ठकर्मा) बनाया॥४॥

क्व त्यानि नौ सख्या बभूवुः सचावहे यदवृकं पुरा चित् ।
बृहन्तं मानं वरुण स्वधावः सहस्रद्वारं जगमा गृहं ते ॥५॥

हे वरुणदेव ! आपकी और हमारी मित्रता कहाँ हुई थी ? पूर्व समय की हिंसारहित मित्रता का हम निर्वाह करते चले आ रहे हैं। हे अन्नवान् वरुणदेव ! हम आपके विशाल परिमाण वाले और सहस्र द्वार वाले घर में जायेंगे ॥५॥

य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन्त्वामागांसि कृणवत्सखा ते ।
मा त एनस्वन्तो यक्षिन्भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम् ॥६॥

हे वरुणदेव ! आपके नित्य प्रिय बन्धु होकर भी जिन वसिष्ठ ने पूर्व समय में आपके प्रति अपराध किया था, वे (भी) आपके मित्र हों । हे पूजनीय वरुणदेव ! हम आपके हैं, इसलिए हमें पाप-मुक्त कर उत्तम सुखदायी आवास प्रदान करें॥६॥

ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तो व्यस्मत्पाशं वरुणो मुमोचत् ।
अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे वरुणदेव ! स्थायी भू-प्रदेश में रहते हुए हम आपकी स्तुति करते हैं। आप हमें बन्धन से छुड़ाएँ । हम अखण्ड सामर्थ्ययुक्त वरुण से रक्षा की कामना करते हैं। आप कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करें ॥७॥

सूक्त ८९

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – वरुण । छंद – गायत्री, ५ जगती

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम् ।
मृळा सुक्षत्र मृळय ॥१॥

हे राजा वरुणदेव ! मुझे सुन्दर घर रहने को मिले, मिट्टी का नहीं । शोभन धन वाले वरुणदेव हमें सुखी बनाएँ॥१॥

यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिवः ।
मृळा सुक्षत्र मृळय ॥२॥

हे सुदृढ़ किले में रहने वाले देव ! हम वायु से भरी हुई चमड़े की थैली की तरह चलते हैं, इसलिए हे शोभन धनवाले देव ! हमें सुखी बनाएँ॥२॥

क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे ।
मृळा सुक्षत्र मृळय ॥३॥

हे धनवान् और पवित्र वरुणदेव ! हमने दीनता और असमर्थता के कारण श्रौत-स्मार्त कर्मों की अवहेलना की हैं, इसलिए हम दुःखी हैं । हे श्रेष्ठ क्षात्र स्वभाव वाले वरुणदेव ! आप हमें आनन्दित करें॥३॥

अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम् ।
मृळा सुक्षत्र मृळय ॥४॥

जल के सागर में रहकर भी हम (आपके भक्त) प्यासे हैं । हे क्षात्र तेज वाले देव ! आप हमें सुखी करें, आनन्दित करे॥४॥

यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि ।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥५॥

हे वरुणदेव ! हम मनुष्यों द्वारा देव समूह के प्रति, जो अपकार, अज्ञानता के कारण अथवा असावधानी से हो गया है, उन पापों से आप हमें क्षीण न होने दें॥५॥

सूक्त ९०

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – वायु:, ५-७ इन्द्रवायू। छंद – त्रिष्टुप

प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः ।
वह वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय ॥१॥

हे वायुदेव ! आप वीर हैं, इसलिए आपको शुद्ध, मधुरतापूर्ण सोमरस अध्वर्युगण प्रदान करते हैं। आप रथ में अश्वों को नियोजित करें, हमारे पास आएँ और इस अन्न रूप सोमरस का पान करें॥१॥

ईशानाय प्रहुतिं यस्त आनट् छुचिं सोमं शुचिपास्तुभ्यं वायो ।
कृणोषि तं मर्त्येषु प्रशस्तं जातोजातो जायते वाज्यस्य ॥२॥

हे वायो ! ईश्वररूप आपको जो आहुति देता है, शुद्ध सोम पीने वाले आपको जो शुद्ध सोमरस देता है, उसे मनुष्यों में श्रेष्ठ बैनाएँ। वह सर्वत्र ऐश्वर्य प्राप्त करे, कीर्ति प्राप्त करे॥२॥

राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम् ।

अध वायुं नियुतः सश्चत स्वा उत श्वेतं वसुधितिं निरेके ॥३॥

जिन वायुदेव को द्यावा-पृथिवी ने ऐश्वर्य के लिए उत्पन्न किया, उन देव को प्रकाश स्वरूपिणी स्तुतियाँ धन के लिए धारण करती हैं। वे (वायुदेव) अश्वों द्वारा अपने धनहीन भक्त के पास तेजस्वी धन देने के लिए जाते हैं॥३॥

उच्छन्नुषसः सुदिना अरिप्रा उरु ज्योतिर्विविदुर्दीध्यानाः ।
गव्यं चिदूर्वमुशिजो वि वव्रुस्तेषामनु प्रदिवः सस्रुरापः ॥४॥

(उन देवों के लिए) पापरहित उषाएँ प्रकाशित हो गई हैं। उन्होंने देदीप्यमान होकर विशिष्ट ज्योति को प्राप्त किया है । अंगिराओं ने गो-धन प्राप्त किया तथा जल-प्रवाह ने उनका अनुसरण किया॥४॥

ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति ।
इन्द्रवायू वीरवाहं रथं वामीशानयोरभि पृक्षः सचन्ते ॥५॥

हे इन्द्रवायो ! आप ईश्वर हैं। यजमान लोग निष्पाप मन से, अपनी स्तुति के प्रभाव से यज्ञ में (रथ द्वारा) आपको बुलाते हैं। सभी अन्न आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं ॥५॥

ईशानासो ये दधते स्वर्णो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः ।
इन्द्रवायू सूरयो विश्वमायुरर्वद्भिर्वीरैः पृतनासु सह्युः ॥६॥

हे इन्द्रवायो ! जो सामर्थ्यवान् लोग हमें गौ, अश्व एवं निवासादि ऐश्वर्य के साथ सुखीं करते हैं, वे दातागण हमारे सम्पूर्ण जीवन को अश्व और वीरों के द्वारा शत्रुओं के बीच में विजयी बनाते हैं॥६॥

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

अश्व के समान हवि वहन करने वाले, बल की इच्छा वाले वसिष्ठगणं उत्तम स्तुतियों के द्वारा हमारे संरक्षण के लिए इन्द्र और वायुदेव को बुलाते हैं। आप सदा कल्याणकारी साधनों द्वारा हमारी रक्षा करें॥७॥

सूक्त ९१

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – १, ३ वायु:, २, ४-७ इन्द्रवायू। छंद – त्रिष्टुप

कुविदङ्ग नमसा ये वृधासः पुरा देवा अनवद्यास आसन् ।
ते वायवे मनवे बाधितायावासयन्नुषसं सूर्येण ॥१॥

प्राचीनकाल में जो वृद्ध स्तोताजन वायुदेव की प्रिय स्तुति करने के कारण प्रशंसित हुए थे, वे कष्ट-पीड़ित मानवों के कल्याण के लिए, वायुदेव को हवि प्रदान करने के समय, सूर्यदेव के साथ उषा की प्रार्थना करते रहें॥१॥

उशन्ता दूता न दभाय गोपा मासश्च पाथः शरदश्च पूर्वीः ।
इन्द्रवायू सुष्टुतिर्वामियाना मार्डीकमीट्टे सुवितं च नव्यम् ॥२॥

हे इन्द्रवायो ! आप हमारी रक्षा करने वाले हैं, हमें कष्ट मत देना। आप महीनों और वर्षों तक हमें संरक्षण प्रदान करना । आप हमारी प्रार्थना सुनें और सुखदायक एवं सुविधाजनक धन प्रदान करें॥२॥

पीवोअन्नाँ रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः ।
ते वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः ॥३॥

उत्तम मेधा वाले, अपने घोड़ों के आश्रयदाता, श्वेतवर्ण वायुदेव प्रचुर अन्न वाले समृद्ध जनों को तुष्ट करते हैं। वे नेतृत्व क्षमता वाले लोग भी समान मन होकर वायुदेव की यज्ञ के द्वारा उपासना करते हैं। उन (वायुदेव) ने सुन्दर प्रजाओं का निर्माण किया॥३॥

यावत्तरस्तन्वो यावदोजो यावन्नरश्चक्षसा दीध्यानाः ।
शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इन्द्रवायू सदतं बर्हिरेदम् ॥४॥

हे इन्द्रवायो ! आपके शरीर में जितना वेग एवं बल है, उसके प्रभाव से) जितने नेतृत्व क्षमता-सम्पन्न लोग (ज्ञान-बल से) प्रकाशित होते हैं; (उसी प्रमाण से) सोमपान करने वाले हे देव ! आप हमारे आसन पर बैठे और सोमपान करें॥४॥

नियुवाना नियुतः स्पार्हवीरा इन्द्रवायू सरथं यातमर्वाक् ।
इदं हि वां प्रभृतं मध्वो अग्रमध प्रीणाना वि मुमुक्तमस्मे ॥५॥

हे स्पृहणीय वीर इन्द्रवायो ! आप अपने अश्वों को एक रथ में नियोजित करके हमारे पास आएँ। यह मधुर सोम का मुख्य भाग आपके लिए है। इसे ग्रहण कर, हमें पापमुक्त करें॥५॥

या वां शतं नियुतो याः सहस्रमिन्द्रवायू विश्ववाराः सचन्ते ।
आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक्पातं नरा प्रतिभृतस्य मध्वः ॥६॥

हे इन्द्रवायो ! जो शत संख्यक अश्व आपकी सेवा में हैं एवं जो सबके द्वारा वरण किये गए सहस्र संख्यक अश्व आपकी सेवा करते हैं, श्रेष्ठ धन देने वाले उन्हीं अश्वों के साथ आप हमारे पास आएँ । हे नेतृत्व प्रदान करने वाले (इन्द्र-वायुदेव) ! भर कर रखे हुए इस सोमरस का आप पान करें॥६॥

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

अश्व के समान हवि वहन करने वाले, बल की इच्छा वाले वसिष्ठगण उत्तम स्तुतियों के द्वारा हमारे संरक्षण के लिए इन्द्र और वायु को बुलाते हैं । (हे इन्द्रवायो !) आप सदा कल्याणकारी साधनों द्वारा हमारी रक्षा करें॥७॥

सूक्त ९२

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – वायु:, २,४ इन्द्रवायू। छंद – त्रिष्टुप

आ वायो भूष शुचिपा उप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार ।
उपो ते अन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयम् ॥१॥

हे पवित्र सोमपानकर्ता वायुदेव ! आप सबके वरणीय हैं, आपके पास हजार घोड़े हैं, उन्हीं से) आप हमारे पास आएँ । जिस रस का आप प्रथम पान करते हैं, हम आपके लिए प्रसन्नतादायक वह सोमरस पात्र में लाते हैं॥१॥

प्र सोता जीरो अध्वरेष्वस्थात्सोममिन्द्राय वायवे पिबध्यै ।
प्र यद्वां मध्वो अग्रियं भरन्त्यध्वर्यवो देवयन्तः शचीभिः ॥२॥

सोम का रस निकालने वाले श्रेष्ठ कर्मा अध्वर्युओं ने यज्ञ में इन्द्र और वायुदेव के पीने के लिए सोमरस रखा है । हे इन्द्रवायो ! देवत्व प्राप्ति की कामना से इस यज्ञ में कर्म द्वारा आपके लिए अध्वर्युओं ने सोम का अग्र भाग रखा है॥२॥

प्र याभिर्यासि दाश्वांसमच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे ।
नि नो रयिं सुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः ॥३॥

हे वायो ! आप यज्ञ स्थान में हव्यदाता के सम्मुख यज्ञ के लिए जिन अश्वों से जाते हैं, उसी तरह हमारे पास आएँ और हमें श्रेष्ठ अन्नयुक्त धन दें । वीरपुत्र, गौ, अश्व आदि हर तरह का ऐश्वर्य प्रदान करें॥३॥

ये वायव इन्द्रमादनास आदेवासो नितोशनासो अर्यः ।
घ्नन्तो वृत्राणि सूरिभिः ष्याम सासह्वांसो युधा नृभिरमित्रान् ॥४॥

जो स्तोता इन्द्र और वायु की उपासना करते हैं, वे देवानुग्रह प्राप्त कर शत्रुविनाशक होते हैं। उनके सहयोग से हम भी शत्रुदमन में समर्थ हों॥४॥

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५॥

हे वायो ! हमारे इस अहिंसित यज्ञ में आप अपने शत-सहस्र अश्वों के साथ आएँ और सोमरस पीकर प्रमुदित हों। आप कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा करें॥५॥

सूक्त ९३

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इंद्रग्नि। छंद – त्रिष्टुप

शुचिं नु स्तोमं नवजातमद्येन्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम् ।
उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा ॥१॥

हे वृत्रहन्ता इन्द्र और अग्निदेव ! आज आप अपना शुद्ध और नवीन स्तोत्र सुनें । श्रेष्ठ, प्रशंसा-योग्य आप देवों को हम यज्ञ में बार-बार बुलाते हैं । उन्नति की इच्छा करने वाले यजमान के लिए आप अन्न एवं बल-सामर्थ्य प्रदान करें॥१॥

ता सानसी शवसाना हि भूतं साकंवृधा शवसा शूशुवांसा ।
क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरेः पृङ्क्तं वाजस्य स्थविरस्य घृष्वेः ॥२॥

हे इन्द्र और अग्निदेव ! आप दोनों बलशाली और यजन करने योग्य हैं। आप एक साथ प्रवृद्ध होकर शत्रुनाशक और प्रभावी बनें। आप अन्नाधिपति हैं, इसलिए हमें बहुत – सा अन्न एवं शत्रु – भंजक बल प्रदान करें॥२॥

उपो ह यद्विदथं वाजिनो गुर्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः ।
अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नरस्ते ॥३॥

श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्ति की इच्छावाले, अन्नवान् (आहुतियुक्त) विप्रगण जब यज्ञ के निमित्त जाते हैं, तो वे नेतृत्व क्षमता-सम्पन्न लोग काष्ठों (समिधाओं अथवा युद्धक्षेत्र) में प्रविष्ट चंचल (ज्वालाओं अथवा अश्वों की भाँति) इन्द्राग्नी का आवाहन करते हैं॥३॥

गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ईट्टे रयिं यशसं पूर्वभाजम् ।
इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा प्र नो नव्येभिस्तिरतं देष्णैः ॥४॥

हे इन्द्र और अग्निदेव ! उत्तम बुद्धि की इच्छा वाले ज्ञानी पुरुष प्रथम उपभोग्य धन के लिए आपसे प्रार्थना करते हैं। शोभायमान आयुध वाले वृत्रहन्ता इन्द्र और अग्निदेव नवीन और देने योग्य धन हमें प्रदान करें॥४॥

सं यन्मही मिथती स्पर्धमाने तनूरुचा शूरसाता यतैते ।
अदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा हतं सोमसुता जनेन ॥५॥

परस्पर युद्ध में स्पर्धा करने वाली विशाल शत्रु सेनाओं के मध्य में वीर अपने तेज द्वारा यश के लिए युद्ध करते हैं। यज्ञ करने वाले और देवाभिलाषी स्तोता की सहायता से देव विरोधी व्यक्तियों को नष्ट करें॥५॥

इमामु षु सोमसुतिमुप न एन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ।
नू चिद्धि परिमम्नाथे अस्माना वां शश्वद्भिर्ववृतीय वाजैः ॥६॥

हे इन्द्र और अग्निदेव ! मन के उत्तम भाव बढ़ाने के लिए इस सोम याग में पधारें । आप हमारे त्याग की बात सोचते भी नहीं, इसलिए बार-बार अन्न के लिए आपका आवाहन करते हैं॥६॥

सो अग्न एना नमसा समिद्धोऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचेः ।
यत्सीमागश्चकृमा तत्सु मृळ तदर्यमादितिः शिश्रथन्तु ॥७॥

हे अग्निदेव ! हविद्वारा प्रवृद्ध होकर इन्द्र, मित्र और वरुणदेव से हमारे अपराधों के क्षमा करने के लिए कहें । अर्यमा और अदिति से कहें कि हमें पापों से मुक्तकर सुखी करें॥७॥

एता अग्न आशुषाणास इष्टीर्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान् ।
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

हे अग्ने ! हम शीघ्र ही इन यज्ञों का आश्रय लेते हुए आपके द्वारा साथ-साथ अन्न-धन प्राप्त करें। विष्णु, इन्द्र और मरुद्गण हमें सुरक्षा प्रदान करें तथा कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करें॥८॥

सूक्त ९४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इंद्रग्नि। छंद – गायत्री, १२ अनुष्टुप

इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः ।
अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि ॥१॥

हे इन्द्राग्ने ! जैसे मेघ जलवृष्टि करते हैं, उसी तरह इस मनन करने वाले स्तोता की यह प्रथम स्तुति सुनें॥१॥

शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः ।
ईशाना पिप्यतं धियः ॥२॥

हे इन्द्र और अग्निदेव ! उपासक की प्रार्थना सुने तथा उसकी वाणी को ध्यान में रखें। आप ईश्वर हैं, इसलिए अनुष्ठान किये हुए कार्य को सफल करें॥२॥

मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये ।
मा नो रीरधतं निदे ॥३॥

हे नेतृत्व क्षमता वाले इन्द्र और अग्निदेव ! पापकर्म के लिए, अभिशप्त होने के लिए अथवा निन्दा के लिए कभी पराधीन मत करना ॥३॥

इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्सुवृक्तिमेरयामहे ।
धिया धेना अवस्यवः ॥४॥

हम अपनी सुरक्षा के लिए इन्द्र और अग्निदेव के पास प्रचुर हव्य तथा बुद्धिपूर्वक उत्तम वचनों से सुन्दर स्तुति-गान करते हैं॥४॥

ता हि शश्वन्त ईळत इत्था विप्रास ऊतये ।
सबाधो वाजसातये ॥५॥

रक्षण के इच्छुक उन इन्द्र और अग्निदेव की विद्वान् पुरुष प्रार्थना करते हैं। समान रूप से पीड़ित जन, धन-धान्य प्राप्ति के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं॥५॥

ता वां गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वन्तो हवामहे ।
मेधसाता सनिष्यवः ॥६॥

विशिष्ट ज्ञानसम्पन्न, प्रयासरत, धनाभिलाषी होकर हम लोग यज्ञ में आप दोनों की प्रार्थना करते हुए आपका आवाहन करते हैं॥६॥

इन्द्राग्नी अवसा गतमस्मभ्यं चर्षणीसहा ।
मा नो दुःशंस ईशत ॥७॥

हे शत्रु सैन्य-घातक इन्द्र और अग्निदेव ! आप अन्नादि संरक्षण के साधनों के साथ हमारे यहाँ आएँ । हम दुष्टों द्वारा शासित न हों॥७॥

मा कस्य नो अररुषो धूर्तिः प्रणङ्मर्त्यस्य ।
इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ॥८॥

हे इन्द्राग्निदेव ! हम शत्रुरूप मानव से पीड़ित न हों। हमें सुख मिले, हम सुखी हों॥८॥

गोमद्धिरण्यवद्वसु यद्वामश्वावदीमहे ।
इन्द्राग्नी तद्वनेमहि ॥९॥

हे इन्द्र और अग्निदेव ! हम आपसे जो गौ, अश्व, स्वर्णयुक्त धन माँगते हैं, उसे हम प्राप्त कर सकें॥९॥

यत्सोम आ सुते नर इन्द्राग्नी अजोहवुः ।
सप्तीवन्ता सपर्यवः ॥१०॥

सोमाभिषव होने पर याजक उत्तम अश्वों वाले इन्द्र और अग्निदेव की सेवा की कामना से बार-बार उनका आवाहन करते हैं॥१०॥

उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा ।
आङ्गूषैराविवासतः ॥११॥

वृत्रासुर का हनन करने वाले, आनन्ददायी स्वभाव वाले इन्द्र और अग्निदेव की उत्तम स्तोत्रों द्वारा सम्यक् रूप से हम वन्दना करते हैं॥११॥

ताविद्दुःशंसं मर्त्यं दुर्विद्वांसं रक्षस्विनम् ।
आभोगं हन्मना हतमुदधिं हन्मना हतम् ॥१२॥

वे दोनों (इन्द्र और अग्नि) दुष्टों, दुर्गुणी विद्वानों, राक्षसी स्वभाव वाले अपहरणकर्ताओं को घातक शस्त्रों से मारें, उन्हें जल रोक कर रखने वालों (वृत्रादि) की तरह मारें॥१२॥

सूक्त ९५

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – सरस्वती, ३ सरस्वान् छंद – त्रिष्टुप

प्र क्षोदसा धायसा सस्र एषा सरस्वती धरुणमायसी पूः ।
प्रबाबधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः ॥१॥

यह सरस्वती लोहे के परकोटे की तरह (रक्षा करती हुई) रक्षा करने वाली होकर जल (पोषक-प्रवाहों) के साथ बह रही है। यह (सरस्वती) रथ-वाहक सारथी की तरह अन्य (जल प्रवाहों, शब्द प्रवाहों) को बाधित करती हुई गतिशील है॥१॥

एकाचेतत्सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् ।
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय ॥२॥

पवित्र चेतनायुक्त प्रवाहों में एक यह सरस्वती गिरि (पर्वतों अथवा वाक् स्रोतों) से समुद्र (सागर या अन्तरिक्ष) तक जाती हैं । (यह इस लोक के बहुत श्रेष्ठ ऐश्वर्यों को सचेष्ट करती हुई नहुष (राजा नहुष की

प्रजा अथवा सम्बन्ध बनाने वाले व्यक्तियों) को दुग्ध-घृत (पोषक शक्ति वर्धक तत्त्व) देती रही है॥२॥

स वावृधे नर्यो योषणासु वृषा शिशुर्वृषभो यज्ञियासु ।
स वाजिनं मघवद्भ्यो दधाति वि सातये तन्वं मामृजीत ॥३॥

मनुष्यों के हितार्थ वर्षण सामर्थ्ययुक्त यह बलवान् शिशु (सरस्वान्) यज्ञीय योषित् (सहधर्मिणी जल या छंद धाराओ) के मध्य वृद्धि प्राप्त करता है । यह यज्ञ कर्ताओं को वाजिन्-बलवान् (पुत्र अथवा उत्पाद) प्रदान करता है । सभी के लाभार्थ शरीर का विशेष शोधन भी करता है॥३॥

उत स्या नः सरस्वती जुषाणोप श्रवत्सुभगा यज्णे अस्मिन् ।
मितज्ञुभिर्नमस्यैरियाना राया युजा चिदुत्तरा सखिभ्यः ॥४॥

ये सौभाग्य प्रदायिनी सरस्वती इस यज्ञ में हमारी स्तुति सुनकर प्रसन्न हों । घुटने टेककर नमनकर्ता (देव या साधक) इनके पास जाते हैं। ये सरस्वती श्रेष्ठ धन वाली हैं और मित्रता की भावना वालों के लिए दयालु हैं॥४॥

इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः प्रति स्तोमं सरस्वति जुषस्व ।
तव शर्मन्प्रियतमे दधाना उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम् ॥५॥

हे सरस्वती देवि ! हम हव्य द्वारा यजन करके नमनपूर्वक आपसे अधिक धन-अन्न प्राप्त करते हैं। आप हमारी प्रार्थना सुनें । हम आपके अत्यन्त प्रिय आवास में आश्रयभूत वृक्ष की तरह (विकासमान तथा परोपकारी बनकर) रहें॥५॥

अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो द्वारावृतस्य सुभगे व्यावः ।
वर्ध शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

उत्तम भाग्यशाली हे सरस्वती देवि ! स्तोता वसिष्ठ ऋषि यज्ञ का द्वार आपके लिए खोलते हैं। हे शुभवर्णा देवि! आप आगे बढ़ें और स्तोता को धन प्रदान करें। आप कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करें॥६॥

सूक्त ९६

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – सरस्वती, ४-६ सरस्वान् छंद – प्रगाथ

बृहदु गायिषे वचोऽसुर्या नदीनाम् ।
सरस्वतीमिन्महया सुवृक्तिभिः स्तोमैर्वसिष्ठ रोदसी ॥१॥

हे वसिष्ठ ! आप प्रवाहों में शक्तिशाली सरस्वती के लिए महान् स्तोत्रों का गान करें । द्युलोक एवं पृथ्वी में निवास करने वाली सरस्वती की श्रेष्ठ स्तोत्रों से वन्दना करें॥१॥

उभे यत्ते महिना शुभ्रे अन्धसी अधिक्षियन्ति पूरवः ।
सा नो बोध्यवित्री मरुत्सखा चोद राधो मघोनाम् ॥२॥

हे शुभवर्णा सरस्वती देवि ! आपकी कृपा से मनुष्य दिव्य एवं पार्थिव दोनों प्रकार के अन्न प्राप्त करता हैं। आप हमारी रक्षा करें । मरुतों से मैत्री करने वाली नदी, हविदाताओं को धन से परिपूर्ण करें॥२॥

भद्रमिद्भद्रा कृणवत्सरस्वत्यकवारी चेतति वाजिनीवती ।
गृणाना जमदग्निवत्स्तुवाना च वसिष्ठवत् ॥३॥

हितकारिणी सरस्वती निश्चितरूप से कल्याण करने वाली हैं। सुन्दर प्रवहमान और अन्न देने वाली सरस्वती देवी हमें चैतन्य बनाएँ। आप जिस प्रकार जमदग्नि ऋषि द्वारा पूजित हुई हैं, उसी तरह आप वसिष्ठ से भी स्तुत्य हैं॥३॥

जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः ।
सरस्वन्तं हवामहे ॥४॥

स्त्री और पुत्र की प्राप्ति की इच्छा वाले हम लोग श्रेष्ठ दान दाताओं में अग्रसर होकर सरस्वान् का आवाहन करते हैं॥४॥

ये ते सरस्व ऊर्मयो मधुमन्तो घृतश्चुतः ।
तेभिर्नोऽविता भव ॥५॥

हे सरस्वान् ! आप मधुर एवं घृत सदृश तरंगों के द्वारा हमारी रक्षा करें॥५॥

पीपिवांसं सरस्वतः स्तनं यो विश्वदर्शतः ।
भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥६॥

विश्वदर्शी सरस्वान् देव के स्तनवत् रस धार का हम पान करें और श्रेष्ठ संतति एवं धन-धान्य प्राप्त करें॥६॥

सूक्त ९७

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – १ इन्द्र, २, ४-८ बृहस्पति , ३,९ इन्द्रा ब्रह्मणस्पती, १० इन्द्रा बृहस्पती। छंद – त्रिष्टुप

यज्ञे दिवो नृषदने पृथिव्या नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
इन्द्राय यत्र सवनानि सुन्वे गमन्मदाय प्रथमं वयश्च ॥१॥

देवत्व की कामना वाले, नेतृत्व क्षमता से युक्त लोग जहाँ आनन्दित होते हैं, जिस यज्ञ में सोमरस इन्द्रदेव के लिए अभिषुत करते हैं; मानव मात्र का कल्याण करने वाले उस यज्ञ में सर्वप्रथम इन्द्रदेव शीघ्रगामी अश्वों के साथ अन्तरिक्ष से पधारें॥१॥

आ दैव्या वृणीमहेऽवांसि बृहस्पतिर्नो मह आ सखायः ।
यथा भवेम मीळ्हुषे अनागा यो नो दाता परावतः पितेव ॥२॥

हे मित्रो ! हम देवों से संरक्षण के लिए स्तुति करते हैं । बृहस्पतिदेव हमारे हव्य को स्वीकारें । बृहस्पतिदेव हमें उसी प्रकार धन देते हैं,

जैसे दूर देश से पिता धन लाकर पुत्र को देता है, इसलिए उन (बृहस्पतिदेव) के समक्ष निष्पाप होकर श्रेष्ठ आचरणपूर्वक जाएँ॥२॥

तमु ज्येष्ठं नमसा हविर्भिः सुशेवं ब्रह्मणस्पतिं गृणीषे ।
इन्द्रं श्लोको महि दैव्यः सिषक्तु यो ब्रह्मणो देवकृतस्य राजा ॥३॥

हम हव्य के साथ नमन करते हुए श्रेष्ठ एवं सेवनीय ब्रह्मणस्पतिदेव की प्रार्थना करते हैं। यह दिव्य मन्त्र महान् इन्द्रदेव की स्तुति करे । यह देवकृत स्तोत्र, स्तोत्रों का राजा है॥३॥

स आ नो योनिं सदतु प्रेष्ठो बृहस्पतिर्विश्ववारो यो अस्ति ।
कामो रायः सुवीर्यस्य तं दात्पर्षन्नो अति सश्चतो अरिष्टान् ॥४॥

सबके वरण करने योग्य बृहस्पतिदेव ! इस यज्ञ में पधारें । हमारे श्रेष्ठ धन और शक्ति की इच्छा को पूर्ण करें। हमें बाधाओं से मुक्त करें, हमारे शत्रुओं को विनष्ट करें॥४॥

तमा नो अर्कममृताय जुष्टमिमे धासुरमृतासः पुराजाः ।
शुचिक्रन्दं यजतं पस्त्यानां बृहस्पतिमनर्वाणं हुवेम ॥५॥

गृहस्थों के पूज्य, परम पवित्र, सदैव अग्रगामी बृहस्पतिदेव की हम प्रार्थना करते हैं। पूर्वकाल में उत्पन्न हुए अमर देवगण हमें अमरता प्राप्त करने योग्य अन्न प्रदान करें॥५॥

तं शग्मासो अरुषासो अश्वा बृहस्पतिं सहवाहो वहन्ति ।
सहश्चिद्यस्य नीलवत्सधस्थं नभो न रूपमरुषं वसानाः ॥६॥

सुखकर, देदीप्यमान, साथ लेकर चलने वाले, सूर्य की तरह तेजस्वी घोड़े उन्हीं (बृहस्पतिदेव) को वहन करें, जिनका बल अनन्त तथा निवास उत्तम है॥६॥

स हि शुचिः शतपत्रः स शुन्ध्युर्हिरण्यवाशीरिषिरः स्वर्षाः ।
बृहस्पतिः स स्वावेश ऋष्वः पुरू सखिभ्य आसुतिं करिष्ठः ॥७॥

वे बृहस्पतिदेव पवित्र, बहुत वाहन वाले, सभी को शुद्धता प्रदान करने वाले तथा स्वर्ण सदृश आयुधों वाले हैं। उनका आवास उत्तम और दर्शनीय है। वे अपने भक्तों को सर्वाधिक अन्न प्रदान करते हैं॥७॥

देवी देवस्य रोदसी जनित्री बृहस्पतिं वावृधतुर्महित्वा ।
दक्षाय्याय दक्षता सखायः करद्ब्रह्मणे सुतरा सुगाधा ॥८॥

बृहस्पतिदेव की जननी देवी (दानादिगुणयुक्त) द्यावा-पृथिवी अपनी सामर्थ्य से उन्हें संवर्धित करती हैं । हे मित्रो ! कुशल बृहस्पतिदेव को कुशलता के साथ प्रवर्द्धित करें। वे ब्रह्मवृत्तियों के विकास के लिए 'सुतरा' (जल अथवा तर जाने योग्य) श्रेष्ठ जीवन को 'सुगाधा' (स्नान योग्य अथवा श्रेष्ठ गान-वेदवाणी) को उत्पन्न करते हैं॥८॥

इयं वां ब्रह्मणस्पते सुवृक्तिर्ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे अकारि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ॥९॥

हे ब्रह्मणस्पतिदेव ! हमने आपके लिए और वज्रधारी इन्द्रदेव के लिए यह स्तोत्र-पाठ किया है । आप हमारे बौद्धिक (बुद्धिवर्धक) अनुष्ठानों को संरक्षण दें, अनेक प्रार्थनाओं को सुनें और अपने भक्तों पर आक्रमण करने वाली सेनाओं का संहार करें॥९॥

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१०॥

हे बृहस्पति और इन्द्रदेव ! आप दोनों पृथ्वी और द्युलोक के ऐश्वर्य के स्वामी हैं, इसलिए स्तोताओं को ऐश्वर्य प्रदान करें तथा कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करें॥१०॥

सूक्त ९८

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – इन्द्र, ७ इन्द्र बृहस्पति । छंद – त्रिष्टुप

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।
गौराद्वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेद्याति सुतसोममिच्छन् ॥१॥

हे अध्वर्युगण ! मानवों में श्रेष्ठ इन्द्रदेव के लिए निचोड़े हुए रक्ताभ सोमरस का हवन करें । दूर स्थित, पीने योग्य सोम को दूर से जानकर वे गौर मृग सदृश तीव्रगति से सोमयाग करने वाले यजमान के पास सतत जाते हैं॥१॥

यद्दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि ।
उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान्पाहि सोमान् ॥२॥

हे इन्द्रदेव ! प्राचीनकाल में आप जिस सुन्दर अन्न (सोम) को उदर में धारण करते थे, वहीं सोम आप प्रतिदिन पीने की इच्छा करें। हृदय और मन से हमारे कल्याण की इच्छा करते हुए सोमरस को पान करें॥२॥

जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच ।
एन्द्र पप्राथोर्वन्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ॥३॥

हे इन्द्रदेव ! जन्म के समय से ही आपने शक्ति प्राप्ति के लिए सोमपान किया था। आपकी महिमा का वर्णन आपकी माता अदिति ने किया। आपने अपने वर्चस् से विस्तृत अंतरिक्ष को पूर्ण किया और युद्ध के माध्यम से देवों या स्तोताओं के लिए धन एकत्र किया॥३॥

यद्योधया महतो मन्यमानान्त्साक्षाम तान्बाहुभिः शाशदानान् ।
यद्वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! अहंकारपूर्ण, अपने को बड़ा मानने वाले शत्रुओं से जब हमारा युद्ध हो, तब उस युद्ध में हम अपनी बाहुओं से ही हिंसक शत्रुओं का दमन कर सकें। आप यदि स्वयं अन्न अथवा यश के लिए युद्ध करें, तब हम आपके साथ रहकर उस युद्ध को जीतें॥४॥

प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।
यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत्केवलः सोमो अस्य ॥५॥

प्राचीन और अर्वाचीन काल में इन्द्रदेव द्वारा किये हुए पराक्रमों का हम वर्णन करते हैं। इन्द्रदेव ने जब से कुटिल-कपटी असुरों को

परास्त किया, तब से सोम केवल इन्द्रदेव के लिए ही (सुरक्षित) है॥५॥

तवेदं विश्वमभितः पशव्यं यत्पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य ।
गवामसि गोपतिरेक इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः ॥६॥

हे इन्द्रदेव ! सूर्य के तेज (प्रकाश) से जिसे देखते हैं, वह पशुओं (प्राणियों) से युक्त विश्व आपका ही है। सभी गौओं (किरणों-इन्द्रियों) के स्वामी आप ही हैं। आप के द्वारा दिये धन का हम भोग करते हैं॥६॥

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे इन्द्र और बृहस्पतिदेव ! आप दोनों द्युलोक और पृथ्वी पर उत्पन्न धन के स्वामी हैं। आप दोनों स्तुति करने वाले स्तोता को धन प्रदान करें तथा कल्याणकारी साधनों से सदैव हमारी रक्षा करें॥७॥

सूक्त ९९

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विष्णु, ४-६ इन्द्राविष्णु। छंद – त्रिष्टुप

परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति ।
उभे ते विद्म रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से ॥१॥

परी मात्राओं से शरीर को बढ़ाने वाले (तीनों लोकों की सीमा से अधिक अपनी काया बढ़ाने वाले अथवा इस विश्व की पकड़ से परे मात्राओं-पोषक इकाइयों द्वारा शरीरों का विकास करने वाले) हे विष्णुदेव ! आपकी महानता को कोई नहीं समझ सकता । (हम तो) आपके द्युलोक एवं पृथ्वी लोक को ही जानते हैं, आप तो (इनसे) परे (लोकों या तत्त्वों) को भी जानते हैं॥१॥

न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परमन्तमाप ।
उदस्तभ्ना नाकमृष्वं बृहन्तं दाधर्थ प्राचीं ककुभं पृथिव्याः ॥२॥

हे विष्णुदेव ! जो जन्म ले चुके तथा जो जन्म लेने वाले हैं, वे दोनों ही आपकी महिमा का अन्त नहीं जानते । दर्शन के योग्य विराट्

द्युलोक को आपने ही अपने ऊपर धार किया है। पृथ्वी की पूर्व दिशा को भी आपने ही धारण कर रखा है॥२॥

इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषे दशस्या ।
व्यस्तभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः ॥३॥

हे द्यावा-पृथिवि मनुष्यों के कल्याण की आकांक्षा से हुए दोनों गौओं तथा अन्नों से परिपूर्ण हुई हैं। हे विष्णुदेव !आपने इन द्युलोक और पृथ्वीलोक को स्थिरता प्रदान की है तथा पर्वतों से पृथ्वी को स्थिर किया हैं॥३॥

उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम् ।
दासस्य चिद्वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु ॥४॥

सृष्टिरूपी यज्ञ को संचालित करने के लिए द्युलोक और रवालाक ने विस्तृत स्थान विनिर्मित किया । सूर्य, उषा और अग्नि को आप (विष्णु) उत्पन्न करते हैं ! हे नेतृत्व३, व इन्द्र और विष्णदेव ! आपने वृषशिप्र (नाम के शत्रु अथवा वर्षणशील जल को संगृहीत करने वाले की कुटिल और कपटपूर्ण आक्रामक योजनाओं को युद्धों में विनष्ट किया॥४॥

इन्द्राविष्णू दृंहिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्नथिष्टम् ।
शतं वर्चिनः सहस्रं च साकं हथो अप्रत्यसुरस्य वीरान् ॥५॥

हे इन्द्र और विष्णुदेव ! आपने शंबर असुर की निन्याने पुढे नदियों को विध्वंस किया। आपने 'वार्च नाम के सैकड़ों और हजारों वीरों को असाधारण ढंग से दिन किं॥५॥

इयं मनीषा बृहती बृहन्तोरुक्रमा तवसा वर्धयन्ती ।
ररे वां स्तोमं विदथेषु विष्णो पिन्वतमिषो वृजनेष्विन्द्र ॥६॥

यह महती स्तुति महापराक्रमशाली और बलशाली इन्द्र एवं विष्णुदेव के यश को बढ़ाती हैं । हे इन्द्र और विष्णुदेवो ! यज्ञों में हम आपके निमित्त स्तोत्र प्रेषित करते हैं । युद्धों में आप हमारे अन्न की वृद्धि करें॥६॥

वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे विष्णुदेव ! हमने स्तुतिगान करते हुए आपके निमित्त यह अन्न समर्पित किया हैं । हे तेजस्वी विष्णो ! आप हमारे द्वारा प्रदत्त हविष्यान्न को स्वीकार करें ! हमारी श्रेष्ठ स्तुतियाँ-प्रार्थनाएँ आपके यश को संवर्धित करें। आप सभी देवों के साथ मिलकर हमारा संरक्षण करे ॥७॥

सूक्त १००

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:
देवता – विष्णु । छंद – त्रिष्टुप

नू मर्तो दयते सनिष्यन्यो विष्णव उरुगायाय दाशत् ।
प्र यः सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नर्यमाविवासात् ॥१॥

जो मनुष्य अनेकों द्वारा शंसनीय विष्णुदेव को हविष्यात्र प्रदान करते हैं, वहीं मनुष्य धन की अभिलाषा होने पर शीघ्रता से उसे लुब्ध करते हैं। जो मनुष्यों के हितैषी विष्णुदेव की अर्चना करते हैं तथा साथ-साथ कहे जाने वाले मंत्री से विचारपूर्वक विष्णुदेव के लिएयज्ञ सम्पादित करते हैं, वे शीघ्र ही ऐश्वर्यशाली बनते हैं॥१॥

त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजन्यामप्रयुतामेवयावो मतिं दाः ।
पर्चो यथा नः सुवितस्य भूरेरश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः ॥२॥

मनोरथपूर्ण करने वाले हे देव विष्णो । आए हमें विश्वहितकारी, दोषहीन, सविचारयुक्त बुद्धि प्रदान करें । आप ऐसा करें, जिससे हमें

सुख से प्राप्त होने योग्य अश्व की तरह (लक्ष्य तक पहुँचाने वाला) आनन्ददायक, श्रेष्ठ पर्याप्त धन प्राप्त हो॥२॥

त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा ।
प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान्त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम ॥३॥

इन विष्णुदेव ने सहस्रों तेजों से युक्त इस पृथ्वी को अपनी महिमा से (वामन अवतार के समय) तीन चरणों में नापा अथवा तीन विशिष्ट प्रक्रियाओं से घोषित किया। सबसे विराट् भगवान् विष्णु हमारे सहायक हों। इन विराट् देव का नाम बहुत ही तेजस्वी है॥३॥

वि चक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् ।
ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार ॥४॥

मनुष्यों को आवास देने की इच्छा करके, इन विष्णुदेव ने पृथ्वी पर विचक्रमण (पराक्रम) किया था। इन विष्णुदेव के भक्तगण यहाँ स्थिर होकर रहते हैं । श्रेष्ठ जन्म धारण करने वाले विष्णुदेव ने विस्तृत निवास (स्थान) बनाया है॥४॥

प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट नामार्यः शंसामि वयुनानि विद्वान् ।
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान्क्षयन्तमस्य रजसः पराके ॥५॥

हे तेजस्वी विष्फो ! हम आपकी महानता और सब कर्मों को जानकर, आपके उस श्रेष्ठ नाम का कीर्तन करके श्रेष्ठ बनते हैं । हे देव अप महान् हैं, हम छोटे हैं इस कारण आपकी प्रार्थना करते हैं । आप इस लोक से परे हैं ॥५॥

किमित्ते विष्णो परिचक्ष्यं भूत्प्र यद्ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि ।
मा वर्पो अस्मदप गूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ ॥६॥

हे विष्णो ! आपने अपना जो शिपिविष्ट (प्रकाशरूप) नाम बताया है, क्या यह त्याग करने योग्य हैं ? समय-समय पर आपने अनेक रूप धारण किये हैं, इसलिए आपका यह दिव्यरूप हमसे दूर न रहे॥६॥

वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

हे विष्णुदेव ! आपके लिए हमने वषट्कार (मंत्रादि) बोलकर अन्न अर्पित किया है । हे तेजस्वी विष्णो ! हमारे द्वारा समर्पित हुविष्य को ग्रहण करें, हमारे द्वारा की हुई स्तुति आपके यश को बढ़ाए। आप सदैव कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करे॥७॥

सूक्त १०१

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:, कुमार आग्नेयो
देवता – पर्जन्य । छंद – त्रिष्टुप

तिस्रो वाचः प्र वद ज्योतिरग्रा या एतद्दुह्रे मधुदोघमूधः ।
स वत्सं कृण्वन्गर्भमोषधीनां सद्यो जातो वृषभो रोरवीति ॥१॥

जो वाणियाँ इस मधुर रस के स्रोत को दुहने में समर्थ हैं, ऐसी अग्रभाग में ज्योति धारण करने वाली तीनों वाणियों को उच्चारित करें । वह तुरंत उत्पन्न हुआ बलशाली-वर्षणशील (मेघ) वत्सों का एवं औषधियों के गर्भ का सृजन करता हुआ गर्जन करता है॥१॥

यो वर्धन ओषधीनां यो अपां यो विश्वस्य जगतो देव ईशे ।
स त्रिधातु शरणं शर्म यंसत्त्रिवर्तु ज्योतिः स्वभिष्ट्यस्मे ॥२॥

जो देव (पर्जन्य) जगत् के नियन्ता, ओषधियों एवं जल को (उनकी मात्रा एवं गुणवत्ता दोनों को) बढ़ाने वाले हैं; वे (देव) हमें विधातु (वात, पित्त, कफ आदि अथवा प्रकृतिगत ठोस, तरल एवं वायु रूपों

में जीवन धारण करने योग्य शक्तियों) युक्त आश्रय तथा सुख प्रदान करें। तीनों ऋतुओं में अभीष्ट श्रेष्ठ ज्योति (प्राणशक्ति) हमें दें॥२॥

स्तरीरु त्वद्भवति सूत उ त्वद्यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः ॥३॥

अपनी इच्छानुसार शरीर धारण करने वाले पर्जन्यदेव का एक रूप प्रसव न करने वाली गौ के समान, दूसरा रूप प्रसूता गौ जैसा (वर्षण करने वाला) होता है । पिता (पर्जन्य) के पय (पोषक दूध या जल) को पृथ्वी माता प्राप्त करती हैं । उसी से पिता (पर्जन्य) तथा पुत्र (जड़-जंगम प्राणी) दोनों बढ़ते (पुष्ट होते हैं॥३॥

यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुस्तिस्रो द्यावस्त्रेधा सस्रुरापः ।
त्रयः कोशास उपसेचनासो मध्वः श्चोतन्त्यभितो विरप्शम् ॥४॥

सभी भुवन (समस्त प्राणी) जिनमें निवास करते हैं, सभी लोक जिनमें अवस्थित हैं, जिनसे तीन तरह का जल वर्षण होता है, तीन प्रकार के कोशों द्वारा सिंचन करने वाले, मधुर रसों की सब तरफ से वर्षा करने वाले देवता, पर्जन्य देव ही हैं॥४॥

इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत् ।
मयोभुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः ॥५॥

यह स्तुति स्वप्रकाशित पर्जन्य देव के लिये की जाती है। वे प्रार्थना स्वीकार करें । ये (स्तुतियाँ) उन्हें हृदयोल्लास प्रदान करें । देवों (पर्जन्य) द्वारा सुखदायी वृष्टि हम सबके लिए हो और वृष्टि-जल प्राप्त कर ओषधियाँ सुरक्षित होकर फले-फूलें॥५॥

स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
तन्म ऋतं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

अनन्त ओषधियों के लिए पर्जन्य देव, वृषभ की तरह (रेतस्) बल, वीर्य धारण करते हैं, इसलिये स्थावर-जंगम जगत् की आत्मा पर्जन्य में निवास करती हैं । पर्जन्य द्वारा प्रदत्त जल सौ वर्षों तक हमारे जीवन का कल्याण करें । हे पर्जन्यदेव ! आप सदा कल्याणकारी साधनों से हमारा पालन करें॥६॥

सूक्त १०२

ऋषि: मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः, कुमार आग्नेयो
देवता – पर्जन्य । छंद – गायत्री, २ पादनिचृत्

पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळ्हुषे ।
स नो यवसमिच्छतु ॥१॥

हे स्तोताओ ! अन्तरिक्ष के पुत्र और वृष्टि करने वाले पर्जन्य के लिए प्रार्थना करें, वे हमें अन्न, ओषधियाँ तथा वनस्पतियाँ प्रदान करें॥१॥

यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यर्वताम् ।
पर्जन्यः पुरुषीणाम् ॥२॥

जो ओषधियों (आरोग्यदायकों) , गौओं (पोषण प्रदायकों) तथा अश्वों (शक्तिमानों) में गर्भ (प्राण) स्थापित करते हैं, वे पर्जन्यदेव ही मानवी स्त्रियों के लिए भी (उपयोगी) हैं॥२॥

तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम् ।
इळां नः संयतं करत् ॥३॥

उन्हीं पर्जन्यदेव के लिए देवमुख यज्ञ में सुमधुर हविष्यान्न का हवन करें । वे हमें भरपूर अन्न प्रदान करें॥३॥

सूक्त १०३

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:,
देवता – मण्डूका (पर्जन्य:) । छंद – त्रिष्टुप, १ अनुष्टुप

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ॥१॥

वर्ष भर गुप्त स्थिति में बने रहने वाले, व्रतपालक ब्राह्मणों (तपस्वियों) की भाँति रहने वाले मण्डूकगण, पर्जन्य को प्रसन्न (जीवन्त) करने वाली वाणी बोलने लगे हैं॥१॥

दिव्या आपो अभि यदेनमायन्दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम् ।
गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वग्नुरत्रा समेति ॥२॥

सूखे सरोवर में, सूखे चमड़े के समान सुप्त मेढकों के पास जैसे ही अंतरिक्ष का जल पहुँचता है, वैसे ही सवत्सा धेनु की तरह वे कल-कल शब्द करने लगते हैं॥२॥

यदीमेनाँ उशतो अभ्यवर्षीत्तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम् ।
अख्खलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति ॥३॥

वर्षाकाल आने पर जब प्यासे मेढ़कों पर पर्जन्य (जल) बरसने लगता है, तब पिता जैसे पुत्र से बात करता हैं, उसी तरह "अक्खल" ऐसा शब्द करके (अथवा विनम्रतापूर्वक) मेढक एक दूसरों के पास जाते हैं॥३॥

अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनोरपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम् ।
मण्डूको यदभिवृष्टः कनिष्कन्पृश्निः सम्पृङ्क्ते हरितेन वाचम् ॥४॥

पानी बरसने पर जब ये मेढक आनन्दित होकर उछलते हैं, तब चितकबरा मेढ़क हरित रंग के मेढ़क से बातें करने जैसा शब्द बोलता है । उस समय वे एक दूसरे पर अनुग्रह करते हैं॥४॥

यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः ।
सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत्सुवाचो वदथनाध्यप्सु ॥५॥

जिस प्रकार शिष्य-गुरु के शब्दों का अनुसरण करके बोलता है, उसी तरह एक मेढक दूसरे के शब्द का अनुसरण करता है । हे मण्डूको ! जब पानी पर छलाँग लगाते हुए उत्तम शब्द बोलते हो, उस समय तुम्हारा शरीर पुष्ट हुआ सा दीखता है॥५॥

गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम् ।
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः ॥६॥

एक मेढ़क गौ जैसा बोलता है, दूसरा बकरे जैसा बोलता है । एक भूरे रंग का हैं, दूसरा हरित वर्ण का है । इस प्रकार अनेक रूपों वाले “मेढक” एक ही नाम से जाने जाते हैं तथा विभिन्न प्रकार के शब्द अनेक देशों (स्थानों) में करते हुए दिखाई देते हैं॥६॥

ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः ।
संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव ॥७॥

हे मण्डूको ! अतिरात्र नामक सोमयज्ञ के याजकों की तरह, शब्द करते हुए इस भरे हुए सरोवर में (जब खूब वर्षा होती हैं) प्रसन्नतापूर्वक विचरण करो । चारों ओर तुम्हारे घूमने के लिए पर्याप्त स्थान है॥७॥

ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।
अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित् ॥८॥

वर्ष पर्यन्त चलने वाले सोमयुक्त यज्ञ में जैसे स्तोता मंत्र-ध्वनि करते हैं, वैसे ही शब्द मेढक भी करते हैं। जैसे याज्ञिक अध्वर्यु गुप्त स्थान

में रहकर पसीने में भीगे रहते हैं, बाहर नहीं निकलते, उसी तरह मेढक भी (वर्षा आने तक) बिल से बाहर नहीं निकलते॥८॥

देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते ।
संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्नुवते विसर्गम् ॥९॥

ये मण्डूक (साधना में डूबे रहने वाले) नेतृत्व-क्षमतः सम्पन्न लोगों की तरह ईश्वरीय अनुशासन का संरक्षण करते हैं। ये बारह महीने की तुओं का उल्लंघन नहीं करते। वर्षाकाल आने पर वर्षभर तपे हुए मेढ़क अपने बिलों से बाहर आ जाते हैं॥९॥

गोमायुरदादजमायुरदात्पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि ।
गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ॥१०॥

गौ और बकरे के समान ध्वनि करने वाले मेढ़क हमें धन दें । हरे और चितकबरे रंग वाले मेढ़क हमें धन दें । हजारों ओषधियों की वृद्धि करने वाले, वर्षा ऋतु में सैकड़ों गौएँ (पोषक-प्रवाह देने वाले ये मण्डूक (तपस्वीं) हमारी आयु को बढ़ाते हैं॥१०॥

सूक्त १०४

ऋषि: मैत्रावरुणिवैशिष्ठ:,
देवता – इन्द्रसोमौ, ८, १६, १९-२२ इन्द्र:, ९, १२-१३ सोम: १०,१४ अग्नि, २१ देवा:, १७ ग्रवाण, १८ मरुत:, २३ वासिष्ठाशी, पृथिव्यन्तरिक्षे । छंद – त्रिष्टुप, १-६, १८, २१, २३ जगती, ७ त्रिष्टुब्वा, २५ अनुष्टुप

इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उब्जतं न्यर्पयतं वृषणा तमोवृधः ।
परा शृणीतमचितो न्योषतं हतं नुदेथां नि शिशीतमत्रिणः ॥१॥

हे इन्द्र और सोमदेव ! आप राक्षसों को जलाकर मारें । हे अभीष्टवर्धक ! आप अज्ञानरूपी अंधकार में विकसित हुए राक्षसों का विनाश करें । ज्ञानहीन राक्षसों को तप्त करके मारकर फेंक दें, हमसे दूर कर दें । दूसरों का भक्षण करने वालों को जर्जरित करें॥१॥

इन्द्रासोमा समघशंसमभ्यघं तपुर्ययस्तु चरुरग्निवाँ इव ।
ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने ॥२॥

हे इन्द्र और सोमदेव ! आप महापापी, प्रसिद्ध दुष्टों को नष्ट करें। (वे) आपके तेज से आग में डाले गये चरु के समान, तापित होकर विनष्ट

हो जाएँ । ज्ञान से द्वेष रखने वाले, कच्चा मांस भक्षण करनेवाले, भयानक रूपधारी, सर्वभक्षी (दुष्टों) के लिए निरन्तर द्वेष (वैर) भाव रखें॥२॥

इन्द्रासोमा दुष्कृतो वव्रे अन्तरनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम् ।
यथा नातः पुनरेकश्चनोदयत्तद्वामस्तु सहसे मन्युमच्छवः ॥३॥

हे इन्द्र और सोमदेव ! दुष्कर्मा राक्षसों को गहन अंधकार में दबा दें, जिससे वे पुनः निकल न सके । आप दोनों का शत्रु-भंजक बल, शत्रुओं को जीतने में समर्थ हो॥३॥

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्या अघशंसाय तर्हणम् ।
उत्तक्षतं स्वर्यं पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः ॥४॥

हे इन्द्र और सोमदेव ! आप अन्तरिक्ष से मारक हथियार उत्पन्न करें । राक्षसों के विनाश के लिए पृथ्वी से आयुध प्रकट करें । मेघ से राक्षसों का विध्वंसक, वज्र उत्पन्न करके बढ़ने वाले राक्षसों को मारें॥४॥

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्यग्नितप्तेभिर्युवमश्महन्मभिः ।
तपुर्वधेभिरजरेभिरत्रिणो नि पर्शाने विध्यतं यन्तु निस्वरम् ॥५॥

हे इन्द्र और सोमदेव ! आप अन्तरिक्ष से चारों ओर आयुध फेंकें। आप दोनों अग्नि की तरह तप्त करने वाले, पत्थरों जैसे मारक, तापक प्रहार वाले, अजर आयुधों से लूट-लूटकर खाने वाले राक्षसों को फाड़ डालें, जिससे वे चुप-चाप पलायन कर जाएँ॥५॥

इन्द्रासोमा परि वां भूतु विश्वत इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिना ।
यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधयेमा ब्रह्माणि नृपतीव जिन्वतम् ॥६॥

हे इन्द्र और सोमदेव ! रस्सी जिस प्रकार से बगल में होकर घोड़े को चारों तरफ से बाँधती है, उसी तरह यह स्तुति आपको परिव्याप्त करे । आप बली हैं, अपनी मेधा शक्ति के बल से यह प्रार्थना हम आपके पास प्रेषित करते हैं। राजाओं की भाँति आप इन स्तुतियों को फलीभूत करें॥६॥

प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवैर्हतं द्रुहो रक्षसो भङ्गुरावतः ।
इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद्यो नः कदा चिदभिदासति द्रुहा ॥७॥

हे इन्द्र और सोमदेव ! आप शीघ्रगामी अश्वों के द्वारा शत्रुओं पर आक्रमण करें । द्रोह करने वाले, विनाशकारी राक्षसों का विनाश करें । दुष्कर्मी को (अपने कुकृत्य करने की) सुगमता न मिले । द्रोह करने वाला किसी भी समय हमें विनष्ट कर सकता है॥७॥

यो मा पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः ।
आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता ॥८॥

पवित्र मन से रहकर आचरण करने वाले मुझको, जो राक्षस असत्य वचनों द्वारा दोषी सिद्ध करता हैं, हे इन्द्रदेव ! वह असत्यभाषी (राक्षस) मुट्ठी में बँधे हुए जल के सदृश पूर्णरूपेण नष्ट हो जाए॥८॥

ये पाकशंसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः ।
अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे ॥९॥

जो मुझ (वसिष्ठ) विशुद्ध मन से रहने वाले को, अपने स्वार्थ के लिए कष्ट देते हैं या अपने धन-साधनों से मुझ जैसे कल्याणवृत्ति वाले को दोषपूर्ण बनाते हैं, हे सोम ! आप उन्हें सर्प (विषैले जीव) के ऊपर फेंक दें अथवा दरिद्र बना दें॥९॥

यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने यो अश्वानां यो गवां यस्तनूनाम् ।
रिपुः स्तेनः स्तेयकृद्दभ्रमेतु नि ष हीयतां तन्वा तना च ॥१०॥

हे अग्निदेव ! जो हमारे अन्न के सार तत्त्व को नष्ट करने की इच्छा करता हैं, जो गौओं, अओं और सन्ततियों का विनाश करता है; वह चोर, समाज का शत्रु विनष्ट हो । वह अपने शरीर और संततियों के सा, समाप्त हो जाए॥१०॥

परः सो अस्तु तन्वा तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः ।
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो नो दिवा दिप्सति यश्च नक्तम् ॥११॥

वह दुष्ट-पातकी शरीर और संतानों के साथ विनष्ट हो । पृथ्वी आदि तीनों लोकों से उसका पतन हो जाए। हे देवो ! उसकी कीर्ति शुष्क होकर विनष्ट हो जाए। जो दुष्ट राक्षस हमें दिन-रात सताता है, उसका विनाश हो जाए॥११॥

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥१२॥

विद्वान् मनुष्य यह जानता है कि सत्य और असत्य वचन परस्पर स्पर्धा करते हैं। उसमें जो सत्य और सरल होता है, सोमदेव उसकी सुरक्षा करते हैं तथा जो असत् होता है, उसका हनन करते हैं॥१२॥

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् ।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते ॥१३॥

सोम देवता पाप करने वाले, मिथ्याचारी और बलवान् को भी मारते हैं। वे राक्षसों का हनन करते और असत्य बोलने वाले को भी मारते हैं। वे मारे जाकर इन्द्रदेव के द्वारा बाँधे जाते हैं॥१३॥

यदि वाहमनृतदेव आस मोघं वा देवाँ अप्यूहे अग्ने ।
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं सचन्ताम् ॥१४॥

यदि हम (भूलवश अनृतदेव के उपासक हैं, (अथवा) यदि हम बेकार में ही देवताओं के पास जाते हैं, तो भी हे अग्ने ! आप हम पर क्रोध न करें । द्रोही, मिथ्याभाषी ही आपके द्वारा हिंसित हों॥१४॥

अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्ततप पूरुषस्य ।
अधा स वीरैर्दशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह ॥१५॥

यदि हम (वसिष्ठ) राक्षस हैं, यदि हम किसी सज्जन पुरुष को हिंसित करें, तो आज ही मर जाएँ, (अन्यथा) हमें जो व्यर्थ ही राक्षस कहकर सम्बोधित करते हैं, वे अपने दस वीरों (परिवारी जनों) के साथ नष्ट हो जाएँ॥१५॥

यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह ।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट ॥१६॥

जो राक्षस मुझ दैवी स्वभाव वाले (वसिष्ठ) को राक्षस कहता है तथा जो राक्षस अपने को "शुद्ध" कहता है, उसे इन्द्रदेव महान् आयुधों से नष्ट करें । वह सभी से पतित होकर गिरे॥१६॥

प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप द्रुहा तन्वं गूहमाना ।
वव्राँ अनन्ताँ अव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः ॥१७॥

जो राक्षसी निशाकाल में अपने शरीर को उल्लू की तरह छिपाकर चलती है, वह अधोमुखी होकर अनन्त गर्त में गिरे । पाषाण-खण्ड घोर शब्द करते हुए उन राक्षसों को विनष्ट करें॥१७॥

वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्ष्विच्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन ।
वयो ये भूत्वी पतयन्ति नक्तभिर्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे ॥१८॥

हे मरुत् वीरो ! आप प्रज्ञाओं के बीच रहकर राक्षसों को ढूंढने की इच्छा करें । जो राक्षस रात्रि समय में पक्षी बन कर आते हैं, जो यज्ञ में हिंसा करते हैं, उन्हें पकड़कर विनष्ट करें॥१८॥

प्र वर्तय दिवो अश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि ।
प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तादभि जहि रक्षसः पर्वतेन ॥१९॥

हे इन्द्रदेव ! आप अन्तरिक्ष मार्ग से वज्र प्रहार करें । हे धनवान् इन्द्रदेव ! आप अपने यजमान को सोम द्वारा संस्कारित करें । राक्षसों का पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चारों ओर से पर्ववान् (वज्र) द्वारा विनाश करें॥१९॥

एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम् ।
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः ॥२०॥

जो राक्षस कुत्तों की तरह काटने दौड़ते हैं, जो राक्षस अहिंसनीय इन्द्रदेव की हिंसा करना चाहते हैं, इन्द्रदेव उन कपटियों को मारने के लिए वज्र को तेज करते हैं । इन्द्रदेव दुष्ट राक्षसों का वज्र से शीघ्र विनाश करें॥२०॥

इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्याविवासताम् ।
अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एति रक्षसः ॥२१॥

इन्द्रदेव राक्षसों का दमन करने वाले हैं । हविष्य (यज्ञ) के विनाशको का इन्द्रदेव पराभव करते हैं । परशु जैसे वन काटता है, मुग्दर जैसे मिट्टी के बर्तन तोड़ता है, उसी तरह इन्द्रदेव सामने आये राक्षसों का संहार करते हैं॥२१॥

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ॥२२॥

हे इन्द्रदेव ! आप उल्लू के समान (मोहवाले) को मारे । भेड़िये के समान (हिसक), कुत्ते की भाँति (मत्सरग्रस्त) चक्रवाक पक्षी की तरह

(कामी), वाज़-गृधे की तरह (मांसभक्षी) राक्षसों को प्रस्तर (वज्र) से मारें तथा इन सबसे हमारी रक्षा करें॥२२॥

मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावतामपोच्छतु मिथुना या किमीदिना ।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥२३॥

राक्षस हमारे लिए घातक न हों, कष्ट देने वाले स्त्री-पुरुष के युग्मों से (देवगण) हमें बचाएँ। आपस में विघटन कराने वाले घातक राक्षसों से भी हमें बचाएँ । पृथ्वी हमें भूलोक के पापों से बचाए, अन्तरिक्ष में आकाश के पापों से बचाए॥२३॥

इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम् ।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम् ॥२४॥

इन्द्रदेव पुरुष राक्षस को विनष्ट करें और कपटी हिंसक स्त्री को भी विनाश करें । हिंसा करना जिनका खेल है, उन्हें छिन्नमस्तक करें । वे सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो जाएँ॥२४॥

प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम् ।
रक्षोभ्यो वधमस्यतमशनिं यातुमद्भ्यः ॥२५॥

हे सोमदेव ! आप और इन्द्रदेव जाग्रत् रहकर सभी राक्षसों को देखते रहें । राक्षसों को मारने वाले अस्त्र उन पर फेंकें और कष्ट देने वालों का वज्र से संहार करें॥२५॥

॥इति सप्तमं मण्डलं॥